Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
द फोटोन न्यूज Published from Ranchi
Ranchi ● Sunday, 03 March 2024 ● Year : 02 ● Issue : 46 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

यदि किसी को दूध नहीं दे सकते, तो मत दो, मगर छाछ देने में क्या हर्ज है? यदि किसी भूखे को अन्न देने में समर्थ नहीं हो तो कोई बात नहीं, पर प्यासे को पानी तो पिला सकते हो।

तुकाराम

वर्क एनर्जी मोड में लौटने के लिए जमकर पसीना... 12

SHARE

सेंसेक्स	:	73,806.15
निफ्टी	:	22,378.40

SARAFA

सोना	:	6,035
चांदी	:	77.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

बीजापुर में नक्सलियों ने भाजपा नेता की हत्या की

RAIPUR : छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सलियों ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता तिरुपति कटला की धारदार हथियार से हत्या कर दी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कटला की हत्या पर दुख जताया है। एक्स हैंडल पर जारी शोक संदेश में मुख्यमंत्री ने कहा है, "नक्सलियों से हमारी लड़ाई निर्णायक मोड़ पर है। उनके मंसूबों को कभी सफल नहीं होने दिया जाएगा।' बीजापुर के पुलिस अधीक्षक जीतेंद्र यादव ने बताया कि भाजपा मंडल संयोजक और जनपद सदस्य तिरुपति शुक्रवार रात शादी समारोह में शामिल होने गए थे। रास्ते में नक्सलियों ने घात लगाकर उनपर जानलेवा हमला किया। लोगों ने उन्हें बीजापुर जिला अस्पताल पहुंचाया । अस्पताल में इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया।

तंबाकू कंपनी पर रेड, 12.50 करोड़ की घड़ियां मिलीं

KANPUR : कानपुर में आयकर विभाग ने तंबाकू कंपनी बंशीधर एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड के हेड ऑफिस पर छापा मारा है। कंपनी के दिल्ली, मुंबई, गुजरात समेत 20 ठिकानों पर भी छापेमारी की गई है। 29 फरवरी को शुरू हुई छापेमारी का आज यानी 2 मार्च को तीसरा दिन है। तीसरे दिन कंपनी के मालिक केके मिश्रा के दिल्ली स्थित कोठी से रोलेक्स की 5 घड़ियां मिली हैं। इनमें हीरे जड़े हैं। इनकी कीमत साढ़े 12 करोड़ आंकी गई है। यानी हर एक घड़ी की कीमत ढाई करोड़ है। इसके साथ ही 7 करोड़ के कैश और जेवर भी मिले हैं। कानपुर, दिल्ली, मुंबई से लेकर विदेशों में अरबों की संपत्ति के डॉक्यूमेंट्स भी मिले हैं। आयकर टीम ने दिल्ली स्थित कोठी पर कंपनी के मालिक केके मिश्रा से पूछताछ भी की। मगर उन्होंने स्वास्थ्य का हवाला देकर पूछताछ से बचने की कोशिश की।

जन विश्वास महारैली में ताकत दिखाएगा महागठबंधन

PATNA : महागठबंधन की जन विश्वास महा रैली में रविवार को पटना के गांधी मैदान में देश के जाने-माने गैर भाजपाई दिग्गज नेता शामिल होंगे। राजद की मेजबानी में सुबह 11 बजे से आयोजित इस रैली में महागठबंधन के सभी दल मसलन कांग्रेस, सीपीआई (माले) , सीपीआई एवं सीपीआई (एम) के नेता शामिल होंगे। राजद के वरिष्ठ प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने बताया कि रैली को राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, सीपीआई (माले) के नेता दीपांकर भट्टाचार्य, सीपीआई नेता डी राजा और सीपीआई (एम) नेता सीताराम येचुरी, समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव, झारखंड के मुख्यमंत्री और बिहार विधानसभा एम में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव सहित अन्य दिग्गज नेता संबोधित करेंगे।

झारखंड शर्मसार : स्पेन की महिला पर्यटक से दुमका में सामूहिक दुष्कर्म

अलग-अलग बाइक से पति के साथ टूर पर निकली थी महिला, 3 धराए

CRIME REPORTER RANCHI : झारखंड के दुमका जिले के हंसडीहा थाना अंतर्गत कुरमाहाट इलाके में शुक्रवार देर रात स्पेन की महिला पर्यटक के साथ सामूहिक दुष्कर्म की घटना से स्थानीय लोग सन्न हैं। अलग-अलग बाइक से पति के साथ टूर पर निकली स्पेन की महिला से शुक्रवार की देर रात सामूहिक बलात्कार की घटना हुई है। घटना के बाद 28 साल की इस स्पैनिश महिला को सरैयाहाट सीएचसी में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने आनन-फानन में कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। बाकी की तलाश की जा रही है। घटना हंसडीहा थाना क्षेत्र के कुरमाहाट के पास की बताई जा रही है।

हंसडीहा थाना क्षेत्र की घटना, महिला को सरैयाहाट सीएचसी में कराया गया भर्ती

- दुमका के रास्ते भागलपुर की ओर जा रही थी महिला
- पांच-छह लोगों ने घटना को दिया अंजाम
- महिला खुद बाइक चलाकर जांच के लिए अस्पताल पहुंची

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में पीड़ित महिला का कराया गया मेडिकल।

टेंट लगाकर सो रही थी महिला, अचानक आ धमके हैवान

बताया जा रहा है कि विदेशी महिला के साथ मारपीट भी हुई है। सरैयाहाट सीएचसी में प्राथमिक इलाज के बाद उसे दुमका लाया जा रहा है। महिला बाइक से ही सरैयाहाट से पुलिस की सुरक्षा में दुमका पहुंच रही है। जानकारी के अनुसार, स्पेन की यह महिला अपने पति के साथ बाइक से टूर पर निकली थी। वह दुमका के रास्ते भागलपुर की ओर जा रही थी। इसी दौरान रात के करीब 12 :00 बजे वह हंसडीहा बाजार से पहले एक सुनसान जगह पर टेंट लगाकर सो गई। वहीं, आसपास के कुछ युवक पहुंचे और उससे गैंगरेप किया। उसके साथ मारपीट भी की गई। पीड़िता के साथ मारपीट के बाद वे लोग वहां से चले गए। महिला ने पुलिस को अपने से साथ हुई घटना की जानकारी दी। इसके बाद उसे सरैयाहाट सीएचसी में भर्ती कराया गया है। दुमका एसपी पीताम्बर सिंह खेरवार ने सिर्फ इतना ही कहा है कि घटना हुई है। महिला का मेडिकल जांच कराया गया है।

दुष्कर्म का मामला सदन में गरमाया पीएम के बयान पर भी चर्चा की मांग

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के सातवें और अंतिम दिन शनिवार को दुमका में स्पेन की महिला से सामूहिक दुष्कर्म और प्रधानमंत्री के बयान पर चर्चा करने को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के विधायकों ने सदन में जोरदार हंगामा किया। 12.04 में दोबारा सदन की कार्यवाही शुरू हुई तो भाजपा के विधायक दुमका में स्पेन की महिला से सामूहिक दुष्कर्म को लेकर हंगामा करते हुए वेल में आ गये। इस बीच भाजपा विधायक अमित मंडल ने हंसडीहा में विदेशी महिला के साथ घटी दुष्कर्म की घटना को उठाया। उन्होंने कहा कि इस मामले की लीपापोती में लोकल थाना और एसपी लगे हैं। संसदीय कार्य मंत्री एसपी की बर्खास्तगी और मामले की जांच कराने की पहल करें। आठ लोगों ने इस मामले को अंजाम दिया है। सुदिव्य सोनू ने प्रधानमंत्री के बयान पर

सदन में विशेष चर्चा कराने की मांग की। इसके बाद सत्ता पक्ष और विपक्ष के विधायक वेल में नारेबाजी करने लगे। इससे पहले स्पीकर के आसन ग्रहण करने के साथ ही विधायक प्रदीप यादव ने प्रधानमंत्री के धनबाद कार्यक्रम में उनके संबोधन पर सवाल उठाते विशेष चर्चा की मांग की। प्रदीप यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी धनबाद आये थे। वहां वे पंचायत स्तर के नेता की तरह झारखंडवासियों को गाली देकर चले गये।

मिशन 2024 : भाजपा ने 195 उम्मीदवारों की जारी की पहली सूची

जयंत का पत्ता कटा, मुंडा, संजय व विद्युत पर पार्टी ने जताया भरोसा

PHOTON NEWS RANCHI : आगामी लोकसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने शनिवार को अपने 195 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी। भाजपा ने इस बार भी पीएम मोदी सहित कई दिग्गजों को मैदान में उतारा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वाराणसी लोकसभा सीट से लगातार तीसरी बार चुनाव लड़ेंगे। जहां तक झारखंड की बात है, तो पहली सूची में राज्य के 11 सीट पर उम्मीदवारों की घोषणा की गई है। इसमें जमशेदपुर से विद्युत वरण महतो लगातार तीसरी बार चुनाव लड़ेंगे। वहीं केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा को लगातार दूसरी बार खूंटी से उम्मीदवार बनाया गया है। पूव केंद्रीय मंत्री जयंत सिन्हा की जगह मनीष जायसवाल को टिकट दिया गया है। इसके अलावा झारखंड के उम्मीदवारों में ताला मरांडी (राजमहल), सुनील सोरेन (दुमका), निशिकांत दुबे (गोड्डा), अन्नपूर्णा देवी (कोडरमा), संजय सेठ (रांची), गीता कोड़ा (सिंहभूम), समीर उरांव (लोहरदगा) व विष्णु दयाल राम (पलामू) शामिल हैं। अभी राज्य के शेष तीन सीट पर सस्पेंस बना रहेगा। भाजपा पार्टी मुख्यालय में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े ने कहा कि उम्मीदवारों की पहली सूची में 34 केंद्रीय मंत्री और राज्य मंत्री को मैदान में उतारा गया है। उन्होंने बताया कि 195 उम्मीदवारों में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला भी शामिल हैं।

- पीएम नरेंद्र मोदी वाराणसी लोकसभा सीट से लगातार तीसरी बार चुनाव लड़ेंगे
- केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा को लगातार दूसरी बार खूंटी से उम्मीदवार बनाया गया
- पूर्व केंद्रीय मंत्री जयंत सिन्हा की जगह मनीष को टिकट दिया गया
- 195 उम्मीदवारों में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला भी शामिल

ये लड़ेंगे चुनाव

उत्तर पूर्वी दिल्ली से मनोज तिवारी भाजपा प्रत्याशी, नई दिल्ली से बांसुरी स्वराज, चांदनी चौक से प्रवीण खंडेलवाल, पश्चिमी दिल्ली से कमलजीत सेहरावत, दक्षिणी दिल्ली से रामवीर सिंह बिधूड़ी बीजेपी प्रत्याशी, गांधी नगर से गृहमंत्री अमित शाह, पोरबंदर सीट से मनसुख मंडाविया बीजेपी प्रत्याशी, गुना से ज्योतिरादित्य सिंधिया बीजेपी उम्मीदवार, विदिशा से शिवराज सिंह चौहान बीजेपी उम्मीदवार, बीकानेर से अर्जुनराम मेघवाल बीजेपी प्रत्याशी, अलवर लोकसभा सीट से भूपेंद्र यादव, जोधपुर से गजेंद्र सिंह शेखावत, कोटा से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला उम्मीदवार, सिकंदराबाद लोकसभा सीट से जी किशन रेड्डी, त्रिपुरा वेस्ट से बिप्लब कुमार देव बीजेपी प्रत्याशी, प्रदीप कुमार कैराना, मुजफ्फरनगर से संजीव बालियान, रामपुर से घनश्याम लोधी, संभल से परमेश्वर लाल सैनी, अमरोहा से कंवर सिंह तंवर, नोएडा से महेश शर्मा, बुलंदशहर से भोला सिंह, मथुरा से हेमा मालिनी, आगरा से एसपी सिंह बघेल, फतेहपुर सिकरी से राजकुमार चाहर उम्मीदवार बनाए गए, लखीमपुर खीरी से अजय मिश्र टेनी, हरदोई से जय प्रकाश रावत, लखनऊ से राजनाथ सिंह, मिश्रिख से अशोक कुमार रावत, अमेठी से स्मृति ईरानी, प्रतापगढ़ से संगम लाल गुप्ता, कन्नौज सुब्रत पाठक, अकबरपुर लोकसभा सीट से देवेंद्र सिंह भोले प्रत्याशी, झांसी अनुराग शर्मा, हमीरपुर कुंवर पुष्पेंद्र चंदेल प्रत्याशी, बांदा से आरके सिंह पटेल, फतेहपुर से साध्वी निरंजन ज्योति, फैजाबाद से लल्लू सिंह, गोंडा से कीर्तिवर्धन सिंह प्रत्याशी, बस्ती से हरीश द्विवेदी, गोरखपुर से रवि किशन, कुशीनगर से विजय दुबे, आजमगढ़ से दिनेश लाल यादव, जौनपुर से कृपा शंकर सिंह, चंदौली से महेंद्रनाथ पांडे प्रत्याशी, संतकबीरनगर से प्रवीण निषाद, अंबेडकरनगर से रितेश पांडेय सलेमपुर से रविंद्र कुशवाहा, बांसगांव से कमलेश पासवान डुमरियागंज जगदंबिका पाल, जालौन भानु प्रताप सिंह वर्मा फरुर्खाबाद मुकेश राजपूत, इटावा से रामशंकर कठेरिया प्रत्याशी।

झारखंड लोकसभा की दो सीटों पर महिलाएं

झारखंड की 11 सीटों पर 11 उम्मीदवारों में दो महिलाएं हैं। इनमें अन्नपूर्णा देवी व गीता कोड़ा शामिल हैं। शेष नौ सीटों पर पुरुष उम्मीदवारों को पार्टी ने उतारा है। रांची से संजय सेठ को फिर टिकट मिला है, वहीं खूंटी से अर्जुन मुंडा को पार्टी ने दोबारा टिकट दिया है। कोडरमा से अन्नपूर्णा देवी, सिंहभूम से गीता कोड़ा, दुमका से सुनील सोरेन, गोड्डा से निशिकांत दुबे, जमशेदपुर से विद्युतवरण महतो, लोहरदगा से समीर उरांव, पलामू से विष्णुदयाल राम व हजारीबाग लोकसभा सीट से जयंत सिन्हा की जगह मनीष जायसवाल को टिकट मिला है। राजमहल में बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ताला मरांडी को टिकट दिया गया है।

29 सीटों पर सस्पेंस कायम

यूपी में 51 सीटों पर प्रत्याशी घोषित करने के साथ ही राजनीतिक तापमान गर्म हो गया है। बीजेपी ने अभी 29 सीटों पर प्रत्याशी नहीं दिए हैं। इन सीटों को लेकर दावेदारों के धड़कने बढ़ गई हैं। एनडीए के सहयोगी दलों अपना दल एस, निषाद पार्टी, सुभासपा, रालोद की सीटों को लेकर अभी कोई सुगबुगाहट भी नहीं है। निषाद पार्टी ने बीजेपी से दो सीटों की मांग की है। उन्हें अभी एक सीट देने की पुष्टि हुई है। सुभासपा को भी एक सीट दी जा रही है। वह भी दो सीटों के लिए जोर लगा रहे हैं। इसी तरह रालोद को दो सीटें दी गई हैं। मुजफ्फर नगर को लेकर सस्पेंस खत्म हो गया है।

29 को हुई थी बैठक

29 फरवरी को पार्टी की केंद्रीय चुनाव समिति की बड़ी बैठक बुलाई गई थी। इस बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ सांसद रामवीर बिधूड़ी, प्रकाश जावड़ेकर, सीएम योगी आदित्यनाथ, उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ, डिप्टी सीएम केशव मौर्य, डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक, ज्योतिरादित्य सिंधिया, मनसुख मांडविया, गोवा सीएम प्रमोद सावंत समेत कोर ग्रुप के सदस्य भी मौजूद थे। भारतीय जनता पार्टी ने इस बार देश में 370 सीटें जीतने की लक्ष्य रखा है। इसके पीछे जम्मू और कश्मीर में से धारा 370 से हटाने बाद लाभ लेने की रणनीति मानी जा रही है।

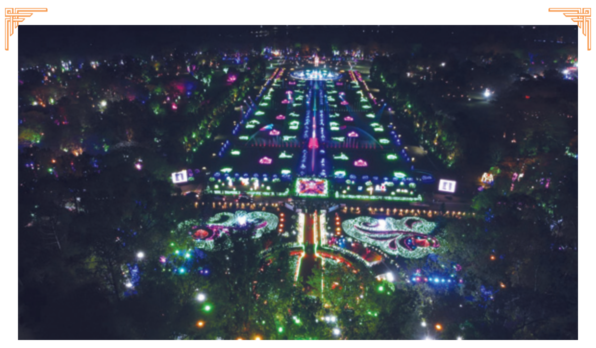

बटन दबते ही परीलोक में तब्दील हो गया जुबिली पार्क

JAMSHEDPUR : टाटा स्टील के संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा की 185वीं जयंती 3 मार्च को धूमधाम से मनाई जाएगी। इसकी पूर्व संध्या पर टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने शनिवार को जुबिली पार्क की प्रकाश सज्जा का उदघाटन किया। पार्क में स्थित जेएन टाटा की प्रतिमा के पास शाम 6.30 बजे जैसे ही उन्होंने कंट्रोल पैनल का बटन दबाया, मानो पूरा जुबिली पार्क परीलोक में तब्दील हो गया।

संबंधित खबरें पेज- 04 पर देखें

आर्टिकल-21 संविधान की आत्मा : सुप्रीम कोर्ट

जल्दी फैसला न सुनाना, अधिकार से वंचित

AGENCY NEW DELHI : सुप्रीम कोर्ट ने एक व्यक्ति की जमानत को लेकर बॉम्बे हाईकोर्ट को नसीहत देते हुए फटकार लगाई। शीर्ष कोर्ट ने कहा कि आर्टिकल-21 (जीवन की स्वतंत्रता) संविधान की आत्मा है। इससे संबंधित मामलों पर हाईकोर्ट का जल्दी फैसला न सुनाना या फिर टालना किसी व्यक्ति को इस बहुमूल्य अधिकार से वंचित कर देगा। जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच के मुताबिक, बॉम्बे हाईकोर्ट ने मर्डर के मुख्य आरोपी अमोल विट्ठल वाहिले को तब जमानत दी, जब हमने 29 जनवरी को इस मामले में दखलअंदाजी की। वाहिले, महाराष्ट्र के कॉर्पोरेटर के मर्डर में मुख्य आरोपी है। ऐसे कई मामले हैं, जिनमें जज योग्यता के आधार पर फैसला न लेकर अन्य किसी आधार पर फैसला लटकाए रखते हैं। हमारा बॉम्बे हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस से निवेदन है कि वे हमारी बात अन्य जजों तक भी पहुंचाएं। सभी जज आपराधिक क्षेत्राधिकार का इस्तेमाल करते हुए जमानत/अग्रिम जमानत से संबंधित मामले पर जल्द निर्णय लें।

- जज योग्यता के आधार पर फैसला न लेकर अन्य किसी आधार पर फैसला लटकाए रखते हैं
- जज आपराधिक क्षेत्राधिकार का इस्तेमाल करते हुए जमानत/अग्रिम जमानत से संबंधित मामले पर जल्द निर्णय लें

बंगाल में पुलिस नहीं, अपराधी अपना सरेंडर और गिरफ्तारी करते हैं तय

संदेशखाली की बहनों की टीएमसी सरकार ने नहीं सुनी : मोदी

AGENCY KOLKATA : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल के दो दिन के दौरे के दूसरे दिन नदिया जिले के कृष्णानगर में 15 हजार करोड़ की रेल, बिजली और सड़क क्षेत्र से जुड़ी परियोजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास किया। पीएम ने पहले दिन हुगली के आरामबाग में जनसभा को संबोधित किया और फिर राजभवन में ममता बनर्जी से मुलाकात की। कृष्णानगर में उन्होंने जय श्रीराम के नारे के साथ कहा- बंगाल में टीएमसी ने मां, माटी और मानुष का नारा लगाकर यहां की माताओं-बहनों का वोट लिया और उन्हें गुमराह किया। आज मां, माटी और मानुष सभी टीएमसी के कुशासन में रो रहे हैं। संदेशखाली की बहनें इंसाफ की गुहार लगाती रहीं, लेकिन टीएमसी सरकार ने उनकी एक नहीं सुनी। मोदी बोले- बंगाल में स्थिति ये है कि यहां पुलिस नहीं, बल्कि अपराधी तय करते हैं कि उन्हें कब सरेंडर करना है, कब गिरफ्तार होना है। राज्य सरकार चाहती ही नहीं थी कि संदेशखाली का गुनहगार कभी गिरफ्तार हो, लेकिन ये तो बंगाल की नारी शक्ति दुर्गा बनकर खड़ी हो गई। भाजपा का एक-एक कार्यकर्ता उनके साथ खड़ा हो गया, तब मजबूरन सरकार को झुकना पड़ा। पीएम ने कहा- ये धरती भगवान श्रीकृष्ण के परम प्रचारक चैतन्य महाप्रभु की जन्मस्थली है। मैं महाप्रभु के चरणों में नमन करता हूं। मेरा सौभाग्य है कि भगवान श्री कृष्ण ने जो द्वारका नगरी बसाई थी, जो समंदर के अंदर डूब चुकी थी। मुझे कुछ दिनों पहले समंदर की गहराई में जाकर उस पुरातन श्री कृष्ण की भूमि को नमन करने का सौभाग्य मिला। साथियों, आप सभी ईश्वरतुल्य जनता जनार्दन, माताओं-बहनों और बेटियों को भी मेरा प्रणाम।

बिहार में पीएम नरेंद्र मोदी को स्मृति चिन्ह सौंपते सीएम नीतिश कुमार।

बिहार में बनेगी रहेगी शांति, ये मोदी की गारंटी

PATNA : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के औरंगाबाद में जनसभा को संबोधित करते हुए भोजपुरी में कहा कि रउवा सब के प्रणाम करइतही। बिहार में शांति और कानून व्यवस्था का राज-ये मोदी की गारंटी है। बिहार में बहन-बेटियों को अधिकार-ये मोदी की गारंटी है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज यहां करीब 21.5 हजार करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास हुआ है। इन परियोजनाओं में रोड इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी कई परियोजनाएं हैं। इनमें रेल इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़े काम भी हैं और इनमें आधुनिक बिहार की मजबूत झलक भी है। उन्होंने यही एनडीए की पहचान है। हम काम की शुरूआत भी करते हैं, काम पूरा भी करते हैं और हम ही उसे जनता-जनार्दन को समर्पित भी करते हैं।

हेमंत सोरेन ने पढ़ने के लिए किताबें मांगी, देने जाएंगी पत्नी कल्पना

RANCHI : पूर्व सीएम हेमंत सोरेन ने जेल में पढ़ने के लिए किताबें मांगी है। कल्पना सोरेन कल उन्हें किताब देने होटवार जाएंगी। कल्पना सोरेन ने ट्वीट कर इसकी जानकारी दी है। कल्पना ने ट्वीट कर लिखा है। हेमंत जी ने पढ़ने के लिए किताबें मांगी है। कल उन्हें यह किताबें देने जाऊंगी। इससे पहले भी हेमंत जी ने झारखंड आंदोलन, मुंडारी, हो और कुड़ुख भाषा आदि से जुड़ी किताबें पढ़ने के लिए मंगायी थी। हेमंत जी को किताबें पढ़ने का हमेशा से शौक रहा है। वह घर में अपनी किताबों को बहुत प्रेम से संजों कर रखते हैं। अन्य किताबों के साथ-साथ झारखंड और झारखंड आंदोलन से जुड़ी किताबें वह हमेशा विशेष रुचि लेकर पढ़ते रहे हैं। राज्य की बागडोर संभालने के बाद उन्होंने उनसे मिलने वाले सभी लोगों से बुके नहीं बुक देने की अपील की थी।

झारखंड के सचिव अरवा राजकमल को प्रमोशन

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड के मुख्यमंत्री के चम्पाई सोरेन के प्रभारी सचिव 2008 बैच के आईएएस अधिकारी अरवा राजकमल को प्रोन्नति दी गई है। उन्हें एक जनवरी 2024 से भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिसमय वेतनमान या लेवल-14 में प्रोन्नति दी गई है। राज्य सरकार की ओर से जारी अधिसूचना में कहा गया है कि उन्हें यह प्रोन्नति इस शर्त के साथ दी गई है कि वे अगले दो वर्ष में आयोजित होने वाले एमसीटी फेज-4 का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से प्राप्त कर लेंगे। प्रोन्नति के साथ अरवा राजकमल मुख्यमंत्री के सचिव सहित नगर विकास एवं आवास विभाग व उत्पाद एवं मद्यनिषेध विभाग के अतिरिक्त प्रभार में बने रहेंगे। इसके अलावा उन्हें जुडको व ग्रेटर रांची विकास एजेंसी के प्रबंध निदेशक का भी अतिरिक्त प्रभार है। अरवा राजकमल बोकारो, देवघर, पश्चिमी सिंहभूम एवं सरायकेला खरसावां के उपायुक्त के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

अरवा राजकमल की फाइल फोटो।

कविता

श्वेता सिंह विशेन
देवरिया, उत्तर प्रदेश

1

तेरे टूटने से मैं बिखरने लगती हूं

तेरे टूटने से मैं बिखरने लगती हूं
जैसे तेरे खुश होने से मैं संवरने लगती हूं

तेरे दूर होने से मैं मरुस्थल-ए-रेत होने लगती हूं
जैसे तेरे पास आने से मैं दरिया की आब होने लगती हूं

तेरे जाने से मैं कांच के सपनों सी बिखरने लगती हूं
जैसे तेरे आने से मैं ख्वाब से हकीकत होने लगती हूं

मैं टूट कर संगम की रेत सी बिखरी रहती हूं
जब तुम समेटते हो तो मैं इलाहाबाद सी होने लगती हूं

मैं सरयू की दरिया सी बहती रहती हूं
जब तुम देखते हो तो मैं कल कल नदियां सी खिलती रहती हूं

मैं संगम की धारा में बैठी रहती हूं
जब तुम आते हो संगम के हंसी तट पे तो मैं लहर बनके तेरे अधरों को छूती रहती हूं

मुझे छूते ही तुम सुबह -ऐ-बनारस होने लगते हो और मैं अवध-ऐ-शाम सी ढलने लगती हूं

मुझे पाकर तुम प्रयागराज होने लगते हो और मैं इलाहाबाद सी तुममें समाने लगती हूं

2

कौन साथ है

कौन साथ है
कौन खिलाफ है
क्या फर्क पड़ता है..
तुम साथ हो तो
पूरी कायनात साथ है
ऐसा लगता है.....।

जब दुनिया खिलाफ होती है
तो तुम मेरे साथ होते हो
और जब हम दर्द में होते हैं
तो तुम मरहम लगाते हो
जब हम रोते हैं
तो तुम आंसू पोछते हो
फिर क्या फर्क पड़ता है
कौन साथ है...
कौन खिलाफ है...
तुम साथ हो
तो पूरी कायनात साथ है
ऐसा लगता है

हर मुश्किल आसान होती है
जब तुम मेरे साथ होते हो
कुछ न कह के
सब कुछ साझा कर लेना
तुमसे बड़ा आसान होता है
जब तुम साथ होते हो
सब कुछ आसान होता है....।
कौन साथ है...
कौन खिलाफ है ...
क्या फर्क पड़ता है
जब तुम साथ हो
तो पूरी कायनात साथ है
ऐसा लगता है....।

कौन साथ है
कौन खिलाफ है
क्या फर्क पड़ता है....
तुम साथ हो तो
पूरी कायनात साथ है
ऐसा लगता है....।

1. हमें अपना फीडबैक, सुझाव या टिप्पणियां देने के लिए दिए गए बार कोड को स्कैन करें या मेल करें।
2. आप हमें अपनी रचनाएं, कविता या आलेख भी भेज सकते हैं। जिसे हम अपने आने वाले अंक पर प्रकाशित करेंगे।

SCAN ME

Email- thephotonnewsjharkhand@gmail.com

फूलों की घाटी का अद्भुत सौन्दर्य

घुमक्कड़ की पाती

हिमालय घूमने की जब भी बात होती है सबसे पहला ख्याल मेरे मन में उत्तराखंड का आता है। इस राज्य की एक खास जगह जो मेरी स्मृतियों में बसती है वह फूलों की घाटी है। इस जगह के बारे में मैं वर्षों से पढ़ता आया था पर कभी देखने का सौभाग्य नहीं मिला। इसलिए सोचा क्यों ना इस बार यह अधूरा सपना भी पूरा कर लिया जाये। एक दोस्त ने बताया कि फूलों की घाटी पहुंचने के लिए चमोली जिले का अन्तिम बस अड्डा गोविन्दघाट है। गोविन्दघाट से प्रवेश स्थल की दूरी तेरह किमी रह जाती है जहां से पर्यटक तीन किमी लम्बी व आधा किमी चौड़ी फूलों की घाटी में घूम सकते हैं।

संजय शेफर्ड
नई दिल्ली

फूलों की घाटी एक राष्ट्रीय उद्यान है जिसे आमतौर पर सिर्फ फूलों की घाटी कहा जाता है। नन्दा देवी राष्ट्रीय उद्यान और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान सम्मिलित रूप से विश्व धरोहर स्थल घोषित है। हिमाच्छादित पर्वतों से घिरा हुआ यह क्षेत्र फूलों की पांच सौ से अधिक प्रजातियों से सजा हुआ है तथा बागवानी विशेषज्ञों और फूल प्रेमियों के लिए एक विश्व प्रसिद्ध स्थल बन गया है।

नंदकानन के नाम से इस जगह का वर्णन रामायण और महाभारत में भी मिलता है। पौराणिक मान्यता है कि यही वह जगह है जहां से हनुमान लक्ष्मण के लिए संजीवनी लेकर गए थे। परन्तु स्थानीय लोग इसे परियों और किन्नरों का निवास समझकर इस जगह पर जाने से अब भी कतराते हैं।

यह बात मुझे चौंकाती है क्योंकि इसके पीछे मुझे कोई ठोस तथ्य नहीं मिलता। इतना जरूर है कि इस जगह पर अधिक ऊंचाई के कारण ऑक्सीजन का स्तर कम होने लगता है। कुछ फूल की प्रजातियां भी इस जगह पायी गई हैं जिसे सूंघकर इंसान बेहोश हो जाता है। शायद, इसीलिए स्थानीय लोगों के मन में तरह-तरह की भ्रांतियां हैं।

इस जगह पर 1931 से पहले तो कोई जाता भी नहीं था। यहां कभी-कभार स्थानीय लोग अथवा कुछ चरवाहे ही अपनी भेड़ बकरियों को लेकर ही पहुंच पाते थे। इस जगह की पहचान तब हो सकी जब ब्रितानी पर्वतारोही फ्रैंक स्मिथ और उनके साथी आर एल होल्ड्सवर्थ अपने कामेट पर्वत के अभियान से लौटने के दौरान रास्ता भटककर इस घाटी में पहुंच गए। चारों तरफ फूलों और इसकी बेइंतहा खूबसूरती से वह इतना प्रभावित हुए कि स्मिथ 1931 में तो लौट गए लेकिन 1937 में यहां दोबारा वापस आये। इसे देखा, समझा और जाना तथा वर्ष 1968 में वैली ऑफ फ्लावर्स नाम से एक किताब प्रकाशित करवायी।

इस किताब के माध्यम से यह जगह दुनिया के सामने आयी और फूलों की घाटी के रूप में एक पहचान मिली। जिससे पर्यटकों और पर्वतारोहियों की आवाजाही शुरू हुई। अब तो इस जगह को देखने के लिए हजारों लोग आते हैं। फूलों की घाटी में भ्रमण के लिये जुलाई, अगस्त व सितंबर के महीनों को सही माना जाता है ।

यह एक पर्यटन स्थल होने के साथ-साथ जैव विविधता की दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण जगह है। यहां पर जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की हजारों प्रजातियां पायी जाती हैं जो कि इस धरती और मानव जीवन के लिए काफी उपयोगी हैं। इसीलिए, यूनेस्को ने इसे वैश्विक धरोहर का दर्जा दिया है।

अनुसंधानकताओं का मानना है कि यहां सैकड़ों ऐसी जड़ी-बूटियां और वनस्पतियां पायी जाती हैं जो अत्यंत दुर्लभ हैं और विश्व में कहीं और नहीं पायी जाती। यहां के फूलों में अद्भुत औषधीय गुण होते हैं, यहां मिलने वाले फूलों का इस्तेमाल दवाइयां बनाने में होता है।

यह घाटी हेमकुंड साहिब के रास्ते पर पड़ती है जिसकी वजह से कई बार हेमकुंड जाने वाले यात्री भी लौटते वक़्त इस जगह पर आते हैं। यह तो एक पंथ दो काज वाली स्थिति हो जाती है। मेरी भी इच्छा फूलों की घाटी को देखने के बाद गुरुद्वारा श्री हेमकुंड साहिब जी के दर्शन का था पर समुद्र तल से काफी ऊंचाई पर होने की वजह से अक्सर बर्फ जमी रहती है और साल में सिर्फ तीन महीने ही जाना संभव हो पाता है।

यह सिखों का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। इस जगह के बारे में जानकारी जुटाई तो पता चला कि हेमकुंड एक संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ झ हिम (बर्फ) और कुंड (कटोरा) है। इस स्थान पर सिखों के दसवें और अंतिम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह ने अपने पिछले जीवन में ध्यान साधना की थी और वर्तमान जीवन में अवतार लिया था। हेमकुण्ड साहिब गुरुद्वारा की खोज 1930 में हवलदार सोहन सिंह ने की थी। यह पवित्र तीर्थ हेमकुंड साहिब और झील चारों तरफ बर्फ से ढकी सात पहाड़ियों से घिरे हुए हैं। यह स्थान अपनी अदम्य सुंदरता के लिए जाना जाता है और यह सबसे महत्वपूर्ण गुरुद्वारों में से एक माना गया है। इस पवित्र स्थल को पहले लोकपाल भी कहा जाता है, जिसका अर्थ विश्व का रक्षक होता है। श्री हेमकुंड साहिब गुरुद्वारे के पास ही एक सरोवर है। इस पवित्र जगह को अमृत सरोवर अर्थात अमृत का तालाब कहा जाता है। यह सरोवर लगभग चार सौ गज लंबा और दो सौ गज चौड़ा है। हेमकुंड साहिब के पास सप्तऋषि चोटियां स्थित है, जिन पर खालसा पंथ का प्रतीक निशान साहिब पर ध्वज लहराता है। हेमकुंड साहिब ही वह जगह है, जहां पांडु राजा अभ्यास योग करते थे। इसके अलावा दसम ग्रंथ में यह कहा गया है कि जब पाण्डु हेमकुंड पहाड़ पर गहरे ध्यान में थे तो भगवान ने उन्हें सिख गुरु गोबिंद सिंह के रूप में यहां पर जन्म लेने का आदेश दिया था।

हेमकुंड साहिब चारों तरफ से हिमालय की सात चोटियों से घिरा हुआ है। इस जगह को रामायण के समय से मौजूद माना गया है। कहा जाता है कि लोकपाल वही जगह है, जहां श्री लक्ष्मण जी अपना मनभावन स्थान होने के कारण ध्यान पर बैठ गए थे और यह भी कहा जाता है कि अपने पहले के अवतार में गोबिंद सिंह जी ध्यान के लिए यहां आए थे। गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपनी आत्मकथा 'विचित्र नाटक' में इस जगह से जुड़े अपने अनुभवों का उल्लेख किया है।

हेमकुंड साहिब पहुंचने के लिए बीस किमी से भी ज्यादा पैदल पहाड़ की चढ़ाई करनी होती है, लेकिन इस जगह पर पहुँचकर मन प्रसन्नता से भर जाता है। ऐसा लगता है कि हम किसी जन्नत में आ गए हैं। इसलिए, इस जगह पर हर किसी को एक ना एक बार जरूर जाना चाहिए।

व्यंग्य ■ बर्बरीक

'जूता संहिता'

दिलीप कुमार

जिस प्रकार लोकतंत्र को ठीक ठाक ढंग से चलाने के लिये तमाम नियमों कानूनों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार जूता चलाने से भी बहुत सारे समाज में शुद्धि और शुचिता आती रहती है है, कुछ ऐसा ही जूतमपैजार के विशेषज्ञों का भी दावा है। जूता बनाना कोई बहुत बड़ा टास्क नहीं है, गली के नुक्कड़ से लेकर विश्व स्तर की कम्पनियां भी जूता बनाती हैं लेकिन जूतमपैजार के विशेषज्ञों का दावा है कि विवाह में जीजा का साली द्वारा चुराया गया जूता ही विश्व के सबसे अच्छे निवेश में माना गया है। चूंकि साली द्वारा चुराया गया जूता तुरंत कमाई करवा देता है। जीजा बना पुरूष अपना ही जूता छुड़वाने के लिए जो रकम साली को देता है वह कमाई स्त्रीधन के श्रेणी में आती है। तकनीकी तौर पर इस कमाई को करमुक्त ही माना जाना चाहिये। भले ही जीजा उर्फ दूल्हा बेरोजगार हो और नौकरी खोजते खोजते उसकी एड़ियां भी जूतों की तरह घिस गयी हों लेकिन उस दिन उसका जूते पर खर्च की गयी रकम ही उसकी पगड़ी की शान है और जूता छुड़वाई की रकम ही जीजा - साली के रिश्तों की मधुरता के पैमाने का मानक तय किया करती है। जूतमपैजार विशेषज्ञों ने रैलियों में उछाले जाने वाले जूते के निवेश को सबसे निम्न कोटि का माना है क्योंकि इससे फेंका गया जूता भी वापस नहीं मिलता और पिटाई जो होती है वो अलग से। जूता आदिकाल से मौजूद था। जो कभी चरण पादुका था अब जूता कहा जाता है। रावण के दरबार में भी कहा गया था -

'नीति विरोध ना मारिये दूता'

अब के दरबारों में कहा जाता है -

'प्रीति विरोध ना मारिये जूता'

जी हां, क्यों न इस वर्ष को जूता वर्ष घोषित कर दिया जाये।क्योंकि इस वर्ष चुनाव का वर्ष है और चुनाव में जूतों की डिमांड बहुत बढ़ जाती है। यदि किसी नेता को जूता फेंककर मार दिया जाये तो रातों रात उसकी लोकप्रियता बढ़ जाती है। नेता भी ऐसे ही जूते बनवाते हैं जिसे पहन कर वे भाग सकें। जूता कंपनियों ने विशेष तरह के जूते बनाये हैं कि कौन सा जूता किस नेता पर फिट बैठेगा। कुछ कंपनिया तो उत्साह में प्रचार अभियान चला रही हैं कि हमारा जूता शुभ होता है उसे खाकर देखो फलां नेता कहां से कहां पहुंच गया। कई सारे लोगों ने तो अपनी जन्मपत्री तक दिखवा ली है किस शुभ घड़ी में अपने ऊपर जूता फेंकवाने से वे नेतागीरी में कितने ऊपर जा सकते हैं। इसलिए जूतों के भी अच्छे दिन आएंगे और जूता वर्ष घोषित करने में कोई हर्ज नहीं है। लोग आगामी चुनावी वर्ष को जूता उद्धार वर्ष घोषित करवाने में जुटे हैं।

जूतों के महिमामण्डन में नजीर साहब फरमा गए हैं-

'जो मस्जिद से जूते चुराए है
वो भी आदमी
जो उनको चुराते हुए देखे है
वो भी आदमी'।

भारत बहुत बदल गया है अब यहां सिर्फ यहीं नहीं चलता कि-

'रहिमन वे नर(नारी)मर चुके
जे कहीं मांगन जाएं
उनसे पहले वे मरे, मुख से
निकलत नाहिं'।

साहित्य में बहुत लोगों ने हो हल्ला मचाया था जब कवि/कवियत्री ने शरीर के एक विशेष अंग पर कविता लिखकर काफी नाम उछलवा लिया था। अब देखिए हिंदी की सबसे उर्वर और धनाढ्य संस्था ने कवियत्री की कविताओं को प्रकाशन के लिये चुना है। कुछ लोगों को हैरानी भरी खुशी है कि जूते को पगड़ी की जगह बनते देर नहीं लगती। दो रोज पहले एक युवा कवि पूछ रहे थे कि मेरे पास कुछ बेकार कवितायें पड़ी हैं उन्हें क्या सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दूं तो मैंने उन्हें कुछ सलाह दी थी, पुनः कहता हूं कि-

'हे पार्थ, इस उत्तर आधुनिक युग में बेकार कुछ नहीं होता जो आपके लिए बेकार है वो किसी और के लिये क्रांति का हथियार है। हे धनंजय, गीता का यथार्थ यही है कि तुम बस कर्म करते जाओ, फेलोशिप, विदेश अध्ययन यात्रा, उत्कृष्ट प्रकाशन से प्रकाशित होने का मोह त्याग दो।

हे वत्स, यदि तुम्हारी कवितायें किसी की समझ में आ गयीं तो तुम्हारा जीवन व्यर्थ गया। जब तुम्हारी कविता पढ़ने के बाद पाठक पूछे कि ये क्या था गद्य या पद्य? तब समझ लो सफलता का स्वाद तुमने चख लिया है। बैड इज न्यू गुड (बुरा ही अच्छा है) के मर्म को समझो।'

इसी उपदेश के दौरान एक विदुषी आयी उसने कहा कि-

'हे मूर्ख उपदेशक, मेरी कविताओं पर चेकोस्लोवाकिया में शोध हो रहा है, मेरी बिंदी ट्रेंडसेटर हो गयी है, पहले चार हजार की नौकरी करती थी और तुम जैसे गये-गुजरे की बात मान कर नेह-मोह की कवितायें लिखा करती थी, फिर मैंने मोह-माया त्याग दिया अब देश-विदेश में मेरी धाक है मेरे पति भी नौकरी छोड़कर अब जन कल्याण करते हैं, बेटे का इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला हो गया अगले महीने क्यूबा जा रही हूं।'

मैंने हाथ जोड़कर पूछा-

'किसलिये'।

विदुषी ने कहा-

'आजादी हेतु, जूतों से आजादी ।ये जूतों का शोषण है कि वे सिर्फ पैरों में पहने जाएं। सदियों से वो भी शोषित रहे हैं, दबे-कुचले रहे हैं, जार्ज बुश के सर तक दो बार पहुंच सकते हैं, तो हमारे देश में वो पैरों में क्यों रहें उन्हें भी आगे आने का मौका दिया जाये। सिर का आधा हिस्सा जूतों को रखने के लिये आरक्षित किया जाये। हम इसके खिलाफ आंदोलन करेंगी और इसी के लिये हम लोग क्यूबा जा रही हैं।'

मैंने पूछा-

'क्यूबा ही क्यों ,दिल्ली में जंतर-मंतर है, मुंबई में आजाद मैदान है।'

उन्होंने कहा-

'चुप बे, खुद कहता है कि बैड इज न्यू गुड। खुद भूल जाता है, अबे क्यूबा जाऊंगी तभी तो अमरीका में बुलायी जाऊंगी।'

मुझे हैरानी हुई-

'लेकिन आपकी तो नौकरी छूट गयी थी मेट्रो में चलने तक पैसा नहीं होता था फिर आपका वीजा पॉसपोर्ट इतनी जल्दी।'

विदुषी मुस्करा पड़ी-

'कान इधर ला बे ढक्कन'।

वो मेरे कान में फुसफुसाते हुए बोलीं-

'अबे जब बेगूसराय में अपने गांव गेंहू चावल लेने जाती हूं तो उसे कोडवर्ड में क्यूबा कह देती हूं फेसबुक पोस्ट पर। धान-गेंहू लादकर जब दिल्ली आ जाती हूं तो लोग मेरे क्रांतिकारी भ्रमण को सुनने के लिए मुझे बुलाते हैं।'

'ऐसा आपमें क्या है कि लोग आपको सुनें'? मेरे मुंह से बेसाख्ता निकल गया।

ये सुनते ही उस विदुषी ने मुझे फेंककर जूता मारा।

उसने जूता मारा या जूती और क्यों मारा ये प्रश्न उतना ही जटिल है जितना कि सड़जी का वादा।

मेरा जवाब सिर्फ जॉर्ज बुश की तरह है जो इराक में उन पर फेंके गए जूते के बाद कहा था कि-

'मैं सिर्फ इतना कह सकता हूं कि फुटवियर छः नंबर का था'।

विदुषी ने हंसते हुए कहा-

'₹क्यों बे, बासी तरकारी तूने देखा जूता था या जूती?'

मैंने उन्हें बड़ी हसरत से देखा और बोला कि-

'चचा गालिब से एक बार किसी ने पूछा था कि जूते-जूती में क्या फर्क होता है। उस्ताद ने फरमाया था कि जोर से पड़े तो उसे जूता कहते हैं और आहिस्ता से कोई मारे तो उसे जूतियां कहते हैं।'

ये सुनते ही उत्तर आधुनिका ने अपना फुटवियर निकाल कर सिर के ऊपर ले जाकर लहराया और चिल्लाई -

'वी वांट फ्रीडम'

मेरे भी पैरों में खुजली शुरू हो गयी है।

BRIEF NEWS

जमीन कारोबारी अफसर अली की डिस्चार्ज पिटीशन पर सुनवाई छह मार्च को

RANCHI : बरियातू स्थित सेना की भूमि की खरीद बिक्री घोटाले मामले में आरोपित अफसर अली की डिस्चार्ज पिटीशन पर ईडी के विशेष न्यायाधीश राजीव रंजन की अदालत में शनिवार को सुनवाई हुई। अदालत ने मामले की अगली सुनवाई की तिथि छह मार्च को निर्धारित की है। अफसर अली के खिलाफ मामले में आरोप पत्र दाखिल हो चुका है। जांच पूरी हो गई है। वह 14 अप्रैल 2023 से न्यायिक हिरासत में जेल में हैं। अब उस पर आरोप गठन की प्रक्रिया होनी है, जिसे देखते हुए उसकी ओर से 12 जनवरी को डिस्चार्ज पिटीशन दाखिल की गयी थी। बरियातू स्थित 4.55 एकड़ सेना के कब्जेवाली जमीन की खरीद-बिक्री से जुड़े मामले में ईडी ने रांची के पूर्व उपायुक्त छवि रंजन, कारोबारी विष्णु अग्रवाल, बड़गाई अंचल के राजस्व उप निरीक्षक भानु प्रताप प्रसाद, फर्जी रैयत प्रदीप बागची, जमीन कारोबारी अफसर अली, इम्तियाज खान, तल्हा खान, फैयाज खान, मोहम्मद सद्दाम, अमित अग्रवाल और दिलीप घोष के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है।

मुख्यमंत्री को श्री शिव बारात में शामिल होने के लिए किया आमंत्रित

RANCHI : मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन से शनिवार को मुख्यमंत्री आवास में श्री शिव बारात आयोजन केंद्रीय महासमिति, पहाड़ी मंदिर (मुख्य द्वार) रांची के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। साथ ही मुख्यमंत्री को आठ मार्च को महाशिवरात्रि पर शिव बारात में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल से शिव बारात की तैयारियों की जानकारी ली। इस मौके पर श्री शिव बारात आयोजन केंद्रीय महासमिति पहाड़ी मंदिर के नंद किशोर सिंह चंदेल, गुलशन मिश्रा सहित अन्य उपस्थित थे।

सीएम चम्पाई सोरेन चार मार्च को जाएंगे गिरिडीह

RANCHI : मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन चार मार्च को पारसनाथ की धरती गिरिडीह जायेंगे। इसके मद्देनजर विधि व्यवस्था व सुरक्षा व्यवस्था संधारण, यातायात व्यवस्था व अन्य व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से शनिवार को गिरिडीह समाहरणालय सभागार कक्ष में उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी नमन प्रियेश लकड़ा की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। उपायुक्त ने कहा कि कार्यक्रम को लेकर सभी विभाग अपनी तैयारी पहले से पूर्ण कर लें। साथ ही सभी विभाग आपसी समन्वय स्थापित करते हुए कार्यों को गति के साथ करें, ताकि उक्त कार्यक्रम का सफल संचालन सुनिश्चित कराया जाए। उन्होंने कहा कि उक्त कार्यक्रम को लेकर जो भी कार्य अभी तक पूरा नहीं हुआ है, उसे तत्काल रूप से पूर्ण करें। उपायुक्त ने निर्देश दिया कि कार्यक्रम को लेकर नगर भवन की पूरी साफ सफाई सुनिश्चित कराएं।

केंद्रीय सरना समिति की बैठक में सरहुल पूजा धूमधाम से मनाने का निर्णय

RANCHI : कचहरी स्थित आरआईटी बिल्डिंग में शनिवार को केन्द्रीय सरना समिति की बैठक हुई। बैठक में रांची में सरहुल पूजा महोत्सव 2024 को धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया। बैठक कि अध्यक्षता केंद्रीय सरना समिति के केंद्रीय अध्यक्ष फूलचंद तिर्की ने किया। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि इस वर्ष 10 अप्रैल को उपवास और केकड़ा मछली पकड़ना एवं 11अप्रैल को चैत्र तृतीया शुक्ल पक्ष का पूजा और दोपहर एक बजे से सरहुल का शोभायात्रा भव्य रुप से निकाला जायेगा। 12 अप्रैल को फूलखोंसी कार्यक्रम होगा।

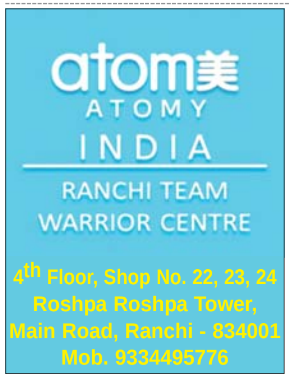

पिठोरिया में उग्रवादियों का तांडव 5 वाहनों को किया आग के हवाले

चार-पांच की संख्या में थे हथियार बंद उग्रवादी, गिरफ्तारी के लिए विशेष टीम का गठन

PHOTON NEWS RANCHI : प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएलएफआई) उग्रवादियों ने क्रशर में खड़े तीन हाइवा, एक लोडर और एक डीजी को फूंकने का मामला शनिवार को प्रकाश में आया है। घटना शुक्रवार देर रात की है। मामले की जानकारी मिलने के बाद डीआइजी अनुप बिरथरे, सिटी एसपी राजकुमार मेहता और वरीय अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे और पूरी घटना की जानकारी ली। साथ ही मौजूद अधिकारियों को कई निर्देश दिये।

मिली जानकारी के अनुसार पिठोरिया थाना के सना स्टोन डिपोजिट क्रेशर में चार-पांच की संख्या में हथियार बंद उग्रवादी पहुंच कर खुलकर तांडव किया।

घटना स्थल का निरीक्षण करते डीआईजी व अन्य अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

क्रशर में उपस्थित मुंशी से मालिक के बारे में पूछताछ की। सही जवाब नहीं मिलने पर क्रशर के कार्य में लगे तीन हाइवा, एक लोडर और एक डीजे को फूंक डाला।

मौके पर कार्य कर रहे मजदूर ने कहा कि क्रशर के पूर्व दिशा की ओर से पैदल चार-पांच की संख्या में नकाबपोश हथियारबंद लोग क्रशर पहुंचे थे और कहा, काम बंद करो। इसके बाद गाड़ी से उतार कर, मोबाइल स्विच ऑफ करवा कर मोबाइल अपने पास लेकर वाहनों पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी।

उग्रवादियों ने कहा कि हम लोग कृष्ण यादव उर्फ सुल्तान के आदमी हैं। मालिक को कह देना यहां पर काम नहीं करना है। यह कहते हुए कार्य कर रहे मजदूरों के छह मोबाइल को जब्त कर लिया और साथ लेकर चल दिये। मालिक को फोन पर इसकी सूचना हमलोगों ने दी। क्रशर के संचालक वारिस अंसारी ने कहा कि फोन के जरिए हम लोग को सूचना स्टाफ ने दी। इसके बाद हम लोग क्रशर पहुंचे। वारिस अंसारी ने कहा कि इसके बाद प्रशासन को घटना की सूचना दी।

क्रशर संचालक अंसारी ने बताया कि 28 फरवरी को क्रशर के स्टाफ रामचन्द्र के मोबाइल नर उग्रवादी कृष्णा यादव उर्फ सुल्तान के नाम से धमकी भरा फोन आया था। उस दौरान कहा गया था कि मालिक को बोल देना यहां पर काम बंद कर दे और संगठन से बात करें। इसके बाद हम लोगों ने थाना को इसकी सूचना दी थी।

इससे पूर्व भी पिछले वर्ष जनवरी में भी कृष्ण यादव उर्फ सुल्तान के नाम से कुछ उग्रवादी क्रशर में घुसकर स्टाफ के साथ मारपीट करते हुए अपना लेटर पैड पर पांच लाख का लेवी का पर्चा दिया था। इस घटना में लगभग दो करोड़ का नुकसान हुआ है।

डीआइजी ने बताया कि लेवी को लेकर पीएलएफआई की ओर से घटना को अंजाम दिया गया है। कृष्णा यादव उर्फ सुल्तान की गिरफ्तारी के लिए कई रातु, काकि पिठोरिया, ओरमांझी थाना प्रभारियों को शामिल कर एक विशेष टीम का गठन किया गया है। साथ ही इसके समर्थकों को गिरफ्तार करने का निर्देश दिया गया है। कृष्णा यादव उर्फ सुल्तान चान्हो का रहने वाला है। इसके खिलाफ कुर्की जब्ती करने का भी निर्देश दिया गया है।

सीआईडी ने दो साइबर अपराधी को धर दबोचा

PHOTON NEWS RANCHI : अपराध अनुसंधान विभाग (सीआईडी) ने दो साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार साइबर अपराधियों में कुमुद रंजन और एजाज अनवर शामिल है। कुमुद बिहार के नालंदा और एजाज हजारीबाग का रहने वाला है। इनके पास से तीन मोबाइल, तीन सिम, एक लैपटॉप, दो आधार कार्ड, तीन एटीएम कार्ड, एक पैन कार्ड और दो डेबिट कार्ड बरामद किये है।

डीएसपी नेहा बाला ने शनिवार को बताया कि साइबर क्राइम थाना में 14 जनवरी 2023 को प्राथमिकी दर्ज करायी गयी थी। मामले में पीड़ित को टेलीग्राम के माध्यम से संपर्क किया गया, जिसमें एक लिंक पर लॉग इन कर मूवीज रेटिंग करने का पार्ट टाइम जॉब ऑफर किया गया। इसके बाद उन्हें विभिन्न टेलीग्राम प्रोफाईल में जोड़कर मूवीज रेटिंग करने का दबाव बनाया जाने लगा। टेलीग्राम प्रोफाईल के माध्यम से दिए गए टास्क को पूरा करने पर शुरू में उनके पेटीएम खाते में कुछ रुपए क्रेडिट हुए। इसके बाद उन्हें भुगतान की ओर से प्राप्त रूपयों को आईसीआईसीआई बैंक के जरिये निवेश करने पर बोनस प्राप्त होने का लालच देकर विभिन्न अकाउन्ट में डिपोजिट कराया गया। मूवीज रेटिंग के टास्क को करने के लिए उनसे अलग-अलग बैंक खातों में रुपए डिपोजिट कराये जाते थे।

उन्हें यह भी आश्वासन दिया गया कि 30 मूवीज की रेटिंग पूरी होने पर सारे रुपए कमीशन के साथ वापस कर दिये जाएंगे। 30 मूवीज की रेटिंग पूरी होने पर उनके पेटीएम खाते में कुछ रुपए क्रेडिट हुए। इससे वह झांसे में आ गये और रुपए डिपोजिट करते रहे। झांसा में लेने के लिए इनके एकाउंट में कुछ पैसे डाले गये। लेकिन बाद में पैसे डालना बंद कर दिया गया और इस तरह से इनके साथ कुल 28 लाख 94 हजार 505 रुपये का साइबर ठगी कर लिया गया।

विधानसभा में विधायक बिरंची नारायण ने स्मार्ट मीटर का उठाया मुद्दा

मीटर लगाए जाने के दौरान तार की खरीदारी व उपभोक्ताओं पर पड़ने वाले बोझ पर बल दिया

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के सातवें और अंतिम दिन शनिवार को भाजपा विधायक बिरंची नारायण ने राज्य में लग रहे स्मार्ट मीटर का मुद्दा उठाया। विधायक की ओर से मुख्य रूप से स्मार्ट मीटर लगाये जाने के दौरान तार की खरीदारी और उपभोक्ताओं पर पड़ने वाले बोझ पर बल दिया गया।

इस दौरान विभाग की ओर से जानकारी दी गयी कि नया स्मार्ट मीटर लगाने के लिये उपभोक्ताओं को निजी खर्च से तार नहीं देना है। इस संबंध में बिजली वितरण निगम की ओर से समय समय पर कैंप और समाचार पत्रों में विज्ञापन और खबर के माध्यम से लोगों को जानकारी दी गयी है। रांची में अब

तक एक लाख 96 हजार स्मार्ट मीटर लगाये गये है। वहीं, धनबाद जिला में भी दो हजार स्मार्ट मीटर लगाये गये हैं। अन्य किसी भी जिला में स्मार्ट मीटर की प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है।

विधायक की ओर से पूछा गया कि पुराने मीटर को एजेंसी के लोग साथ ले जाते है। इस पर विभाग ने बताया कि क्षेत्रीय कार्यालय में पुराने मीटर को सौंप दिया जाता है, जिसके बाद एग्जीक्यूटिव इंजीनियर की ओर से पुराने मीटर और नया मीटर अधिष्ठापन का सत्यापन करती है। वहीं, पूर्व में एल्यूमीनियम तार स्मार्ट मीटर के साथ लगाये जाने पर विभाग ने जानकारी दी कि उपभोक्ताओं के करंट रेटिंग के अनुसार एल्यूमीनियम कवर्ड तार लगाया गया है। स्मार्ट मीटर लगाने की प्रक्रिया के साथ ही एल्यूमीनियम तार का इस्तेमाल कंपनी कर रही है। इसमें कहीं भी कॉपर तार का प्रयोग नहीं किया जा रहा है।

इस दौरान करंट हादसा से मरने वालों लोगों को मिलने वाले मुआवजा की दिशा में क्या कार्य किया जा रहा है, इसकी जानकारी भी मांगी गयी। इस विभाग की ओर से जानकारी दी गयी कि करंट हादसा से पीड़ित लोगों या परिजनों को नियमानुसार मुआवजा दिया जाता है। ऐसे मामलों में विद्युत निरीक्षक या कार्यपालक अभियंता की ओर से 24 घंटे के भीतर रिपोर्ट क्षेत्रीय कार्यालय को दी जानी है। रिपोर्ट के आधार पर क्षेत्रीय मुआवजा कमेटी की ओर से मुआवजा निर्गत किया जाता है।

लोकसभा चुनाव को लेकर हुई समीक्षा, चार मार्च से सोशल मीडिया पर चलेगा अभियान

PHOTON NEWS RANCHI : जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त रांची राहुल कुमार सिन्हा के निर्देशानुसार शनिवार को समाहरणालय में लोकसभा आम चुनाव की तैयारियों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में राज्य में चार मार्च से सोशल मीडिया अभियान के संचालन के संबंध में चर्चा की गई। अभियान का प्रारम्भ संपूर्ण राज्य में सभी मतदान केन्द्रों पर चार मार्च को किया जाएगा।

समीक्षा बैठक में उपस्थित अधिकारीगण। ● फोटोन न्यूज

किसी भी चुनाव में मतदान करने के लिए मतदाता का नाम संबंधित मतदान केन्द्र की मतदाता सूची में निर्बंधित होना अनिवार्य है। विगत चुनावों में कहीं-कहीं से ऐसे मामले प्रकाश में आते है कि कोई मतदाता अपना फोटो मतदाता पहचान पत्र लेकर मतदान करने जाते है, लेकिन मतदाता सूची में संबंधित मतदाता का नाम निबंधित नहीं होने के कारण वह मतदान करने से वंचित रह जाता है। आगामी लोकसभा आम चुनाव, 2024 में ऐसी एक भी घटना न हो, इसके लिए मतदाताओं को जागरूक करनेके लिए सोशल मीडिया के माध्यम से # शीशुीर श्ड्ड्शेर अभियान का संचालन करने का निर्णय लिया गया है। इसे लेकर अधिकारियों ने कई निर्देश पदाधिकारियों को दिये।

बैठक में विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी जेम्स सुरिन, अपर समाहर्ता (नक्सल), सुदर्शन मुर्मु, भूमि सुधार उप- समाहर्ता, मुकेश कुमार, उप निर्वाचन पदाधिकारी विवेक कुमार सुमन, प्रशिक्षण उप-समाहर्ता त्रिभुवन सिंह एवं राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि एवं सम्बंधित सभी अधिकारी और पदाधिकारी उपस्थित थे।

सदर अस्पताल में पहली बार अत्याधुनिक टेप विधि से हर्निया का सफल ऑपरेशन

PHOTON NEWS RANCHI : रांची के सदर अस्पताल के सर्जरी विभाग ने एक नई उपलब्धि हासिल की है। सदर अस्पताल में पहली बार टेप विधि से इंगुनल हर्निया का ऑपरेशन किया गया है। कोकर, रांची के रहने वाले जय किशुन यादव (46) का आपरेशन निःशुल्क हुआ है।

सदर के लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉक्टर अजीत कुमार ने शनिवार को बताया कि इस विधि में बिना पेट के अंदर गए हुए, पेट की दीवार के परतों के बीच जगह बनाकर, हर्निया की थैली को छुड़ा कर उसे काट कर बांध दिया जाता है। फिर प्रोलिन

जाली बिछा दी जाती है। यह पूरी प्रक्रिया तीन अत्यंत छोटे छेदों के जरिए की गई।

उन्होंने बताया कि यह एक बहुत ही अत्याधुनिक लैप्रोस्कोपिक सर्जरी मानी जाती है। इस आपरेशन को करने के लिए हाई स्किल की जरूरत होती है। आम तौर पर निजी और कारपोरेट अस्पतालों में संपन्न मरीज ही इसे कराते हैं। आपरेशन करने वाली टीम में लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉक्टर अजीत कुमार, निश्चेतक डॉ दीपक, डॉ विकास वल्लभ और ओटी स्टाफ सरिता, शशि, लखन, सुशील, मुकेश, पूनम सहित अन्य शामिल थे।

इस विधि से ऑपरेशन के फायदे : रक्तस्राव नगण्य होता है, दर्द बहुत कम होती है, मरीज अपने दिनचर्या में बहुत जल्द (दो-तीन दिनों में) वापस लौट जाते हैं, चीरा का कोई दाग नहीं रहता है, दोबारा हर्निया होने का खतरा ओपन विधि से बहुत कम होता है।

सीएनटी में धारा-49 को खत्म करने की रची जा रही साजिश : मुख्यमंत्री

RANCHI : झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के सातवें यानी अंतिम दिन शनिवार को मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने सदन को संबोधित किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड में सीएनटी में धारा 49 को खत्म करने की साजिश रची जा रही है। सीएनटी एक्ट खत्म हुआ तो आदिवासी मूलवासी खत्म हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार वन अधिकार कानून में संशोधन करने जा रही है जिसका हमलोगों ने विरोध किया है। केंद्र को इसको लेकर पत्र भी लिखा है। केंद्र सरकार ग्राम सभा को भी खत्म करने का प्रयास कर रही है। राज्य की इस दशा का जिम्मेवार भाजपा ही है।

रिम्स में राज्य का पहला सर्जिकल स्किल व वेट लैब की हुई स्थापना

PHOTON NEWS RANCHI : रिम्स के क्षेत्रीय नेत्र संस्थान में राज्य का पहला सर्जिकल स्किल एवं वेट लैब स्थापित किया गया है। रिम्स निदेशक प्रो (डा) राजकुमार ने शनिवार को इसका उद्घाटन किया। वेट लैब के संबंध में विभागाध्यक्ष डा सुनील कुमार ने बताया कि यह तकनीक विदेशों में डॉक्टरों की सर्जिकल ट्रेनिंग के लिए आमतौर पर इस्तेमाल की जाती है। इससे जूनियर डॉक्टर कभी भी इस लैब में कृत्रिम आंख या बकरी की आंख की मदद से

लैब का उद्घाटन करते रिम्स के निदेशक।

शल्य क्रिया सीख सकते है। डॉ सुनील ने बताया कि शुरुआती दौर में नेत्र विभाग के जुनियर डॉक्टर इस लैब में शल्य क्रिया का अभ्यास कर सकेंगें और आने वाले समय में जिला स्तर पर पदस्थापित नेत्र सर्जनों के लिए भी वर्कशॉप का आयोजन किया जायेगा ताकि वह भी इसका लाभ ले सकें।

मौके पर नेत्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ सुनील कुमार, डीन प्रो विद्यापति, चिकित्सा अधीक्षक डॉ हिरेंद्र बिरुआ, उपाधीक्षक डॉ शैलेश त्रिपाठी के साथ विभाग के डा दीपक लकड़ा, डा राहुल प्रसाद के अलावा वरीय एवं कनीय चिकित्सक, नर्स और कर्मचारी उपस्थित थे।

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय एग्रोटेक किसान मेला शुरू

मिट्टी के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखा जाएगा : अर्जुन मुंडा

PHOTON NEWS RANCHI : केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि देश में दूसरी हरित क्रांति संबंधी वैज्ञानिक प्रयासों में पारिस्थितिकी संतुलन और मिट्टी के टिकाऊ स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखा जाएगा। जल, जंगल, जमीन और प्राकृतिक जीवन व्यवस्था से न्यूनतम छेड़छाड़ करते हुए कृषि उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास होगा। अर्जुन मुंडा शनिवार को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, रांची में आयोजित तीन दिवसीय एग्रोटेक किसान मेला के उद्घाटन के बाद संबोधित कर रहे थे।

मुंडा ने कहा कि भारतीय जीवन पद्धति और भारतीय मिट्टी में बहुत ताकत है। इस ताकत और यहां की मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों को बचाए रखने के लिए, सजगता के साथ अगली कृषि क्रांति के लिए सबको काम करना होगा। पहली हरित क्रांति के फायदे मिले किंतु

कार्यक्रम को संबोधित करते अर्जुन मुंडा। ● फोटोन न्यूज

हम यह ध्यान नहीं रख पाए कि रासायनिक उर्वरकों के ज्यादा प्रयोग से मिट्टी को कितना नुकसान हुआ और आने वाली पीढ़ी के लिए हम मिट्टी को उसके प्राकृतिक स्वरूप में संरक्षित रख पाए या नहीं। जहां हमारा उदर भर रहा है वहीं बीमारियां भी आ रही हैं।

मुंडा ने कहा कि वैश्विक तापमान में वृद्धि और जलवायु परिवर्तन से पूरी दुनिया प्रभावित है लेकिन हम सबों को देखना है कि अपने-अपने क्षेत्र में हम इससे निपटने के लिए क्या कर सकते हैं। पोषक तत्वों से भरपूर मिलेट्स हमारी प्राचीन परंपरा, पर्व त्योहार और पूजन पद्धति का अंग रहे। उन्हें हम विस्मृत कर रहे थे लेकिन प्रधानमंत्री ने अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष की अवधारणा प्रस्तुत कर पूरी दुनिया को इन फसलों को बचाने, बढ़ाने बढ़ाने का संदेश दिया।

मुंडा ने नवोन्मेषी कृषि के लिए पांच प्रगतिशील किसानों- संगीता देवी, बोकारो, शिवनाथ कुशवाहा, गढ़वा, मैनेजर हांसदा, पाकुड़, मेरिटा हेंब्रम, साहिबगंज तथा रवि कुमार महतो को सम्मानित भी किया।

रांची के सांसद संजय सेठ ने कहा कि बीएयू के 40 किलोमीटर रेडियस में सब्जी और फल उत्पादन का बड़ा क्षेत्र है, जहां से पड़ोसी राज्यों के अलावा मुंबई और कर्नाटक तक उत्पाद जाते हैं। बागवानी के क्षेत्र में यहां की संभावनाओं का समुचित उपयोग होना चाहिए।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ हिमांशु पाठक ने कहा कि झारखंड बागवानी, पशु उत्पादन एवं मत्स्य उत्पादन के क्षेत्र में एक बड़े हब के रूप में उभर सकता है। इसके उत्पादों की मांग देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी होगी। इसके लिए आर्थिक सहयोग के साथ-साथ पॉलिसी सपोर्ट की भी आवश्यकता है।

कांके के विधायक समरी लाल ने कहा कि कांके बड़ा कृषि उत्पादक क्षेत्र है। इसलिए यहां कई बड़े कोल्ड स्टोरेज खुलने चाहिए तथा दशकों से बंद पड़े एशिया फेम के बेकन फैक्टरी को शीघ्र प्रारंभ करना चाहिए। रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अजित कुमार सिन्हा तथा भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, रांची के निदेशक डॉ सुजय रक्षित ने भी अपने विचार रखे।

एग्रोटेक मेला में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों, आईसीएआर के संस्थानों, बीज, उर्वरक के निर्माताओं, सरकारी विभागों, बैंकों तथा स्वयंसेवी संगठनों ने 130 स्टॉल में अपनी प्रौद्योगिकी, उत्पादों और सेवाओं को प्रदर्शित किया है। आयोजन में राज्य के सभी 24 जिलों के किसान अच्छी संख्या में भाग ले रहे हैं।

राज्यसभा की दो सीटों के लिए चुनाव आयोग 4 मार्च को जारी करेगा अधिसूचना

PHOTON NEWS RANCHI : राज्य से राज्यसभा की दो सीटों पर चुनाव की तैयारी पूरी की जा रही है। इसके लिए चुनाव आयोग चार मार्च को अधिसूचना जारी करेगा। चुनाव 21 मार्च को होगा। इसके बाद नामांकन प्रक्रिया शुरू हो जाएगी, जो 11 मार्च तक चलेगी। 12 मार्च को स्क्रूटनी होगी और 14 मार्च तक नाम वापस लिए जा सकेंगे। नतीजे 21 मार्च को मतदान के दिन देर शाम घोषित किए जाएंगे। इस चुनाव के लिए पर्यवेक्षक बने मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने बताया कि अधिसूचना जारी होते ही विधानसभा सचिव के समक्ष नामांकन की प्रक्रिया शुरू हो जायेगी।

राज्यसभा की जिन दो सीटों पर चुनाव होना है, उन पर कांग्रेस और भाजपा का कब्जा है। कांग्रेस के धीरज प्रसाद साहू और भाजपा के समीर उरांव का कार्यकाल इस साल तीन मई को खत्म हो रहा है। अभी तक उम्मीदवारों के नाम की घोषणा नहीं की गई है। एनडीए की ओर से मंगलवार

तक उम्मीदवार के घोषणा होने की संभावना है जबकि यूपीए की ओर से प्रदेश कांग्रेस प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने राज्यसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस अध्यक्ष को रिपोर्ट भेज दी है।

बैठक के बाद उम्मीदवार के नाम की घोषणा जल्द की जाएगी। ऐसी संभावना है कि दो से अधिक यानी तीन उम्मीदवार उतारे जा सकते हैं। इसके पीछे की वजह वोटों का गणित बिगाड़ना है। हालांकि, सियासी हलचल के बीच सोमवार को अधिसूचना जारी होते ही राज्यसभा चुनाव का बिगुल बज जाएगा, जिसके लिए चुनाव आयोग अपनी तैयारियां पूरी कर रहा है।

THE PHOTON NEWS

www.thephotonnews.com
Sunday, 03 March 2024

BRIEF NEWS

अवैध विदेशी शराब जब्त, एक गिरफ्तार

JAMSHEDPUR : आबकारी विभाग ने शनिवार को अवैध विदेशी शराब के साथ इस धंधे में संलिप्त एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। विभागीय अधिकारी के अनुसार, उन्हें अवैध विदेशी शराब के परिवहन की गुप्त सूचना मिली थी। इस पर साकची स्थित शीतला मंदिर चौक के करीब कारोबारी को रोकने का प्रयास किया गया। इसी क्रम में कारोबारी के सहयोगी को अवैध विदेशी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया, जबकि मुख्य कारोबारी फरार हो गया। पकड़े गए आरोपी की निशानदेही पर भुइयांडीह स्थित बाबूडीह, ग्वाला बस्ती में छापेमारी की गई। दोनों छापेमारी में कुल 44.46 लीटर अवैध विदेशी शराब जब्त किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में भेजने की कार्रवाई जारी है।

पति ने पत्नी को डंडे से पीट-पीट कर मार डाला

ROURKELA : सुंदरगढ़ जिला स्थित कुआरमुंडा ब्लॉक के जलंगबीरा पंचायत में एक पति ने डंडे से पीट-पीट कर पत्नी को मार डाला। बताया जाता है कि यह घटना घरेलू झगड़े में हुई है। पुलिस ने हत्या के आरोपित पति को गिरफ्तार कर लिया है। शनिवार सुबह बीरमित्रपुर थाना अंतर्गत जलंगबीर पंचायत में सामुएल सोरेन का अपनी पत्नी फुलमनी से किसी कारण से झगड़ा हो गया। गुस्साए सामुएल ने अपनी पत्नी फुलमनी की डंडे से पीट-पीट कर हत्या कर दिया। खबर पाकर बीरमित्रपुर के एसडीपीओ सुशांत कुमार दास क्वारमुंडा फांडी अधिकारी के साथ मौके पर पहुंचे और जांच की।

राउरकेला कोर स्वच्छता कार्यकर्ताओं को मिला प्रशिक्षण

ROURKELA : राउरकेला कोर स्वच्छता कार्यकर्ताओं के लिए 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शनिवार को संपन्न हो गया। राउरकेला स्थित ओयूए सैटेलाइट सेंटर, एफएसटीपी में कक्षा सत्रों के बाद प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। सुंदरगढ़, तालचेर, झारसुगुड़ा और राउरकेला के प्रशिक्षुओं को 'सीवर एंट्री प्रोफेशनल्स' बनने के लिए प्रशिक्षित किया गया। उन्हें 'गारिमा' के तहत सशक्त बनाया गया, जो ओडिशा सरकार की एक योजना है। इसका उद्देश्य कोर स्वच्छता श्रमिकों की सुरक्षा और गरिमा को बढ़ाना है। हाशिए पर मौजूद लोगों को सशक्त बनाने के मुख्यमंत्री के दृष्टिकोण के अनुरूप आयोजित क्षमता निर्माण कार्यशालाओं की श्रृंखला में यह दूसरा बैच था।

अयोध्या भ्रमण पर निकले छह साइकिल सवार

ROURKELA : राउरकेला, साइक्लिंग इवेंट वर्ल्ड संगठन के 6 साइकिल सवार शनिवार को अयोध्या भ्रमण के लिए निकले। राउरकेला स्थित हनुमान बाटिका से 760 किलोमीटर की दूरी तय कर ये साइकिल सवार ओडिशा, झारखंड, बिहार होते हुए उत्तर प्रदेश पहुंचेंगे। साइकिल चालक दल में कोशल अग्रवाल, कुणाल रले, राकेश अग्रवाल, भूषण सिंह, अभिषेक बंसल और अंकुश आहूजा शामिल हैं। गौरतलब है कि ये 6 साइकिल चालक पहले लंदन, पेरिस, लद्दाख और वियतनाम की यात्रा कर चुके हैं।

अब गोल्ड मेडल पाने में भी लड़कों को पछाड़ रहीं लड़कियां : राज्यपाल

दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने 28 छात्राओं को दिया गोल्ड मेडल

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : झारखंड-बिहार के एकमात्र महिला विश्वविद्यालय 'जमशेदपुर वीमेंस यूनिवर्सिटी' का पहला दीक्षांत समारोह शनिवार को सिदगोड़ा स्थित विवि के नए परिसर में आयोजित हुआ। इसमें मुख्य अतिथि राज्यपाल सह राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति सीपी राधाकृष्णन शामिल हुए। मौके पर राज्यपाल ने कहा कि आपका परिश्रम और समर्पण ही आपको लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोगी साबित होगा। उन्होंने कहा कि बेटियां अपनी क्षमता को पहचानें, दूसरे क्या कहते हैं इस पर ध्यान न दें। दीक्षांत के साथ जीवन का एक नया अध्याय शुरू होने वाला है। कभी भी अपनी क्षमता को कमतर नहीं आंकना चाहिए। अगर सही सोच के साथ प्रयास किया जाए तो सफलता मिलनी तय है। यही वजह है कि आज हमारी बेटियां विश्वविद्यालयों में लड़कों से अधिक गोल्ड मेडल प्राप्त कर रही हैं। अब आप सभी को यहां से निकल कर समाज के विकास में योगदान करना है। इससे पहले उन्होंने कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस दौरान अलग-अलग विषयों के 28 पीजी टॉपर को उन्होंने गोल्ड मेडल प्रदान किया। इस अवसर पर कुलपति अंजिला गुप्ता, डीसी अनन्य मित्तल, एसएसपी व डीडीसी समेत तमाम अधिकारी मौजूद थे।

। • फोटोन न्यूज

कोल्हान में महिला शिक्षा का प्रमुख केंद्र

राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने कहा कि यह विश्वविद्यालय पूरे कोल्हान में महिला शिक्षा का प्रमुख केंद्र है। इसके लिए पूरा विश्वविद्यालय परिवार बधाई का पात्र है। आज इस विश्वविद्यालय के लिए ऐतिहासिक दिन है, क्योंकि आज विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षांत समारोह हो रहा है। उन्होंने वीमेंस कॉलेज की संस्थापक स्वर्गीय पेरीन सी मेहता के योगदान की सराहना करते हुए इस कॉलेज को विश्वविद्यालय तक का दर्जा दिलाने में भूमिका निभाने वाले सभी सदस्यों को बधाई का पात्र बताया।

समाज का प्रतिनिधित्व कर रहीं बेटियां

राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने कहा कि आज बेटियां समाज का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी बेहतर कर रही हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि लड़कों की क्षमता को नजरअंदाज किया जा रहा है, लेकिन यह कहना आज के दौर में लड़कियां आगे जाकर बेहतर कर रही हैं। अपने संबोधन के क्रम में राज्यपाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' नर की भी चर्चा की। उन्होंने पुनः कहा कि बेटियां अपनी क्षमता को पहचानें और दूसरों से कुछ सीखने की कोशिश करें, अच्छे स्वास्थ्य के साथ आगे बढ़ें, यही सफलता की निशानी है।

एकेडमिक शोभा यात्रा के साथ शुरू हुआ समारोह

इससे पूर्व आरंभ में परंपरागत एकेडमिक शोभायात्रा के साथ मुख्य अतिथि राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन को मंच पर लाया गया। शोभा यात्रा में विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ अंजिला गुप्ता, कुलसचिव प्रो राजेंद्र जायसवाल, सभी सिंडिकेट सदस्य, विभिन्न संख्याओं के प्रमुख हुए। संगीत विभाग अध्यक्ष सनातन दीप के नेतृत्व में विभाग की छात्राओं ने राष्ट्रगान एवं कुल गीत प्रस्तुत किया। इसके बाद दीप प्रज्वलन एवं राज्यपाल सह कुलाधिपति की अनुमति से दीक्षांत समारोह की शुरूआत हुई। इस दौरान विभिन्न संकाय एवं विषयों की टॉपर छात्राओं को राज्यपाल ने गोल्ड मेडल एवं डिग्री प्रदान कर सम्मानित किया। 702 छात्राओं को डिग्री प्रदान की गई।

डूब रहीं परिवार पर आश्रित सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यम कंपनियां : राज्यपाल

JAMSHEDPUR : आज पूरे देश में जो एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यम) कंपनियां डूब रही हैं, ज्यादातर परिवार पर आश्रित हैं। जो लोग समय के साथ नहीं बदले, वे पीछे रह गए हैं। दूसरी ओर एमसएमई में ही नए स्टार्टअप उभर रहे हैं, जबकि पुराने बंद हो रहे हैं। ऐसे में हमें उनसे सीखना चाहिए, जो आगे बढ़ रहे हैं, ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। बिष्टुपुर स्थित चैंबर भवन में सिंहभूम चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि आज यूरोप के देशों में एमएसएमई काफी अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं, खासकर जर्मनी में। स्मॉल इंडस्ट्री का मतलब यह नहीं है कि आप छोटे-छोटे सामान ही बनाएंगे। आप स्वयं को इस तरह से अपडेट करें कि विदेश की कंपनियां आपके साथ ज्वाइंट वेंचर में काम करने को उत्सुक हों। नए विचार के साथ नई टीम बनाएं, केंद्र व राज्य सरकार की औद्योगिक नीतियों का अध्ययन करें और बाजार की मांग के अनुरूप उद्योग स्थापित करने की तैयारी करें। उन्होंने उदाहरण दिया कि आज से 100 वर्ष पहले देश में स्टील इंडस्ट्री कहां थी, आज कितने राज्य में है। तमिलनाडु के कोयंबटूर में एक भी स्टील कंपनी नहीं है, लेकिन वहां हर तरह के सबमसिबल पंप ही नहीं, पनडुब्बी तक बनते हैं। आप देखिए कि महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश ने कैसे इतनी तरक्की कर ली। अंत में उन्होंने कहा कि औद्योगिक हब के लिए एयरपोर्ट बहुत जरूरी है, क्योंकि आपका खरीददार अब आने-जाने में समय बर्बाद नहीं करने वाला है। चैंबर के पूर्व अध्यक्ष मुरलीधर केडिया के प्रश्न पर राज्यपाल ने कहा कि झारखंड में पर्यटन उद्योग की असीम संभावना है, लेकिन यह रातों-रात विकसित नहीं हो सकता है। रेल, रोड, एयरपोर्ट आदि बनाने के बाद सुरक्षा व्यवस्था भी तैयार करना होगा। राज्यपाल ने सिंहभूम चैंबर को सलाह दी कि उसका मूल कार्य नए उद्यमियों का मार्गदर्शन करना होना चाहिए। सिंहभूम चैंबर से संवाद के दौरान एक सवाल पर राज्यपाल ने कहा कि किसी भी राज्य के विकास में राजनीतिक नेतृत्व का हाथ तो होता ही है, लेकिन इससे ज्यादा वहां के नागरिक जिम्मेदार होते हैं। खासकर ऐसे लोग जो जाति, धर्म, समाज-समुदाय या पैसे के लालच में गलत लोगों को चुन लेते हैं। जब तक हम विकास के दृष्टिकोण से जनप्रतिनिधि नहीं चुनेंगे, उसकी उम्मीद कैसे कर सकते हैं।

सुंदरगढ़ सहित ओडिशा में खुले पांच मेडिकल कॉलेज-अस्पताल

। • फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने शनिवार को वर्चुअल मोड से सुंदरगढ़ सहित ओडिशा में 5 मेडिकल कॉलेज-अस्पताल का उद्घाटन किया। इस अवसर पर सुंदरगढ़ सरकारी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के परिसर में उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। समारोह में श्रम एवं कर्मचारी बीमा मंत्री शारदा प्रसाद नायक, राजगांगपुर विधायक डॉ राजन एक्का, तलसरा विधायक भवानी शंकर भोई, पद्मश्री डॉ. दिलीप तिर्की, बीजद नेता व पूर्व मंत्री मंगला किशान, पूर्व विधायक योगेश कुमार सिंह, विनय टोप्पो, जिलापाल, अतिरिक्त जिलापाल, सीडीएमओ, मेडिकल कॉलेज के डीन सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

आदिवासी बहुल सुंदरगढ़ जिले और आसपास के जिलों के लोगों को बेहतर गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए सुंदरगढ़ मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के लिए आधुनिक बुनियादी ढांचे का निर्माण किया गया है। 2014 में मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने एनटीपीसी से 417.77 करोड़ रुपये की लागत से सुंदरगढ़ में 21 एकड़ भूमि पर एक अत्याधुनिक अस्पताल के निर्माण की आधारशिला रखी थी। इस मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में 113 डॉक्टर और 190 से अधिक नर्सें हैं। सुंदरगढ़ जिले के साथ-साथ पड़ोसी जिलों और पड़ोसी राज्यों छत्तीसगढ़ और झारखंड के लोग सुंदरगढ़ जनरल अस्पताल पर निर्भर हैं। सरकारी कॉलेज और अस्पताल खुलने के बाद ज्यादा लोगों को फायदा हो सकता है।

तीन की जगह 23 को मनेगा राउरकेला दिवस

ROURKELA : राउरकेला दिवस तीन मार्च की जगह 23 मार्च को मनाया जाएगा। यह निर्णय अपरिहार्य कारणों से आयोजक कानभास संगठन लिया है। इसी संदर्भ में कानभास की ओर से राउरकेला दिवस मनाने के लिए तैयारी बैठक की गई। बैठक के बाद कानभास के होस्ट सुरेश प्रधान ने कहा कि इस साल मैट्रिक और अन्य परीक्षा होने के कारण तारीख बदला गया है। जानकारी के मुताबिक, राउरकेला शहर का रिंग रोड पिछले साल की तरह 3 तारीख की शाम को जगमगाएगा। इसके साथ ही उस दिन सुबह मैराथन का भी आयोजन किया जाएगा। मैराथन में शहर के विभिन्न वर्गों के युवा और छात्र भाग लेंगे।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

PHOTON NEWS ROURKELA : आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के अवसर पर 10वां वार्षिक महोत्सव एवं नव यज्ञशाला के शुभारंभ पर शनिवार को 2 दिवसीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ शुरू हुआ। इस मौके पर नए मंदिर का उद्घाटन करने के लिए पूर्व केंद्रीय मंत्री दिलीप रॉय मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुए। इस दोदिवसीय कार्यक्रम में टाटानगर के प्रचारक एवं उपदेशक धर्म प्रकाश शास्त्री, उपदेशिका गितिका आर्य, प्रतिमा आर्या, वैदिक उपदेशक धनुर्धर महापात्र, उपदेशक बुधेश्वर षडंगी, भजनउपदेशक अंतयार्मी मेहेर,

कार्यक्रम में उपस्थित लोग। • फोटोन न्यूज

उपदेशक दीनबंधु बारिक, उपदेशक एवं अग्निबाबा आचार्य सामी कैवल्य मुनि, उपदेशक गोविंद देव , वैदिक पाला गायक फकीर बारा, वक्ता सोमदेवजी मुख्य प्रवचन देने का कार्यक्रम है। इस्रका मुख्य उद्देश्य वेदों के पाठ के माध्यम से मानव समाज को सही रास्ते पर लाना है। कार्यक्रम में आर्य समाज, ट्रस्ट बोर्ड प्रबंधन समिति के अध्यक्ष अक्षेश्वर आर्य, उपाध्यक्ष सुरेश चंद्र आर्य, संपादक दयानिधि आर्य, सह-संपादक अशोक कुमार आर्य, कोषाध्यक्ष सूर्यमनी आर्य, प्रचार प्रबंधक डॉ.उमाकांत आर्य, ट्रस्टी नरसिंह चरण आर्य, रामचन्द्र आर्य, सुरेश आर्य, विनोद आर्य, बिस्वारंजन आर्य, केदारनाथ आर्य सहित उमाकान्त आर्य प्रमुख योगदानकर्ता हैं।

टाटा स्टील ने संस्थापक की जयंती पर जियोलॉजिकल सेंटर किया समर्पित

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : टाटा स्टील ने अपने संस्थापक जमशेदजी नसरवानजी टाटा की 185वीं जयंती पर शहरवासियों को जियोलॉजिकल सेंटर समर्पित किया है। टाटा स्टील की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाने वाले भूविज्ञानी पीएन बोस के नाम पर बने इस सेंटर का उद्घाटन संस्थापक जयंती की पूर्व संध्या पर शनिवार को टाटा स्टील के सीईओ सह प्रबंध निदेशक टीवी नरेंद्रन ने किया। सेंटर का उद्देश्य देश की, विशेषकर ओडिशा और झारखंड की भूवैज्ञानिक संपदा के संरक्षण और प्रदर्शन के अत्यधिक महत्व को सामने लाना है।

इस केंद्र की परिकल्पना टाटा स्टील के पूर्व डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर (स्टील) डॉ. टी मुखर्जी ने की थी,

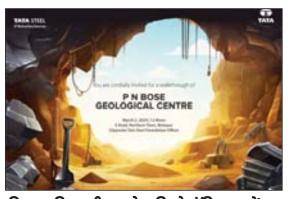

बिष्टुपुर स्थित पीएन बोस जियोलॉजिकल सेंटर।

जिन्होंने अपने निजी संग्रह से खनिज नमूने केंद्र को दान में दिए थे। इसके अलावा, टाटा स्टील के पूर्व मैनेजिंग डायरेक्टर स्वर्गीय डॉ. जे जे ईरानी के परिवार द्वारा उदारतापूर्वक प्रदान किए गए चट्टानों और खनिज नमूनों के साथ केंद्र में संग्रह को बढ़ाया गया है।

आई-मेक और आई-सी प्रॉक का उद्घाटन : टीवी नरेंद्रन ने शनिवार को टाटा स्टील जमशेदपुर वर्क्स में आई-मेक (इंटीग्रेटेड मेंटेनेंस एक्सीलेंस सेंटर) और आईझसी प्रॉक (इंटीग्रेटेड कोक प्लांट रिमोट ऑपरेशंस सेंटर) का भी उद्घाटन किया। दोनों केंद्र बेहतर निगरानी और नियंत्रण के लिए एक एकीकृत कमांड सेंटर की स्थापना के लिए आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार के साथ डिजिटलीकरण के प्रति टाटा स्टील की प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं।

एसएनटीआई में टेकएक्स-2024 उद्घाटित : टीवी नरेंद्रन ने शनिवार को शावक नानावती टेक्निकल इंस्टीट्यूट में 14वीं टेक्निकल एग्जीबिशन, टेकएक्स-2024 का भी उद्घाटन किया। बिष्टुपुर स्थित संस्थान परिसर में पूरे भारत से 41 परियोजनाओं का उल्लेखनीय संग्रह प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उद्योग के दिग्गजों, आईआईटी और एनआईटी सहित प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों का योगदान है।

विभिन्न प्रखंडों के 35 धावकों ने क्रॉस कंट्री में लिया हिस्सा

PHOTON NEWS CHAIBASA : मागे पर्व के अवसर पर सदर प्रखंड के कमारहातु में सात किलोमीटर दूरी का क्रॉस कंट्री दौड़ प्रतियोगिता आयोजित किया गया। जिसमें विभिन्न प्रखंडों के 35 धावकों ने भाग लिया। इसमें खूंटपानी प्रखंड के के बोया गांव के सन्नी इचागुटु ने 19 मिनट का समय लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं तांतनगर के सीनी गांव के गणेश कालुंडिया द्वितीय और खूंटपानी के चीरु गांव के मुकुंद बानरा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इससे पूर्व धावकों को भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र मुम्बई के वरीय वैज्ञानिक सहायक पाइकिराय देवगम एवं एम्स,नई दिल्ली के इंजीनियर रुपनारायण देवगम ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मौके पर आयोजन समिति के मुंडा बिरसा देवगम, सोनाराम देवगम, सोमय देवगम, कृष्णा देवगम, सुरजा देवगम, लादू देवगम, भीम सिंह देवगम, पतोर देवगम, कृष्णा पाडेय़ा, लव किशोर पुरती, प्रकाश देवगम, तुराम देवगम, सिंगराय देवगम, अर्जुन देवगम आदि मौजूद थे।

सड़क दुर्घटना में बाइक सवार युवक की मौत, एक घायल

JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के आजादनगर थाना अंतर्गत ओल्ड पुरुलिया रोड यीशु भवन के पास शुक्रवारझशनिवार रात 2 बजे सड़क दुर्घटना में बाइक सवार दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद पुलिस ने घायलों को इलाज के लिए एमजीएम अस्पताल पहुंचाया जहां जांच के बाद एक युवक को मृत घोषित कर दिया गया। मृतक की पहचान भालूबासा रोड नंबर 5 निवासी 32 वर्षीय अमित तिवारी के रूप में को गई। जबकि घायल खालिद ओल्ड पुरुलिया रोड का रहने वाला है। मृतक अमित मूल रूप से सिवान जिले का रहने वाला है।

एनटीटीएफ आरडी टाटा तकनीकी संस्थान के चार छात्रों का 4.20 लाख सालाना पैकेज पर हुआ चयन

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के गोलमुरी स्थित एनटीटीएफ आरडी टाटा तकनीकी संस्थान में मानेसर स्थित यास्कावा कंपनी की ओर से कैंपस सिलेक्शन किया गया। इसमें लिखित परीक्षा के बाद छात्रों की व्यक्तिगत प्रतिभा एवं तकनीकी क्षमता को परखा गया। फाइनल सिलेक्शन इंटरव्यू राउंड के बाद किया गया, जिसमें छात्रों ने अपनी दक्षता प्रदर्शित करते हुए संस्थान को गौरवान्वित किया। कंपनी द्वारा एनटीटीएफ के चार छात्रों को

। • फोटोन न्यूज

4 l20 लाख रुपये सालाना पैकेज पर लॉक किया गया। इन सभी छात्रों ने तीनों राउंड की सिलेक्शन प्रक्रिया में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर अपनी जगह इस कंपनी में बनायी।

एनटीटीएफ आरडी टाटा तकनीकी संस्थान के ये चारों चयनित छात्र डिप्लोमा इन मेकेट्रोनिक्स इंजीनियरिंग आरडी टाटा तकनीकी संस्थान के हैं। चयनित छात्रों में अनुभव कुमार सिंह, एन रोहित, राहुल कुमार और राहुल भुई शामिल हैं। प्लेसमेंट ड्राइव में संस्थान की प्लेसमेंट पदाधिकारी नेहा एवं मिथिला का सराहनीय सहयोग रहा। संस्थान की प्राचार्य प्रीता जॉन ने चयनित चारों छात्रों को उनकी इस उपलब्धि के लिए शुभकामनाएं दी हैं। वहीं संस्थान के उप प्राचार्य रमेश राय, पंकज गुप्ता, दीपक सरकार, पी मंजुला एवं उप-प्रबंधन प्रशासनिक अधिकारी वरुण कुमार ने भी छात्रों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

जेएन टाटा की जयंती की पूर्व संध्या पर जुबिली पार्क में विद्युत सज्जा का चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने किया उद्घाटन, बोले-

जमशेदपुर हमेशा से टाटा समूह की प्राथमिकता में रहा

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : टाटा समूह के संस्थापक जेएन टाटा की जयंती की पूर्व संध्या पर शनिवार को जुबिली पार्क में विद्युत सज्जा का उद्घाटन करने पहुंचे टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने कहा कि जमशेदपुर शहर और टाटा स्टील टाटा समूह के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। समूह के पहले स्टील प्लांट की स्थापना यहीं हुई। लिहाजा यह हमेशा से हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता में रहा है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2024 टाटा स्टील के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस वर्ष बेहतर प्रगति के लिए सबको शुभकामनाएं दीं। कहा कि चाहे शहर का विस्तारीकरण हो या फिर कंपनी या समूह की बात हो, इसे इसकी अधिकतम क्षमता तक पहुंचने के लिए कृत संकल्पबद्ध है। चेयरमैन ने पूरे शहरवासियों को संस्थापक दिवस की बधाई दी।

भव्य विद्युत सज्जा का हुआ उद्घाटन : टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने जुबिली पार्क स्थित जेएन टाटा की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। वहीं से बटन दबाकर पार्क सहित पूरे शहर के अलग-अलग इलाकों में की गई विद्युत सज्जा का उद्घाटन किया। एक साथ फैली रोशनी से पूरा पार्क परीलोक जैसा दिखने लगा।

निजी विमान से पहुंचे चेयरमैन

संस्थापक दिवस समारोह पर रविवार को होने वाले मुख्य कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए चेयरमैन एन चंद्रशेखरन टाटा समूह के निजी विमान से दोपहर करीब दो बजे सोनारी एयरपोर्ट पहुंचे। एयरपोर्ट पर उनका स्वागत टाटा स्टील के एमडी सह ग्लोबल सीईओ टीवी नरेंद्रन, वीपी-सीएस चाणक्य चौधरी सहित अन्य पदाधिकारियों ने किया।

सरकारी अस्पताल में 660 करोड़ का निवेश, सीएम ने किया शिलान्यास

PHOTON NEWS ROURKELA : राउरकेला सरकारी अस्पताल के विस्तार के लिए 660 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने शनिवार को इसका आनलाइन शिलान्यास किया। पहले राउरकेला सरकारी अस्पताल 400 बेड का था, जिसे बढ़ाकर 800 बेड किया जाएगा। इसके अलावा क्रिटिकल केयर सुविधाएं भी होंगी। अस्पताल में नेफ्रोलॉजी और न्यूरोलॉजी विभाग खुलने की जानकारी है, जिसमें जांच और इलाज की सुविधा होगी। शिलान्यास के दौरान रघुनाथपाली के विधायक सुब्रत तराई, आरजीएच निदेशक समेत शहर के कई लोग मौजूद थे।

तेज रफ्तार का कहर झारखंड के पलामू में दो छात्रों की मौत, दो की हालत गंभीर

नौवीं की परीक्षा देने के बाद एक ही बाइक पर घूमने निकले थे चार छात्र

PHOTON NEWS PLAMU : झारखंड के पलामू जिले के पांकी थाना क्षेत्र के पांकी-मेदिनीनगर रन्नेभरी छलका पुल के नीचे तेज रफ्तार बाइक सवार चार छात्र पेड़ से टकराते हुए नीचे गिर गए। इस घटना में एक छात्र की मौत घटनास्थल पर ही हो गयी, जबकि एक छात्र ने इलाज के लिए ले जाने के क्रम में रास्ते में दम तोड़ दिया। छात्र दीपक को रिम्स रेफर कर दिया गया है। एक अन्य छात्र भी हादसे में घायल है। बताया जा रहा है कि नौवीं की परीक्षा देने के बाद एक ही बाइक पर चार छात्र घूमने निकल गए थे। इसी दौरान सड़क हादसे का शिकार हो गए। परीक्षा के बाद घूमने निकल गए थे

घटना स्थल पर जुटी लोगो की भीड़ • फोटोन न्यूज

छात्र बताया जाता है कि मृतक लाल सूरज कुमार अपने तीन अन्य दोस्तों के साथ नौवीं कक्षा की परीक्षा देने पांकी रन्नेभरी स्तरोन्नत प्लस टू उच्च विद्यालय गया था। परीक्षा देने के बाद मृतक लाल सूरज कुमार समेत चार छात्र एक ही बाइक पर सवार होकर सलगस की ओर घूमने चले गए थे। घर लौटने के दौरान रन्नेभरी छलका पुल के नीचे बाइक सवार सभी छात्र नीचे गिर गए। दुर्घटना में लाल सूरज कुमार नामक छात्र की मौत घटनास्थल पर ही हो गयी, जबकि तीन छात्र गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलने पर पांकी थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को पांकी समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया, जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद दीपक कुमार को रेफर कर दिया। हिमांशु कुमार का सगालीम में इलाज किया जा रहा है। दो छात्रों की हो गयी है मौत सड़क हादसे में लाल सूरज कुमार व छोटू कुमार की मौत हो गयी, जबकि दीपक कुमार की हालत नाजुक है। एक छात्र हिमांशु कुमार पासवान भी घायल है। सभी परसिया के हैं। सभी छात्र नाबालिग पांकी थाना प्रभारी उत्तम कुमार तिवारी ने बताया कि दुर्घटना में एक छात्र की मौत हो गयी है, जबकि तीन अन्य छात्र घायल हैं। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमास्टम के लिए मेदिनीनगर सदर अस्पताल भेज दिया है। मृतक और घायल सभी छात्र नाबालिग हैं। एक साथ चार छात्र सवार होकर तेज रफ्तार से बाइक चला रहे थे। दुर्घटनास्थल पर तीखा मोड़ है। इधर, स्थानीय लोगों का कहना है कि तीखा मोड़ होने के कारण आए दिन छलका पुल के निकट दुर्घटना

साहिबगंज : खाना बनाने के क्रम में लगी भीषण आग, 5 घर जलकर खाक

गैस सिलेंडर फटने से आग लगने की आशंका

ग्रामीणों के सहयोग से आग पर काबू पाया गया • फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS SAHIBGANJ : साहिबगंज जिले के राजमहल में राधानगर थाना क्षेत्र के राधा नगर मुस्लिम टोला में दोपहर को खाना बनाने के क्रम में अचानक आग लग गई। इसकी चपेट में आने से 5 घर जलकर राख हो गए। लाखों की संपत्ति का नुकसान होने की बात कही जा रही है। गैस सिलेंडर फटने से आग लगने की आशंका जानकारी के अनुसार, कासिम शेख, सनाउल शेख, कालू शेख, साइमा खातून, रसीद खातून व उजेमा खातून का घर जलकर राख हो गया है। आशंका जताई जा रही है कि गैस सिलेंडर फटने की वजह से आग लगी होगी, क्योंकि लोगों ने ब्लास्ट की आवाज सुनी थी। हालांकि, आधिकारिक तौर पर अभी तक इसकी पुष्टि नहीं हुई है। आग लगने से किसी व्यक्ति को नहीं हुआ नुकसान आग की लपटें शांत होने के बाद ही इसकी पुष्टि हो सकेगी। घटना में किसी की व्यक्ति को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। आग लगने के बाद बगल के ही एक पोखर से पंपिंग सेट जोड़कर ग्रामीणों के सहयोग से आग पर काबू पाया गया। ग्रामीणों ने आग लगने की सूचना फायर ब्रिगेड को दी थी, लेकिन समाचार लिखे जाने तक फायर ब्रिगेड की गाड़ी घटनास्थल पर नहीं पहुंची थी

बोकारो में लोन दिलाने के नाम पर ठगी के चार आरोपी गिरफ्तार

PHOTON NEWS BOKARO : चास थाना क्षेत्र अंतर्गत शांति नगर में पुलिस ने छापेमारी कर लोन दिलाने के नाम पर ठगी करने वाले चार आरोपितों को गिरफ्तार कर अन्य कई सामग्री जब्त की गई है। चास अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी प्रवीन कुमार ने शनिवार को पत्रकार वार्ता में बताया कि एक मार्च को पुलिस अधीक्षक के माध्यम से सूचना प्राप्त हुई कि चास थानान्तर्गत शांति नगर स्थित किराये के एक मकान में बाहर से आये हुए कुछ व्यक्तियों के द्वारा फर्जी पहचान पत्र एवं दस्तावेज तैयार कर आम लोगों के साथ लोन दिलाने के नाम पर ठगी करने का काम किया जा रहा है।

प्रेस कांफ्रेंस कर जानकारी देती पुलिस • फोटोन न्यूजे

इस सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए शांतिनगर स्थित नयन कुमार के मकान में किराये पर रहने वाले अविनाश कुमार के कमरे में छापेमारी किया गया, जहां उनके अलावा एक अन्य व्यक्ति रवि कुमार सहनी उपस्थित पाया गया। दोनों व्यक्तियों एवं कमरा की तलाशी लेने पर संबंधित कई दस्तावेज बरामद हुए। दोनों को गिरफ्तार कर उनकी निशानदेही पर उनके दो साथियों राहुल सिंह एवं गोलु कुमार को बन्द्रा टॉकीज के पास से गिरफ्तार किया गया। प्रवीन ने बताया कि घटना में संलिप्त अन्य अभियुक्तों के विरुद्ध छापेमारी जारी है। जल्द ही उनको गिरफ्तार कर लिया जाएगा। पत्रकार वार्ता में चास थाना प्रभारी खुर्शीद आलम समेत अन्य पुलिस पदाधिकारी मौजूद थे।

लोहरदगा में विधिक जागरुकता के लिए चलंत वाहन रवाना

LOHARDAGA : राष्ट्रीय कानून सहायता मिशन के तहत व्यवहार न्यायालय, लोहरदगा परिसर से शनिवार को प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह जिला विधिक सेवा प्राधिकार अध्यक्ष राजेंद्र बहादुर पाल ने चलंत लोक अदालत सह विधिक जागरुकता वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव राजेश कुमार ने कहा कि चलंत वाहन के माध्यम से जिले के सुदूरवर्ती क्षेत्र के गांवों व कस्बों में पहुंच कर कानूनी जागरुकता कार्यक्रम चलाने और विभिन्न मामलों के निष्पादन की दिशा में कार्य किया जाएगा। साथ ही लोगों से उनके समस्याओं से संबंधित आवेदन ली जाएगी। उन्होंने कहा कि 9 मार्च को राष्ट्रीय लोक अदालत का भी आयोजन होना है, जिसके प्रचार-प्रसार में भी यह सहायक सिद्ध होगी। डालसा सचिव ने कहा कि उक्त चलंत लोक अदालत वाहन 2 मार्च से 30 मार्च तक जिले के सभी प्रखंडों के विभिन्न गांवों में जाएगी। उन्होंने बताया कि वाहन में पैनल अधिवक्ता और पारा लीगल वोलेंटियर्स मौजूद रहेंगे, जो जिले के विभिन्न गांव में पहुंचकर लोगों को कानून के बारे में जानकारी देंगे। साथ ही लोगों के बीच जागरुकता से संबंधित पम्फलेट का भी वितरण किया जाएगा। चलंत वाहन के माध्यम से सुदूरवर्ती क्षेत्र के लोगों से जुड़ाव बढ़ेगा। इस क्रम में शनिवार को कुडू प्रखंड अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में वाहन के माध्यम से लोगों को जागरूक किया गया। साथ ही लोगों के बीच जागरुकता से संबंधित पम्फलेट का वितरण किया गया।

इस दौरान सभी न्यायिक पदाधिकारी, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार, एलएडीसीएस अधिवक्ता, पैनल अधिवक्ता, कर्मी, पारा लीगल वॉलिंटियर उपस्थित रहे। वाहन में एलएडीसीएस अधिवक्ता नारायण साहू, मध्यस्थ वीके प्रसाद, पीएलवी हफीजुल अंसारी व जीतनारायण साही उपस्थित रहे।

कोडरमा के चार इंस्पेक्टर व छह थाना प्रभारियों का हुआ तबादला

KODERMA : पुलिस अधीक्षक अनुदीप सिंह ने निर्देश जारी कर पुलिस केंद्र में पदस्थापित दो पुलिस निरीक्षक, छह एसआई समेत 10 पुलिस पदाधिकारियों का स्थानांतरण किया है. स्थानांतरित पुलिस पदाधिकारियों में पुलिस केंद्र में पदस्थापित पुलिस निरीक्षक विनोद कुमार को डोमचांच अंचल पुलिस निरीक्षक, सुबोध लकड़ा को पुलिस निरीक्षक माइका अंचल, बासुदेव साह को अभियोजन कोषांग प्रभारी सह कोर्ट पदाधिकारी, कमलेश कुमार को यातायात सह नियंत्रण कक्ष प्रभारी के रूप में पदस्थापित किया है। वहीं पुलिस केंद्र में पदस्थापित पुलिस अवर निरीक्षक अरविंद कुमार को थाना प्रभारी चंदवारा, विकास कुमार पासवान को थाना प्रभारी जयनगर, प्रेम कुमार को थाना प्रभारी डोमचांच, नितेश कुमार को थाना प्रभारी नवलशाही, प्रवीण कुमार को ओपी प्रभारी तिलैया डैम और नफीस अहमद को थाना प्रभारी ढाब के रूप में पदस्थापित किया है। एसपी ने सभी पुलिस पदाधिकारियों को अविलंब अपने नव पदस्थापन स्थल पर योगदान करने का निर्देश दिया है। बताते चलें कि लोकसभा चुनाव को लेकर जिले में वर्षों से पदस्थापित पुलिस पदाधिकारियों के दूसरे जिलों में ट्रांसफर हो जाने के बाद दूसरे जिलों से स्थानांतरित होकर कोडरमा आये पुलिस पदाधिकारियों को एसपी द्वारा विभिन्न थानों में नयी जिम्मेवारी दी गयी है।

गिरिडीह में अवैध लॉटरी के तीन धंधेबाज को दबोचा गया

PHOTON NEWS GIRIDIH : जिले के बगोदर थाना इलाके में शनिवार को पुलिस ने बगोदर बस स्टैंड पर अवैध लॉटरी टिकट बेचते तीन आरोपितों को गिरफ्तार कर उनके पास से एक बाइक, 5 हजार रुपये नकदी और 1200 लॉटरी टिकट बरामद किया है। गिरिडीह के एसपी दीपक कुमार शर्मा ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि कुछ युवक बगोदर में अवैध लॉटरी का कारोबार कर रहे हैं। इसके बाद एसडीपीओ धनंजय कुमार राम के नेतृत्व में टीम गठित की गई। टीम ने बस स्टैंड में छापेमारी कर परिसर से तीनों युवकों को बाइक के साथ गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार युवकों में धनबाद जिले के गोविदपुर निवासी मो. गुरफान व पंकज रवानी तथा गोविंदपुर थाना क्षेत्र के ही विलेज रोड निवासी अप्पू सोनार शामिल हैं। एसपी ने बताया कि ये युवक भोले-भाले ग्रामीणों को लालच देकर लॉटरी टिकट बेचने का धंधा करते थे। छापेमारी टीम में एसडीपीओ धनंजय कुमार राम के अलावा बगोदर थाना प्रभारी सुखसागर सिंह चौधरी, एएसआई संजय कुमार समेत अन्य जवान शामिल थे।

नौकरी नहीं मिलने से परेशान युवक ने फांसी लगाकर की किया सुसाइड

नेवी में हुआ था सेलेक्सन, नियुक्ति प्रक्रिया हो गई थी रद

PHOTON NEWS CHATRA : नौकरी नहीं मिलने से परेशान झारखंड के एक युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। मामला चतरा जिले के सदर थाना क्षेत्र का है। सदर थाना क्षेत्र के सीमा पंचायत के हफुआ गांव का युवक रामाधार कुमार सिंह नौकरी नहीं मिलने से परेशान था।

पोस्टमार्टम के बाद चतरा पुलिस ने परिजनों को सौंप दिया शव रामाधार कुमार सिंह के पिता का नाम यमुना सिंह है। घटना शुक्रवार (1 मार्च 2024) देर शाम की है। परिजनों ने उसके कमरे में फंदे से लटकता पाया, तो इसकी सूचना आसपास के लोगों को दी। सूचना पाकर सदर पुलिस पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। पोस्टमार्टम के बाद शव को परिजनों को सौंप दिया गया। नेवी में हुआ था चतरा

मृतक की फाइल फोटो।

के रामाधार कुमार सिंह का सेलेक्शन गांव के लोगों ने कहा कि रामाधार कुमार सिंह नेवी में सेलेक्ट हो गया था। लेकिन, तभी अचानक अग्निपथ योजना आने के बाद उस नियुक्ति प्रक्रिया को रद्द कर दिया गया। इसके बाद रामाधार ने झारखंड स्टाफ सेलेक्शन कमीशन (जेएसएससी) की ओर से आयोजित कॉमन ग्रेजुएट लेवल परीक्षा दी। परीक्षा का पेपर लीक हो गया और इस परीक्षा को भी रद्द कर दिया गया। जेएसएससी सीजीएल पेपर लीक के बाद से परेशान था रामाधार इन दो घटनाओं से रामाधार की नौकरी की आस टूटने लगी। इसके बाद से वह लगातार परेशान रह रहा था। उसके साथ रहने वाले लोग बताते हैं कि ऐसा लगता है कि वह डिप्रेशन का शिकार हो गया था और हताशा में उसने यह कदम उठाया होगा। रामाधार के पिता यमुना सिंह होमगार्ड के जवान हैं। दोस्तों ने बताया- तेज-तर्रार विद्यार्थी था रामाधार कुमार सिंह रामाधार के दोस्तों ने बताया कि वह तेज-तर्रार विद्यार्थी था। लेकिन, पिछले कुछ दिनों से लगातार तनाव में रहता था। उसके आत्महत्या करने के बाद से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। मालूम हो कि इन दिनों जिले में आत्महत्या की घटना बढ़ गई है। हर दूसरे या तीसरे दिन आत्महत्या की खबर सामने आ रही है।

ब्लू स्टोन के खदानों पर एक बार फिर चला प्रशासन का डंडा

PHOTON NEWS KODERMA : कोडरमा वन्य प्राणी प्रक्षेत्र अंतर्गत लोकाई इंदरवा में वर्षों से अवैध रूप से संचालित ब्लू स्टोन की खदानों पर एक बार फिर प्रशासन का बुलडोजर चला. डीएमओ दारोगा राय के नेतृत्व में वन विभाग और पुलिस द्वारा संयुक्त अभियान चलाया गया और अवैध खदानों को जेसीबी से भरा गया। जानकारी के मुताबिक, टीम में शामिल पदाधिकारी और पुलिस के जवान सोमवार को दिन के करीब 11 बजे वन प्रक्षेत्र में प्रवेश किया और जेसीबी से घंटों ब्लू स्टोन की खदानों के मुहाने तक भरा गया। इसके अलावा अवैध उत्खनन के लिए बनाये गये अस्थाई संरचनाओं को भी ध्वस्त किया गया। हालांकि पूरी कार्रवाई के दौरान स्थानीय महिलाओं ने रोजी रोटी का हवाला देते हुए कार्रवाई का विरोध करने का प्रयास किया, परंतु प्रशासन के आगे उनकी एक नहीं चली. रेंजर रामबाबू कुमार ने बताया कि पूरी कार्रवाई मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में टास्क फोर्स द्वारा की गयी। मामले को लेकर प्राथमिकी दर्ज करने की कार्रवाई की जा रही है. मौके पर रेंजर श्री कुमार, सुरेश चौधरी, थाना प्रभारी सुजीत कुमार, वनरक्षी सिकंदर यादव , दुर्गा प्रसाद महतो, छत्रपति शिवाजी, उस्मान अंसारी, मुकेश कुमार, कुंदन कुमार, गोपाल यादव आदि के अलावा काफी संख्या में

खूंटी और तोरपा के बीच 28 किमी में बनाये गये हैं 28 ठोकर

लोगों की हंसती-खेलती जिंदगी पर मौत का ब्रेक लगा रहे हैं सडकों पर बेतरतीब बने स्पीड ब्रेकर

PHOTON NEWS KHUNTI : दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सड़कों पर गति अवरोधकों जिन्हें आम तौर पर ठोकर कहा जाता है का निर्माण कराया जाता है, लेकिन ये गति अवरोधक ही दुर्घटनाओं का सबब बन जाए, तो इसे क्या कहा जाए। सड़कों पर बेतरतीब ढंग से बनाये गये स्पीड ब्रेकर लोगों की हंसती खेलती जिंदगी में मौत का ब्रेक लग रहे हैं। खूंटी जिले में ऐसी कई सड़कें हैं, जहां भारी संख्या में बेतरतीब ढंग से ठोकरों का निर्माण करा दिया गया है, जो आये दिन दुर्घटनाओं का कारण बनते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए हम खूंटी-तोरपा रोड को ही लें। खूंटी और तोरपा के बीच की दूरी 28 किलोमीटर है और इतनी दूरी में 28 सें अधिक ठोकर बना दिये गये हैं। इसके कारण आये दिन

लोग इसका शिकार होकर मौत के मुंह में समा रहे हैं। कुछ दिन पहले ही तोरपा के दो शिक्षक निर्णय सिंधु बेंहरा और मुस्कु बड़ाईक इन बेतरतीब स्पीड के कारण अपनी जान गंवा चुके हैं। तोरपा और खूंटी के बीच 28 किलोमीटर में 28 से अधिक अधिक ठोकर बनाये जाने का औचित्य लोगों की समझ से परे है। तोरपा से खूंटी के बीच ठोकरों की गणना करें तो कुजंला गांव के पास दो और मुंडा कुंजला गांव के पास दो ठोकर बनाये गये हैं। इसी प्रकार रिलायंस पेट्रोल पंप के पास दो, बनई नदी के दोनों छोर पर दो, बिचना गांव के पास दो, अंगराबारी में तीन, डोडमा में तीन, चुरगी पेट्रोल पंप के पास एक, दियांकेल गांव के पास एक, तोरपा रेफरल अस्पताल के पास एक, देवी मंडप के पास एक, नगर भवन के पास एक, स्टेट बैंक के पास एक, पोस्ट ऑफिस के पास एक, तोरपा थाना के पास एक, प्रखंड कार्यालय के पास एक, कर्रा रोड के पास दो और तोरपा पेट्रोल पंप के पास दो ठोकरों का निर्माण कराया गया है।

मानकों का पालन नहीं किया गया : संतोष

सड़कों पर बने गति अवरोधकों के कारण हो रही सड़क दुर्घटनाओं के संबंध में भाजपा प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य संतोष जयसवाल कहते हैं कि ठोकरों के निर्माण में मानकों का पालन नहीं किया गया। इसके कारण दुर्घटनाएं हो रही हैं। तोरपा क व्यवसायी रोशन जयसवाल कहते हैं कि जहां स्पीड ब्रेकर बनाये जाते हैं, वहां रंबल स्ट्रीप सहित कई तरह के संकेत दिये जाने का प्रावधान है, पर इस ओर प्रशासन का ध्यान नहीं है। रामाशीष महतो कहते हैं कि मानक के अनुरूप गति अवरोधकों का निर्माण हो, तो काफी हद तक दुर्घटनाओं पर रोक सकती है। भारतीय सड़क कांग्रेस(आइआरसी) के अनुसार, आदर्श स्पीड ब्रेकर की ऊंचाई दस सेंटीमीटर, पैरा बॉलिक लंबाई 3 I7 मीटर होनी चाहिए। चालकों को सचेत करने के लिए स्पीड ब्रेकर आने से 40 मीटर पहले चेतावनी बोर्ड लगा होना चाहिए, ताकि गति नियंत्रित हो सके। स्पीड ब्रेकर पर सफेद और काले पेंट से पट्टियां बनाई जानी चाहिए, ताकि रात को भी चालकों को ठोकर आसानी से दिख जाए। इस संबंध में राय जानने के लिए सड़क सुरक्षा पदाधिकारी के माबाइल से संपर्क

जमीन को लेकर खूनी संघर्ष, दोनों पक्षों में चली तलवार, हवाई फायरिंग से दहशत

PHOTON NEWS RAMGARH : रामगढ़ शहर का बंगाली टोला जमीन के विवाद में हुए खूनी संघर्ष के बाद दहशत के माहौल में जी रहा है। यहां दो पक्षों में हुए खूनी संघर्ष ने यह बता दिया कि तलवार और पिस्तौल से कभी भी जानलेवा हमला हो सकता है। बंगाली टोला के खाता नंबर 232 प्लॉट नंबर 3341 और 3344 पर एक तरफ खतियानी रैयत विनोद सिंह और उनके परिवार वालों ने अपना दावा पेश किया, तो दूसरी तरफ देहूति ठाकुर पति स्वर्गीय पशुपति ठाकुर के पावर ऑफ अटॉर्नी पर चंद्रमा यादव और कौशल किशोर शर्मा ने अपना दावा ठोक दिया। इस जमीन पर एक मार्च को जब चंद्रमा यादव और कौशल किशोर शर्मा ने अपने सहयोगियों के साथ जेसीबी चलाया तो विनोद सिंह और उनके परिवार वालों ने उन्हें रोकने की कोशिश की। लेकिन उन दोनों पक्षों में ऐसा खूनी संघर्ष हुआ कि कई लोग लहूलुहान हो गए। इस मामले में दोनों पक्षों की ओर से रामगढ़ थाने में प्राथमिक के दर्ज की गई है। शनिवार को थाना प्रभारी अजय कुमार साहू ने बताया कि पहले प्राथमिकी 52/24 चंद्रमा यादव और कौशल किशोर शर्मा के बयान पर दर्ज की गई है। उन्होंने कहा है कि पावर ऑफ अटॉर्नी के आधार पर उन्होंने अमीन से नापी कराई और जमीन पर जेसीबी चला रहे थे। इसी दौरान विनोद सिंह, अर्जुन सिंह, भोलू सिंह, रविंद्र सिंह, रामनाथ उर्फ छोटकू, लॉरेन सिंह,सागर विश्वकर्मा, दीपक वर्मा, पप्पू सिंह ने उन पर जानलेवा हमला किया। दूसरी प्राथमिकी

53/24 लोहार टोला काली मंदिर निवासी नरेंद्र नाथ सिंह ने दर्ज कराई है। उन्होंने कहा है कि उनकी जमीन पर पुस्तैनी दखल कब्जा है। जिस पर सुनील ठाकुर पिता स्वर्गीय पशुपति ठाकुर, विशाल शर्मा, विकास शर्मा, राहुल शर्मा, विनीत शर्मा चारों के पिता कौशल किशोर शर्मा, विजय यादव, अजय यादव, प्रकाश यादव शाहिद 3035 लोग उनकी जमीन पर जेसीबी चला रहे थे। जब उन्हें सूचना मिली तो वह अपने भाई विनोद सिंह भतिजा अर्जुन सिंह के साथ स्कूटी से वहां पहुंचे। जब उन लोगों ने उन्हें काम करने से रोका तो उन पर तलवार से हमला हुआ और फिर पिस्तौल निकाल कर हवाई फायरिंग की गई। उन्हें वहां से भागने को कहा गया इसके बाद। इस दौरान उन लोगों को लहूलुहान कर दिया गया। उनके भाई विनोद सिंह पर ऐसा हमला किया है कि चिकित्सकों ने उन्हें इलाज के लिए रांची रेफर कर दिया।

सामाजिक समरसता और नारी भावना के उच्चतम सम्मान का अद्भुत प्रसंग

भक्त शिरोमणि शबरी वनवासी भील समाज से थीं। फिर भी मातंग ऋषि के गुरु आश्रम की उत्तराधिकारी बनी। रामजी ने उनके जूठे बेर खाये। यह कथा भारतीय समाज की उस आदर्श परंपरा का उदाहरण है कि व्यक्ति को पद, स्थान और सम्मान उसके गुण और योग्यता से मिलता है जन्म या जाति से नहीं। भक्त शिरोमणि शबरी का जन्म फाल्गुन कृष्ण पक्ष सप्तमी को हुआ था। इस वर्ष यह तिथि दो मार्च को है। उनका जन्म त्रेतायुग अर्थात रामायण काल में हुआ था। इस काल खंड की अवधि पर भारतीय वाड्मय के आकलन और पश्चिम जगत की गणना में जमीन आसमान का अंतर है, इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि माता शबरी का जन्म किस सन् संवत में हुआ था। यह कथा बाल्मीकि रामायण और तुलसीकृत रामचरित मानस के अरण्य काण्ड में है। इसके अतिरिक्त पद्म पुराण सहित कुछ अन्य ग्रंथों में है। इसलिये माता शबरी की कथा के यथार्थ पर संदेह करने का प्रश्न नहीं उठता। यह कथानक केवल किसी घटना या रामायण काल के पात्र का विवरण भर नहीं है। यह प्रसंग सफलता प्राप्त करने के लिये समर्पण और एकाग्रता का संदेश देता है। देवि शबरी का समर्पण गुरु सेवा में भी है और राम भक्ति में भी है। इसके साथ शबरी कथा में भारतीय समाज जीवन की व्यवस्था का यह दर्शन भी मिलता है कि भारतीय समाज जीवन में किसी को सम्मान या स्थान जन्म और जाति के आधार पर नहीं मिलता अपितु उसके लिये गुण, कर्म और योग्यता आवश्यक है। योग्यता के आधार पर ही देवि शबरी ऋषि आश्रम की प्रमुख बनीं। उनका जन्म वनवासी भील समाज में हुआ था। जीवन की कुछ घटनाओं से उनके मन में संसार के प्रति विरक्ति का भाव जागा और योग्य गुरु की खोज में निकल पड़ीं। गुरु की खोज करते-करते वे मातंग ऋषि के आश्रम पहुँची। उन्हें आश्रम के भीतर जाने में संकोच हुआ तो उन्होंने आश्रम से बाहर रहकर ही गुरु सेवा का संकल्प लिया। वे उस मार्ग की सफाई करने लगीं जिस मार्ग से ऋषि प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में स्नान के लिये जाते थे। इसके साथ वे जंगल से लकड़ियाँ लाकर आश्रम में पहुंचाने लगीं। मातंग ऋषि को यह जानने की जिज्ञासा हुई कि कौन से जो यह सेवा कर रहा है। शिष्यों ने खोजा और देवि शबरी को ऋषि के सामने लाये। प्रसन्न होकर मातंग ऋषि ने देवी शबरी को अपने आश्रम में स्थान दिया। देवी शबरी ने अपना जीवन गुरु सेवा में अर्पित कर दिया। ऋषि सेवा करतीं और उनके प्रवचन सुनकर प्रभु भक्ति में लीन हो जातीं। उनकी लगन और समर्पित सेवा ने उन्हें पूरे आश्रम में विशिष्ठ बना दिया। महर्षि मातंग इतने प्रभावित हुये कि वे जब अपना शरीर त्यागने लगे तो उन्होंने देवि शबरी को ही अपने आश्रम का उत्तराधिकारी बनाया। अर्थात वनवासी समाज में जन्मी स्त्री महर्षि मातंग आश्रम की उत्तराधिकारी बनीं। देवी शबरी ने ऋषि आश्रम में अपना महत्व अपनी सेवा और समर्पण से बनाया था न कि अपने जन्म जाति के आधार पर। यह कथा भारतीय समाज के बारे में किये जाने वाले उन सभी दुष्प्रचारों का खंडन करती है जिनमें कहा जाता है कि भारत में जन्म और जाति के आधार पर भेदभाव होता था और स्त्री को पढ़ने लिखने का अधिकार नहीं था। हो सकता है कुछ अपवाद स्वरूप कुछ घटनाएँ हुईं हों, पर पूरा समाज ऐसा नहीं था। जैसे किसी गाँव में दो-चार चोर रहते हों किंतु उन दो-चार की कहानी को प्रचारित कर पूरे गाँव को बदनाम किया जाए। विदेशी विचारकों ने अपनी सत्ता को मजबूत बनाने के लिये ऐसी कूटरचित घटनाओं का उल्लेख किया और समाज को बांटने का षड्यंत्र किया। वह जन मानस में कुछ इस प्रकार बैठा कि बड़ी संख्या में भारतीय जन जन्म और जाति आधार को ही मुख्य मानने लगे। ऐसी तमाम साहित्य रचना मध्यकाल में ही हुई। यदि भारत में वनवासी समाज को हेय समझा जाता या स्त्री को शिक्षा से वंचित रखा जाता तो न देवी शबरी को ऋषि आश्रम में रहने का स्थान मिलता और न ऋषि आश्रम की उत्तराधिकारी बनतीं। वेदों की ऋषिकाएँ, ऋषि आश्रम की गुरु माताएँ ही नहीं, भारत में शिक्षा प्रमुख कोई देवता नहीं देवी सरस्वती हैं। मातंग ऋषि त्रिकाल दर्शी थे। वे जानते थे कि अयोध्या में भगवान नारायण का अवतार होने वाला है और वे इसी मार्ग से निकलेंगे। महर्षि मातंग ने यह रहस्य भी केवल देवी शबरी को ही बताया था और देवी शबरी भक्ति में डूबकर रामजी की बाट जोहने लगीं। वर्षों तक राह देखी। तब उनकी साध पूरी हुई और जब रामजी आये तो वे विहल हो उठीं। इतनी विहल कि अतिथि सम्मान की सभी औपचारिकता ही भूल गईं। दौड़ कर ताजा बेर तोड़ कर लाईं। कोई खट्टा बेर प्रभु के मुँह का स्वाद न बिगाड़ दे, यह सोचकर एक एक बेर चखकर खिलाने लगीं। रामजी भी भक्ति विभोर होकर जूठे बेर भी स्वाद से खाने लगे। रामजी देवी शबरी के आश्रम में जाने से पहले महर्षि अत्रि के आश्रम भी गये थे, जहाँ देवी अनुसुइया ने माता सीता को उपदेश किया था। माता अनुसूइया उपदेश करती हैं और देवी शबरी ऋषि आश्रम की प्रमुख हैं। रामायण काल के इन दोनों प्रसंगों में यह स्पष्ट संदेश है कि भारतीय समाज में नारी आश्रम प्रमुख भी रही हैं और उपदेशकर्ता भी हैं। रामायण काल में भील वनवासी समाज में जन्मी देवी शबरी को ही आश्रम और भक्ति में उच्च स्थान नहीं मिला।

Social Media Corner

सच के हक में...

डबल इंजन की ताकत मिलने से बिहार उत्साह और आत्मविश्वास से भरा हुआ है। बेगूसराय में विभिन्न विकास परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित किया। ज्ञान की धरती बिहार आना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। औरंगाबाद में भी विभिन्न विकास परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित किया।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'एक्स' पर पोस्ट)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, प्रखर वक्ता व लेखिका, नारी शक्ति की प्रतीक तथा भारत कोकिला के नाम से प्रसिद्ध सरोजिनी नायडू जी की पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि।

(सीएम चंपाई सोरेन का 'एक्स' पर पोस्ट)

भ्रष्टाचार,कुशासन, अत्याचार और वंशवाद के अंत का संकल्प लेकर सेवा,सुशासन और विकास को अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले भारत के कुशल नेतृत्वकर्ता तथा यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी का अपार स्नेह एवं मित्र रूपी संबोधन पाकर मानवसेवा की मेरी दृढ़ इच्छा को और अधिक बल मिला है।

नए युग का ऐतिहासिक शुभारंभ

ANALYSIS

रामलाल

लक्षद्वीप और अंडमान के एकांत द्वीपों से लद्दाख के सुदूर पर्वतों तक, मिजोरम एवं नागभूमि के हरित वनों से लेकर मरुभूमि की रेत तक, भारत के 28 राज्य एवं आठ केंद्रशासित प्रदेश इस महा-आयोजन के साक्षी बने और भारत की सभी भाषाओं ने कहा की 'राम सभी के हैं।' सितम्बर, 2023 से ही निमंत्रितों की सूची बनाने से लेकर उनको बुलाने की व्यवस्था का चिंतन प्रारम्भ हो गया था सभी को निमंत्रण देने का क्रम डिजिटल पत्राचार से प्रारम्भ हुआ, जिसके बाद सभी निमंत्रितों को राष्ट्र के सुदूर क्षेत्रों में जाकर भी व्यक्तिगत रूप से निमंत्रण दिए गए। अंततः सभी निमंत्रितों को एक व्यक्तिगत कोड दिया गया। कार्यक्रम का स्वरूप पूर्णतयः धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रखा गया। इस हेतु सभी राष्ट्रीय और प्रांतीय दलों के राष्ट्रीय अध्यक्षों और गृह प्रदेश के मुख्यमंत्री के अतिरिक्त किसी केंद्रीय मंत्री अथवा मुख्य मंत्री को निमंत्रण नहीं दिया गया। उस दिन आमंत्रित विशिष्ट अतिथियों में यह भी एक चर्चा का विषय था।

22 जनवरी 2024 को अयोध्या की प्राचीन नगरी में एकता, श्रद्धा, भक्ति और समरसता का अविस्मरणीय संगम देखा गया। जहां देश के प्रत्येक कोने से, भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमियों से, सहस्त्रों राम-भक्त भव्य राम मंदिर में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के साक्षी बनने के लिए एकत्र हुए। श्री रामलला के आगमन के नाद से भारत वर्ष में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में एक नवोत्साह की लहर का संचार हुआ। भारत के इतिहास में इस तरह का भव्य आयोजन कदाचित ही हुआ होगा, जिसमें सूक्ष्म स्तरीय योजना एवं वृहद स्तरीय समायोजन का अनोखा मेल देखने को मिला। अयोध्या में भारत और सनातन सभ्यता की प्रत्येक ध्वनि, प्रत्येक भावना और प्रत्येक परम्परा को प्रभु श्रीराम के छत्र में प्रतिछाया मिली। लक्षद्वीप और अंडमान के एकांत द्वीपों से लद्दाख के सुदूर पर्वतों तक, मिजोरम एवं नागभूमि के हरित वनों से लेकर मरुभूमि की रेत तक, भारत के 28 राज्य एवं आठ केंद्रशासित प्रदेश इस महा-आयोजन के साक्षी बने और भारत की सभी भाषाओं ने कहा की 'राम सभी के हैं।' सितम्बर, 2023 से ही निमंत्रितों की सूची बनाने से लेकर उनको बुलाने की व्यवस्था का चिंतन प्रारम्भ हो गया था सभी को निमंत्रण देने का क्रम डिजिटल पत्राचार से प्रारम्भ हुआ, जिसके बाद सभी निमंत्रितों को राष्ट्र के सुदूर क्षेत्रों में जाकर भी व्यक्तिगत रूप से निमंत्रण दिए गए। अंततः सभी निमंत्रितों को एक व्यक्तिगत कोड दिया गया। कार्यक्रम का स्वरूप पूर्णतयः धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रखा गया। इस हेतु सभी राष्ट्रीय और प्रांतीय दलों के राष्ट्रीय अध्यक्षों और गृह प्रदेश के मुख्यमंत्री के अतिरिक्त किसी केंद्रीय मंत्री अथवा मुख्य मंत्री को निमंत्रण नहीं दिया गया। उस दिन आमंत्रित विशिष्ट अतिथियों में यह भी एक चर्चा का विषय था। आमंत्रित महानुभावों में 10 रुपये से लेकर करोड़ों तक का दान करने वाले सभी दान-दाता वर्गों का प्रतिनिधित्व था, राष्ट्र और सनातन सभ्यता के विभिन्न उद्गम स्थलों से निकलने वाली 131 प्रमुख और 36 जनजातीय; नवीन एवं प्राचीन धार्मिक परम्पराओं का प्रतिनिधित्व था। इनमें सभी अखाड़े, कबीर पंथी, रैदासी, निरंकरी, नामधारी, निहंग, आर्य समाज, सिंधी, निम्बार्क, पारसी धर्मगुरु, बौद्ध, लिंगायत, रामकृष्ण मिशन, सत्राधिकर, जैन, बंजारा समाज, मैतेई , चकमा, गोरखा, खासी, रामनामी आदि प्रमुख परम्पराएँ सम्मिलित थी। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन-जाति, घुमंतू समाज (ठङ्कें ळ्थ्रि२) के प्रमुख जनों का भी प्रतिनिधित्व था। विभिन्न मत-पंथ जैसे इस्लाम, ईसाई, पारसी का भी यहां प्रतिनिधित्व था। 1949 में रामलला के पक्ष में निर्णय लेने वाले जिला न्यायाधीश श्री नय्यर के परिवार के साथ साथ अब्दुल बरकत, जिन्होंने गवाही दी थी, उनके परिवार को भी आमंत्रित किया गया था। रामलला के विरुद्ध मुकदमा लड़ने वाले परिवार के साथ तत्कालीन अधिकारियों के परिवारों को भी निमंत्रण दिया गया था। रामजन्मभूमि आंदोलन का नेतृत्व करने वाले और इस आंदोलन में बलिदान हुए भक्तों के परिवार के सदस्य, रामजन्मभूमि की न्यायिक प्रक्रिया में सहभागी अधिवक्ता-गण भी इस आयोजन में सम्मिलित हुए। भारत की राष्ट्रपति औरउपराष्ट्रपति के साथ पूर्व राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री भी इस कार्यक्रम में आमंत्रित थे। भारत की सुरक्षा में तत्पर तीनों सेनाओं के सेवानिवृत्त सेनाध्यक्ष और परमवीर चक्र विजेता भी यहां थे और भारत को चंद्रमा तक ले जाने वाले इसरो के वैज्ञानिकों से लेकर भारतीय कोविड-वैक्सीन बनाने वाले वैज्ञानिक भी यहां थे। उच्चतम न्यायालय के तीन पूर्व मुख्य न्यायाधीश सहित अनेक पूर्व न्यायाधीश, सेवानिवृत्त प्रशासनिक पुलिस एवं अन्य अधिकारी, विभिन्न देशों में रहे भारत के राजदूतों से लेकर बुद्धिजीवी, शिक्षाविद, नोबेल पुरस्कार, भारत रत्न, पद्म विभूषण, पद्म भूषण, पद्म श्री और मैग्सेसे पुरस्कार के साथ साथ साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित महानुभाव भी सम्मिलित हुए। प्रख्यात अधिवक्ता, चिकित्सक, सीए, समाचार पत्रों और टीवी चैनल्स के संचालक/सम्पादक, प्रख्यात सोशल-मीडिया इंफ्ल्युएंसर्स आदि के साथ साथ देश के बड़े औद्योगिक परिवार भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। भारत के प्रमुख राज परिवारों के सदस्यों से लेकर अनेक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ी, चित्रकारी, शिल्पकारी, गायन, लेखन-साहित्य, वादन, नृत्यकला आदि ललित कलाओं के कलाकार, हिंदी, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती, बंगाली, ओडिया, असमिया, भोजपुरी, पंजाबी एवं हरियाणवी फिल्म उद्योग की अनेक हस्तियां भी इस आयोजन में सम्मिलित हुईं। 53 देशों से आये 150 प्रतिनिधि भी इस समारोह में सम्मिलित हुए। मुख्य पूजा में 15 यजमान बैठे थे, जिनमे सभी जातियों-वर्गों (सिख, जैन, नवबौद्ध, निषाद समाज, वाल्मीकि समाज, जनजाति समाज, घुमंतू जातियां आदि) और भारत की सभी दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, उत्तर-पूर्व) से आए व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व था। इन सभी की मंच पर ही बैठने की व्यवस्था थी। देश का पोषण एवं विकास करने वाले किसान और मजदूर बंधुओं के साथ सहकारिता और ग्राहक संगठनों के प्रतिनिधि भी यहां उपस्थित थे। एल ऐंड टी व टाटा समूह के अधिकारी, अभियंता और श्रमिक भी यहां उपस्थित थे। जिन श्रमिकों ने प्रभु श्रीराम के मंदिर के निर्माण को आकार दिया, प्रधानमंत्री जी ने स्वयं उन पर पुष्प-वर्षा करके उनका अभिनंदन किया। संघ और विश्व हिंदू परिषद के अनेक प्रबंधक कार्यकताओं से लेकर संघ के पूजनीय सरसंघचालक माननीय श्री मोहन भागवत और भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री रामलला प्रतिष्ठित हुए हैं तो सभी देवी-देवताओं ने भी उपस्थित होकर अपना आशीर्वाद अवश्य ही दिया होगा। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के आग्रह पर जहां विश्व हिंदू परिषद के सैकड़ों कार्यकर्ता दिन-रात लगे थे, वहीं ट्रस्ट के ही आग्रह पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व अन्य कई स्थानीय स्वयंसेवी संगठनों के अनेक कार्यकर्ता इस आयोजन की व्यवस्था में थे। उनके प्रबंधन के अनुभव का लाभ सूक्ष्म दृष्टि से व्यवस्था के चिंतन में हुआ। जिसका अनुभव वहाँ आए प्रत्येक रामभक्त को हो रहा था। चाहे स्वागत हो, चाहे बैटरी चालित वाहन, चाहे व्हील चेयर की व्यवस्था हो, चाहे पदवेश उतारने की व्यवस्था। सभी के जूते स्वयमसेवी संस्था के प्रमुख लोग अपने हाथों से उतार कर रख रहे थे और लौटने पर पहना भी रहे थे। लघुशंकालयों के बाहर भी चप्पलों की व्यवस्था थी। सभी कुछ सूक्ष्म चिंतन करके तैयार किया गया था। अयोध्या के नागरिक और प्रशासन भी ट्रस्ट के साथ समन्वय करते हुए अयोध्या को संवारने में लग गए। अयोध्यावासी सामान्य-जन के लिए यह एक कौतूहल का विषय था कि कैसे 4 माह में अयोध्या नगरी का स्वरूप सहसा परिवर्तित हो गया। भक्त-जन, पूज्य साधु संत और अनेक महानुभावों की सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण विषय था, जो कि स्थानीय प्रशासन, पुलिस और अन्य सुरक्षा दलों के बिना सम्भव नहीं था। उत्तर प्रदेश और अयोध्या पुलिस के सहयोग पूर्ण, मित्रवत व्यवहार से सभी प्रभावित हुए। उसी का परिणाम था कि इतना बड़ा कार्य सरलता से निर्विघ्न व यशश्विता के साथ सम्पन्न हुआ। सभी के साथ प्रभु श्री राम का आशीर्वाद तो था ही। तीन दिनों में अयोध्या में बिना किसी राजनैतिक या व्यावसायिक आयोजन के 71 निजी विमान गतिमान हुए। लखनऊ तथा अयोध्या के विमानतल एवं लखनऊ, अयोध्या, काशी, गोरखपुर, गोंडा, सुल्तानपुर, प्रयागराज आदि रेल-स्टेशनों पर केसरिया पटके के साथ स्वागत एवं यातायात की पूर्ण व्यवस्था की गई। विभिन्न उपस्थित लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, सभी के लिए आवास व्यवस्था सावधानीपूर्वक तैयार की गई थी। टेंट सिटी, होटल, आश्रम, धर्मशाला सहित कुछ विद्यालयों तथा 200 स्थानीय परिवारों में रुकने की व्यवस्था की गयी थी। सम्पूर्ण अयोध्या 'राम आएंगे' गीत की ध्वनि से गुंजायमान थी। अयोध्या की गलियों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों काआनंद देर रात्रि तक सभी ने लिया।

लेखक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख हैं।

विपक्ष जनभावना को समझने में विफल

राज्यसभा चुनाव में जमकर हुई क्रॉस वोटिंग के दम पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में दो अतिरिक्त सीट पर विजय हासिल कर ली। नेतृत्व के निदेर्शों की अनदेखी करके क्रॉस वोटिंग करने वाले विधायकों पर हमेशा की तरह 'बिक जाने' या 'डर जाने' के आरोप लगाए जा रहे हैं लेकिन इस बार की क्रॉस वोटिंग सिर्फ इतने तक सीमित दिखाई नहीं देती। भाजपा और मोदी विरोधी विपक्षी दलों के शीर्ष नेतृत्व ने पिछले कुछ समय में जिस तरह से जनभावना के विपरीत फैसले लिए हैं उनसे इन दलों में तेजी से असंतोष बढ़ा है। खासतौर से अयोध्या में श्रीराम लला के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह का विपक्षी दलों ने जिस तरह बहिष्कार किया, वह पार्टी के समर्थकों और तमाम नेताओं को रास नहीं आया। तमाम विपक्षी नेता प्रभु राम, सनातन धर्म और संस्कृति के खिलाफ अनर्गल बयान दे रहे थे लेकिन पार्टी का शीर्ष नेतृत्व चुप्पी साधे हुए था जिससे कई नेताओं ने बगावती तेवर दिखाए तो कुछ असंतोष की आग को मन में दबा कर बैठे रहे। और अब राज्यसभा चुनाव के मौके पर वे खुलकर पार्टी नेतृत्व के खिलाफ खड़े हो गए। राज्यसभा चुनाव में क्रॉस वोटिंग कोई अनोखी बात नहीं है। आज तक राज्यसभा का शायद ही कोई चुनाव हुआ हो जिसमें विधायकों ने अपनी पार्टी के नेतृत्व की अनदेखी करके किसी अन्य दल के उम्मीदवार की मदद न की हो। यह मदद परिस्थितियों के आधार पर तीन प्रकार से की जाती है एक तो विधायक अपना मत सीधे तौर पर विरोधी दल के उम्मीदवार को दे देते हैं, दूसरे वे मतदान में भाग ही नहीं लेते और तीसरे तरीके में वोट तो डालते हैं लेकिन इस तरह कि उनका वोट खारिज हो जाए। तीसरा ज्यादा सुरक्षित तरीका है क्योंकि इसे विधायक की गलती मानकर अनदेखा किया जा सकता है। हाल ही में हुए राज्यसभा के चुनाव में भी माना जा रहा था कि विधायक पार्टी नेतृत्व के फैसले के खिलाफ जाकर क्रॉस वोटिंग करेंगे लेकिन इस इस स्थिति से निपटने के लिए विपक्षी दलों विशेषकर समाजवादी पार्टी ने उत्तर प्रदेश और कांग्रेस ने हिमाचल प्रदेश में कोई खास रणनीति तैयार नहीं की। उत्तर प्रदेश से दस राज्यसभा सदस्यों को चुनकर राज्यसभा जाना था। इसके लिए भाजपा के पास सात तो समाजवादी पार्टी के पास तीन उम्मीदवारों को जिताने के लिए लिए पर्याप्त संख्या बल था। लेकिन भाजपा ने आठवें उम्मीदवार के तौर पर संजय सेठ को चुनाव मैदान में उतार कर यहां का मुकाबला रोचक बना दिया। दरअसल संजय सेठ पुराने समाजवादी नेता रहे हैं। सपा के संस्थापक मुलायम सिंह यादव और बाद में सपा मुखिया अखिलेश यादव से उनके नजदीकी रिश्ते जगजाहिर थे। समाजवादी पार्टी की नीति निर्धारण में भी संजय सेठ का प्रभावशाली दखल रहता था। संजय सेठ ने 2019 में सपा को छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया था। समाजवादी पार्टी के नेताओं के बीच उनकी अच्छी पैठ है। ऐसे में जब भाजपा ने आठवें उम्मीदवार के तौर पर उन्हें चुनाव मैदान में उतारा अखिलेश यादव को तभी ज्यादा सतर्क होकर अपनी रणनीति तैयार करनी चाहिए थी। मतदान से एक दिन पहले सपा मुखिया के रात्रिभोज से नदारद रहकर आठ विधायकों ने अपनी मंशा साफ कर दी थी। इनमें से छह विधायकों ने भाजपा उम्मीदवार के पक्ष में वोट डाला जबकि अमेठी की विधायक महाराजी प्रजापति ने मतदान से दूर रहकर भाजपा उम्मीदवार की मदद की। गलत तरीके से वोट डालने के कारण बरेली के भोजीपुरा से सपा विधायक शहजिल इस्लाम अंसारी का वोट अमान्य कर दिया गया। सबसे ज्यादा हैरान करने वाला चुनाव हिमाचल प्रदेश में देखने को मिला। यहां से एक राज्यसभा सदस्य का चुनाव किया जाना था। यहां 68 में से 40 विधायक कांग्रेस के, 25 भाजपा और तीन निर्दलीय हैं। सामान्य तौर पर राज्यसभा चुनाव में निर्दलीय विधायक राज्य में सत्ताधारी दल के साथ खड़े होते रहे हैं इसके अलावा विपक्षी दलों के विधायक भी उसी के पक्ष में क्रॉस वोटिंग करते हैं। इसलिए ऐसा माना जा रहा था कि यहां का मुकाबला कांग्रेस आसानी से जीत जाएगी। लेकिन भाजपा ने यहां से पूर्व कांग्रेसी हर्ष महाजन को उम्मीदवार बनाकर और कांग्रेस उम्मीदवार अभिषेक मनु सिंघवी की राह मुश्किल कर दी। यूं तो सिंघवी की उम्मीदवारी का ऐलान होते ही उनको बाहरी बताते हुए हिमाचल प्रदेश से विरोध के स्वर उठना शुरू हो गए थे लेकिन उनकी असल मुश्किलें हर्ष महाजन के चुनाव मैदान में उतरने से खड़ी हुईं। दरअसल हर्ष महाजन का कांग्रेस से चार दशक से भी पुराना रिश्ता था। वे पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह के मुख्य रणनीतिकार माने जाते थे। वह विधायक, मंत्री और यूथ कांग्रेस अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पदों पर भी रहे। उन्होंने 2022 में कांग्रेस छोड़कर भाजपा की सदस्यता हासिल कर ली थी। भाजपा की ओर से उनकी उम्मीदवारी की घोषणा होते ही उनके पक्ष में क्रॉस वोटिंग की उम्मीद जताई जा रही थी। लेकिन विधायकों की संख्या में भारी अंतर होने की वजह से उनकी जीत की संभावना कम दिखाई दे रही थी। कांग्रेस नेतृत्व की नाकामी का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू अपने विधायकों के अपहरण का हरियाणा पर आरोप मढ़ रहे थे। किसी राज्य की पुलिस और खुफिया तंत्र के लिए इससे ज्यादा शर्मनाक और क्या हो सकता है। अगर इस घटना का किसी आतंकवादी समूह ने अंजाम दिया होता तो क्या यह घटना इतनी ही सामान्य तौर पर ली जाती। राज्यसभा चुनाव में क्रॉस वोटिंग सिर्फ भाजपा के पक्ष में ही नहीं हुई, भाजपा के खिलाफ भी उसके समर्थक विधायकों ने विरोधी दल के उम्मीदवार को अपना मत दिया।

पाकिस्तान को हैवानों ने बना दिया

पाकिस्तान में कम उम्र के लड़के और लड़िकयां न तो अपने घरों के भीतर महफूज हैं और न ही बाहर। इस मुल्क के प्रतिष्ठित 'जिओ न्यूज' चैनल की वेबसाइट पर उपलब्ध यह रिपोर्ट सभ्य समाज के लिए चिंताजनक है। यह रिपोर्ट बाल संरक्षण के लिए काम करने वाले एक गैर-लाभकारी संगठन "साहिल" ने गुरुवार को जारी की है। इस रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2023 में कम से कम 4,213 बच्चों को दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। इस वर्ष औसतन प्रतिदिन 11 बच्चों को इस पीड़ा का सामना करना पड़ा। इस रिपोर्ट को 'क्रूएल नंबर्स 2023' शीर्षक से पाकिस्तान के राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सहयोग से जारी किया गया है। आयोग ने रिपोर्ट के हवाले से कहा है कि पिछले साल इस्लामाबाद, पाकिस्तान अधिकृत जम्मू और कश्मीर और गिलगित बाल्टिस्तान समेत सभी चार प्रांतों से कुल 4,213 बाल दुर्व्यवहार के मामले सामने आए। रिपोर्ट से साफ है कि इन बच्चों का यौन शोषण ही नहीं किया गया, बल्कि उन्हें अपहरण कर बाल विवाह के दोजख के दावानल में झोंक दिया गया। साल 2023 में इस नरक से 2,251 लड़कियों और 1962 लड़कों को गुजरना पड़ा। इनमें से अधिक संख्या 6-15 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की है। हद तो यह है कि हैवानों ने पांच वर्ष तक के बच्चों की आबरू पर डाका डाला। ऐसा करने में रिश्तेदार और परिवार के सदस्य भी पीछे नहीं रहे। आयोग की चेयरपर्सन राबिया जावेरी आगा का कहना है कि आंकड़े डरावने हैं। कुल 4,213 रिपोर्ट किए गए मामलों में से 75 फीसद पंजाब से, 13 फीसद सिंध से, सात प्रतिशत इस्लामाबाद राजधानी क्षेत्र से, तीन प्रतिशत खैबर पख्तूनख्वा और दो प्रतिशत बलूचिस्तान से हैं। आगा ने कहा, "हमें बाल शोषण के मुद्दे को गंभीरता से लेना होगा। "साहिल" के आंकड़े वास्तव में क्रूर हैं, लेकिन एक वास्तविकता है जिसका हमें सामना करना होगा। इन चिंताजनक आंकड़ों को देखते हुए, यह दुखद है कि पाकिस्तान सरकार के पास अभी भी बाल शोषण पर कोई अधिसूचित राष्ट्रीय कार्ययोजना नहीं है।" "साहिल" की कार्यकारी निदेशक मनिजेह बानो ने कहा कि पाकिस्तान के संविधान में अनुच्छेद 25-ए 5 से 16 साल तक मुफ्त शिक्षा प्रदान करता है। ҈बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए इसे लागू किया जाना चाहिए। जीवन कौशल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए पाठ्यक्रम में सुधार की सख्त जरूरत है।҈ "साहिल" ने यह रिपोर्ट राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समाचार पत्रों की खबरों के आधार पर तैयार की है। यह तो रही बात बच्चों के साथ जुल्म-ओ-सितम की। पाकिस्तान में अल्पसंख्यक भी महफूज नहीं हैं। पिछले साल जस्ट अर्थ न्यूज इस मसले पर एक रिपोर्ट छापी थी। इस रिपोर्ट में पाकिस्तान में हिंदू अल्पसंख्यक समूह के खिलाफ बढ़ते अपराधों का विश्लेषण किया गया। रिपोर्ट में सरकारी रवैये पर चिंता जताते हुए दावा किया गया था कि हिंदू अल्पसंख्यकों को जबरन धर्मांतरण से बचाने के लिए जबरन बातचीत निषेध अधिनियम 2021 का मसौदा कानून पर सुनवाई के बिना ही खारिज कर दिया गया। जस्ट अर्थ न्यूज ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया कि पाकिस्तान में कम उम्र की लड़कियों को अगवा कर उनके साथ दुष्कर्म करने और धर्म परिवर्तन कराने की प्रथा आम हो गई है। मीडिया, नागरिक समाज और मानवाधिकार समूह ऐसे अपराध की उपेक्षा करते हैं क्योंकि ये लड़कियां निम्न आर्थिक और अल्पसंख्यक समुदायों से होती हैं। रिपोर्ट में 2022 में फैसलाबाद में एक 15 वर्षीय ईसाई लड़की के साथ हुई ऐसी घटना का जिक्र कर मीडिया, नागरिक समाज और मानवाधिकार समूह को कठघरे में खड़ा किया गया था।

सिर पर छत का हक

लखनऊ के अकबरनगर की अवैध कॉलोनियों को ढहाए जाने संबंधी इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश के विरुद्ध दायर याचिका की सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट की इस टिप्पणी के गहरे अर्थ हैं कि सिर के ऊपर छत लोगों का मूलभूत अधिकार है। देश की पिछली जनगणना के आंकड़ों के आलोक में इस टिप्पणी का मानवीय महत्व कहीं बेहतर समझा जा सकता है। साल 2011 की जनगणना ने हमें बताया था कि देश में 17.5 लाख से अधिक लोगों के पास छत नहीं है। सर्दी, गरमी और बरसात में वे फुटपाथों पर जीने को मजबूर हैं। पिछले 13 वर्षों में यह आंकड़ा घटा या बढ़ा इसका पुख्ता प्रमाण तो हमें अगली जनगणना से ही मिलेगा। निस्संदेह, सरकारें इस समस्या से गाफिल नहीं हैं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सभी बेघरों को पक्की छत मुहैया कराने का संकल्प इसकी तस्दीक करता है। इस मामले में प्रयास भी हो रहे हैं, मगर विडंबना यह है कि एक तरफ निर्माण की कवायद हो रही है, तो दूसरी ओर जगह-जगह अवैध बस्तियों के ढहाए जाने से कई परिवार बेघर भी हो रहे हैं। ऐसे में, शीर्ष अदालत का यह कहना बिल्कुल वाजिब है कि किफायती दर पर घर मुहैया कराने में सरकारी नीतियों की नाकामी ने अवैध बस्तियों का विस्तार किया है। यह किसी एक प्रदेश या शहर की बात नहीं है, देश के तमाम महानगरों और छोटे-बड़े शहरों के सामने अवैध कॉलोनियों की गंभीर समस्याएं हैं। जाहिर है, ये रातोंरात नहीं उग आईं। स्थानीय रसूखदारों और सरकारी अधिकारियों की सांठगांठ ने इनका विस्तार किया है। फिर इनमें से कई तो दशकों पुरानी हैं। कहने की आवश्यकता नहीं, ऐसी बस्तियों को खाली कराते समय अतिरिक्त संवेदनशीलता बरती जानी चाहिए। विस्थापित होने वाले लोग देश के ही नागरिक हैं और उन्हें विकल्प मुहैया कराने का दायित्व भी तंत्र का ही है।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. R.N.I Number - JHABIL/2022/85899, Editor- Fahim Akhtar. Mob - 9431311669, E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

हुंडई आई20 एन लाइन की लांचिंग की तैयारी

-मार्केट पर कब्जा जमाने आ रही नई कारे

नई दिल्ली ।

हुंडई कंपनी की आई20 एन लाइन एसयूवी इस साल भारत में लॉन्च करने की तैयारी चल रही है। नई हुंडई आई20 एन लाइन का खुलासा हाल ही में ग्लोबल मार्केट में किया गया है और अब उम्मीद है कि कंपनी बहुत जल्द इसे भारत में लॉन्च करेगी।

हुंडई आई20 एन लाइन को पिछले साल सितंबर में लॉन्च किया गया था और तब से ही यह परफॉर्मेंस की चाह रखने वालों को खूब पसंद आ रही है। 2024 आई20 एन लाइन में क्या खास होने वाला है? आइए जानते हैंज रिपोर्ट्स के मुताबिक, 2024 आई20 एन लाइन अपने प्री फेसलिफ्ट वर्जन के मुकाबले अधिक स्पोर्टी डिजाइन और एडवांस फीचर्स के साथ आएगी। अपकमिंग आई20 एन लाइन में नया स्पोर्टी फ्रंट और रियर बंपर मिल सकता है, जिसपर रेड एक्सेंट दिया जाएगा।

इसके अलावा नए डिजाइन के रेडियेटर ग्रिल पर एन लाइन बैजिंग भी देखने को मिलेगी। यह कार नए डिजाइन के 17-इंच डायमंड कट अलॉय व्हील्स के साथ आएगी।

इसके अलावा कार में डुअल क्रोम एग्जॉस्ट भी दिया जाएगा। ग्लोबल मार्केट में नई आई20 एन लाइन को चार नए रंगों में पेश किया गया है, जिनमें लुमेन ग्रे पर्ल, मेटा ब्लू पर्ल, वाइब्रेंट ब्लू पर्ल और लुसिड लाइम मैटेलिक शामिल हैं।

यह कार मोबाइल कनेक्टिविटी के साथ टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, मल्टी कलर एम्बिएंट लाइटिंग, सिंगल पैन सनरूफ, वायरलेस चार्जर, फुल डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और बोस साउंड सिस्टम से लैस होगी।

नई आई20 एन लाइन को 1.0 लीटर टर्बो चार्ज्ड पेट्रोल इंजन दिया जाएगा। यह इंजन 6 स्पीड मैनुअल और 7 स्पीड डीसीटी गियरबॉक्स से जुड़ा होगा।

यह इंजन 118 बीएचपी की पीक पॉवर और 172 एनएम का मैक्सिमम टॉर्क जनरेट करने में सक्षम होगा।

यहां बता दें कि हुंडई एक ऐसी कार पेश कर रही है जिसका डिजाइन तो शानदार है ही, साथ ही इसका पॉवर और परफॉर्मेंस भी बलेनो से काफी बढ़िया है।

अब कंपनी इसे कार को 2024 वर्जन में लाने की तैयारी कर रही है जिसमें कई नए अपडेट और फीचर्स देखने को मिलेंगे।

पेट्रोल-डीजल कई शहरों में सस्ता, कहीं महंगा

- ब्रेंट क्रूड 83.39 डॉलर प्रति बैरल पर बंद

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में उछाल का सिलसिला जारी है। शुक्रवार को कूड में कारोबार 2 फीसदी की तेजी के साथ बंद हुआ। ब्रेंट क्रूड 83.39 डॉलर प्रति बैरल पर बंद हुआ। देश में ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल के ताजा भाव जारी कर दिए हैं। भारत में हर सुबह 6 बजे ईंधन के दामों में संशोधन किया जाता है। जून 2017 से पहले कीमतों में संशोधन हर 15 दिन के बाद किया जाता था। गुजरात, आंधा प्रदेश, केरल और कर्नाटक समेत कुछ राज्यों में पेट्रोल-डीजल सस्ता हो गया है, जबकि महाराष्ट्र, हिमाचल और ओडिशा में दाम बढ़े हैं। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर, नोएडा में पेट्रोल 96.59 रुपये और डीजल 89.76 रुपये प्रति लीटर हो गया है। गाजियाबाद में 96.58 रुपये और डीजल 89.75 रुपये प्रति लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 96.62 रुपये और डीजल 89.81 रुपये प्रति लीटर हो गया है। पटना में पेट्रोल 107.24 रुपये और डीजल 94.04 रुपये प्रति लीटर हो गया है।

बलेनो और आईं20 को किया जा रहा काफी पसंद

-6 लाख में खरीदो और 15 साल तक मौज करो

नई दिल्ली ।

कार खरीदने से पहले बजट से लेकर कार के डिजाइन और लुक्स तक सभी चीजें मायने रखती हैं। कार खरीदने वालों के लिए एक सही कार चुनना थोड़ा मुश्किल हो सकता है। मार्केट में अच्छे डिजाइन परफॉर्मेंस के मामले में बलेनो और आई20 को काफी पसंद किया जाता है। यह दोनों अपने सेगमेंट की बेस्ट सेलिंग गाड़ियां हैं। हालांकि, अगर आपका बजट कम है तो इन दोनों गाड़ियों की कीमत आपको महंगी पड़ सकती है। इनकी मेंटेनेंस और पार्ट्स भी महंगे आते हैं। ऐसे में मारुति स्विफ्ट एक बढ़िया ऑप्शन है। स्विफ्ट को भारत में 2005 में लॉन्च किया गया था। तब से ये सबसे ज्यादा बिकने वाली कारों में शामिल है। सड़कों पर आज भी 10 से 15 साल पुरानी स्विफ्ट आसानी से मिल जाती हैं। ये कार काफी लंबी चलती हैं। स्विफ्ट की कीमत 6 लाख रुपये से शुरू होती है और 8.98 लाख रुपये तक जाती है। ये चार वेरिएंट एलएक्सआई, वीएक्सआई, झेड एक्सआई और झेडएक्सआई+ में उपलब्ध है। वीएक्सआई और झेडएक्सआई मॉडल के साथ सीएनजी का ऑप्शन भी मिल जाता है। इसे तीन डुअल-टोन और छह मोनोटोन कलर में खरीदा जा सकता है। इसमें पर्ल मिडनाइट ब्लैक रूफ के साथ सॉलिड फायर रेड, पर्ल आर्कटिक व्हाइट रूफ के साथ पर्ल मेटैलिक मिडनाइट ब्लू, पर्ल मिडनाइट ब्लैक रूफ के साथ पर्ल आर्कटिक व्हाइट, मैटेलिक मैग्मा ग्रे, पर्ल मिडनाइट ब्लू, पर्ल आर्कटिक व्हाइट, मैटेलिक सिल्की सिल्वर, सॉलिड फायर रेड और पर्ल मैटेलिक ल्यूसेंट ऑरेंज का ऑप्शन है। मारुति स्विफ्ट 1.2-लीटर ड्यूलजेट पेट्रोल इंजन के साथ आती है, जो 90पीएस की पावर और 113 एनएम टॉर्क जनरेट करता है। इसमें 5 स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन या एएमटी गियरबॉक्स मिल जाता है। माइलेज बढ़ाने के लिए हैचबैक में स्टार्ट/स्टॉप सिस्टम भी मिलता है। यह कार पेट्रोल से चलने पर 22.38 केएम/लीटर और सीएनजी से चलने पर 30.90 केएम/केजी का माइलेज देती है।

स्विफ्ट में 7 इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, हाइट-एडजस्टेबल ड्राइवर सीट, क्रूज कंट्रोल, ऑटो एसी और एलईडी डीआरएल के साथ एलईडी हेडलाइट्स शामिल हैं। बता दें कि पहली बार कार खरीदना हर किसी के लिए एक्साइटिंग होता है। लोग कार खरीदने के लिए कई दिनों तक रिसर्च करते हैं।

वियतनाम की विनफास्ट ईवी ने प्लांट लगाना किया शुरू

-टेस्ला अपनी योजना को नहीं उतार पाई जमीन पर

नई दिल्ली ।

वियतनाम की एक इलेक्ट्रिक व्हीकल निर्माता कंपनी विनफास्ट ईवी ने भारत में प्लांट लगाना शुरू भी कर दिया है। वहीं अमेरिकी कंपनी टेस्ला अपनी योजना को अभी तक जमीन पर नहीं उतार पाई है। वियतनाम की कंपनी तमिलनाडु के थूथुकुडी में 400 एकड़ में प्लांट का निर्माण शुरू कर रही है। कंपनी ने देश में अपनी इलेक्ट्रिक कारों के लिए डीलरशिप विकसित करने की बात भी कही है। विनफास्ट ने भारत में अपने प्लांट में अगले पांच वर्षों में लगभग 4,144 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। कंपनी के प्लांट की क्षमता सालाना 1.5 लाख वाहन तैयार करने की होगी। कंपनी का कहना है कि ईवी मैन्युफैक्चरिंग प्लांट राज्य में 3,000 से 3,500 लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करेगा।ऑटोमोटिव उद्योग में एक नए प्लेयर के रूप में विनफास्ट ने 2017 में वियतनाम में आधिकारिक तौर पर परिचालन शुरू किया। शुरुआत में, ईवी निर्माता ने बीएमडब्ल्यू कारों पर आधारित स्कूटर और मॉडल पेश किए। 2021 में, विनफास्ट ने वियतनाम में तीन इलेक्ट्रिक कारें, दो नए इलेक्ट्रिक स्कूटर और एक इलेक्ट्रिक बस लॉन्च करके अपनी पेशकश का विस्तार किया। अगले वर्ष, विनफास्ट ने अमेरिका, यूरोप और कनाडा में शोरूम स्थापित करके अपनी वैश्विक उपस्थिति का विस्तार करना शुरू किया। विनफास्ट वर्तमान में अमेरिका में वीएफ8 और वीएफ9 एसयूवीएस और कनाडा में वीएफ6 और वीएफ 7 एसयूवीएस जैसे मॉडल बेचती है।विनफास्ट ने भारत में प्लांट लगाने की शुरुआत कर दी है। हालांकि, इलेक्ट्रिक कारों का उत्पादन शुरू होने में अभी कुछ समय लग सकता है। खबरों की मानें तो कंपनी 2025 से भारत में इलेक्ट्रिक कारों की बिक्री शुरू कर सकती है। शुरुआत में कंपनी पूरी तरह से बने हुए मॉडलों (सीबीयू) को भारत लाएगी, जिसके बाद 2026 तक भारत में पूरी तरह से नॉक-डाउन (सीकेडी) यूनिट्स पेश किए जाएंगे। इसके बाद स्थानीय रूप से बने मॉडल पेश किए जाएंगे। पहले कुछ मॉडल विनफास्ट वीएफ 7 और विनफास्ट वीएफ 6 जैसे एसयूवी और क्रॉसओवर हो सकते हैं। बता दें कि भारत इलेक्ट्रिक कारों के लिए एक उभरता हुआ बाजार है। यही वजह है कि टेस्ला और फोर्ड जैसी दुनिया की बड़ी इलेक्ट्रिक कार निर्माता कंपनियां देश में अपनी इलेक्ट्रिक कारों की बेचना चाहती है।

पेमेंट बैंक ढांचे की समीक्षा करेगा आरबीआई

- बिजनेस मॉडल और आगे की राह पर रहेगा जोर

मुंबई । भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) पेमेंट बैंकों के ढांचे के हर पहलू का जायजा ले सकता है। देश में पेमेंट बैंकों को लाइसेंस 27 नवंबर 2014 को जारी किए गए थे, जिसके करीब एक दशक बाद उनकी व्यापक समीक्षा की जा रही है। इसमें प्रशासन के पैमानों के साथ कारोबारी मॉडल की व्यावहारिकता पर गौर किया जाएगा और यह भी देखा जाएगा कि किस तरह के बदलावों की जरूरत है। इसका सीधा असर उन पेमेंट बैंकों पर पड़ सकता है, जो लघु वित्त बैंक (एसएफबी) बनना चाहते हैं क्योंकि एसएफबी के नियामकीय पूंजी ढांचे की व्यापक समीक्षा करने पर भी विचार चल रहा है। इसका जिक्र भारत में बैंकिंग के रुझान और प्रगति 2022-23 रिपोर्ट में भी किया गया है। पेमेंट बैंक अपनी स्थापना के करीब एक दशक बाद वित्त वर्ष 2023 में मुनाफे में आए। पिछले वित्त वर्ष में ब्याज से उनकी आय ब्याज पर होने वाले खर्च से ज्यादा हो गई। साथ ही संपत्तियों पर रिटर्न और इक्विटी पर रिटर्न भी सकारात्मक हो गया। लगातार तीन साल तक घटने वाला ब्याज मार्जिन भी 2022-23 में बढ़कर 3.7 फीसदी हो गया, जो वित्त वर्ष 2021-22 में 2.3 फीसदी ही था। पेमेंट बैंकों को अभी दिन के अंत में खाते में 2 लाख रुपये तक ही शेष रखने की इजाजत है, जिसे बढ़ाने की मांग वे कई साल से आरबीआई से कर रहे हैं। शुरुआत में यह सीमा 1 लाख रुपये ही थी, जिसे 7 अप्रैल, 2021 को बढ़ाकर 2 लाख रुपये कर दिया गया। इससे भी ज्यादा अहम मांग कर्ज देने के बारे में है। वे माइक्रोफाइनैंस क्षेत्र को उधार देने की इजाजत मांग रहे हैं और कर्ज की उचित सीमा तय किए जाने पर उन्हें कोई एतराज नहीं होगा। 2014 में पेमेंट बैंक लाइसेंस के लिए करीब 40 अर्जी आई थीं, जिनमें रिलायंस इंडस्ट्रीज (भारतीय स्टेट बैंक के साथ), आदित्य बिड़ला समूह (आइडिया), भारती एयरटेल और वोडाफोन के अलावा ऑक्सीजन जैसे बिजनेस कॉरेस्पॉन्डेंट भी शामिल थे। उस समय रिटेल समूह फ्यूचर ग्रुप भी इस होड़ में था। अगर लघु फाइनैंस बैंक के लाइसेंस में दिलचस्पी रखने वाले करीब 70 उम्मीदवारों को भी शामिल कर लिया जाए तो बुनियादी बैंकिंग को काफी आकर्षक माना जा रहा है। पेमेंट बैंक केवल भारत में मिलते हैं।

टॉरेंट पावर को रिन्यूएबल एनर्जी प्रोजेक्ट मिला

मुंबई । टॉरेंट पावर ने कहा कि उसे ग्रिड से जुड़ी चौबीस घंटे उपलब्धता वाली नवीकरणीय ऊर्जा परियोजना के लिए रेलवे एनर्जी मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड (आरईएमसीएल) से आवंटन पत्र (एलओए) मिला है। टॉरेंट पावर ने कहा कि परियोजना बिजली खरीद समझौते (पीपीए) पर हस्ताक्षर होने के 24 महीने के अंदर चालू हो जाएगी। लगभग 325 मेगावाट नवीकरणीय क्षमता स्थापित करने की परियोजना लागत लगभग 2,700 करोड़ रुपये है। इसके तहत 100 मेगावॉट क्षमता नवीकरणीय ऊर्जा 24 घंटे की आपूर्ति के लिए है। कंपनी ने कहा कि 325 मेगावाट क्षमता की नवीकरणीय क्षमता में पवन, सौर और बैटरी भंडारण शामिल है। परियोजना 25 साल की अवधि के लिए 4.25 रुपये प्रति किलोवाट (यूनिट) की दर पर हासिल किया गया है।

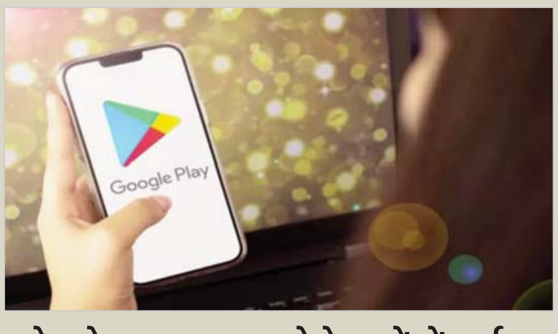

प्ले स्टोर का शुल्क न देने वालों में कई कंपनियां शामिल

नई दिल्ली । गूगल ने कहा कि कई जानी-मानी फर्मों सहित कई कंपनियां उसके बिलिंग मानदंडों का उल्लंघन कर रही हैं। ये कंपनियां बिक्री पर लागू प्ले स्टोर सेवा शुल्क का भुगतान नहीं कर रही हैं। इसके साथ ही गूगल ने चेतावनी दी कि वह गूगल प्ले पर ऐसे गैर अनुपालन वाले एप्प को हटाने में संकोच नहीं करेगा। कंपनी ने कहा कि नीतियों को लागू करने के लिए जरूरी कार्यवाही की जाएगी। कुछ प्रमुख भारतीय स्टार्टअप के गूगल प्ले की बिलिंग नीति पर आपत्ति जताने और हाल में पेश हुए, स्वदेश एप्प स्टोर इंडस एप्पस्टोर की पृष्ठभूमि में गूगल ने एक ब्लॉगपोस्ट में कहा कि ज्यादातर डिवैल्पर अपना उचित हिस्सा दे रहे हैं और एक छोटा समूह अलग व्यवहार कर रहा है। ऐसे में अन्य सभी एप्प और गेम को प्रतिस्पर्धी नुक्सान हो रहा है। गूगल ने कहा कि इन डिवेल्पर को तैयारी के लिए तीन साल से अधिक का समय दिया गया।

जेजी केमिकल्स का आईपीओ 5 मार्च को खुलेगा

अहमदाबाद । जेजी केमिकल्स का प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) पांच मार्च को खुलेगा। कंपनी की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि उत्पादन और राजस्व के मामले में भारत के सबसे बड़े जिंक ऑक्साइड निर्माता जेजी केमिकल्स लिमिटेड ने अपने पहले आरंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव के लिए दस रुपये अंकित मूल्य वाले प्रत्येक इक्विटी शेयर के लिए मूल्य बैंड 210 से 221 रुपये तय किया है। कंपनी का आईपीओ निवेश के लिए पांच मार्च मंगलवार को खुलेगा और सात मार्च गुरुवार को बंद होगा। निवेशक न्यूनतम 67 इक्विटी शेयरों के लिए और उसके बाद 67 इक्विटी शेयरों के गुणकों में बोली लगा सकते हैं।

बीईई ऊर्जा खपत में 3.5 फीसदी कमी लाने में सहायकः सिंह

नई दिल्ली । बिजली मंत्रालय के अधीन आने वाले ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) के कार्यक्रमों और उपायों ने देश को सालाना ऊर्जा खपत 3.5 प्रतिशत तक घटाने में सहायता की है। केंद्रीय मंत्री आरके सिंह ने कहा कि इससे वार्षिक कार्बन उत्सर्जन में 30.6 करोड़ टन की कमी आई है। बिजली मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि मंत्री ने बीईई के 22वें स्थापना दिवस पर यह बात कही। बिजली और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री ने कहा कि बीईई ने भारत को अपनी ऊर्जा खपत लगभग 3.5 प्रतिशत कम करने और सालाना 30.6 करोड़ टन कार्बन उत्सर्जन कटौती में मदद की है। बीईई के महानिदेशक अभय बाकरे के साथ मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

गूगल भ्रामक खबरों पर लगाएगी रोक

मुंबई। दिग्गज कंपनी गूगल ने शक्ति, इंडिया इलेक्शन फैक्ट-चेकिंग कलेक्टिव नाम से एक नई व्यवस्था शुरू की है। 2024 के आम चुनाव से ठीक पहले शुक्रवार से शुरू हुई इस पहल का मकसद ऑनलाइन माध्यम से डीपफेक सहित भ्रामक जानकारियों एवं सामग्री का प्रसार रोकना है। शक्ति, इंडिया इलेक्शन फैक्ट-चेकिंग कलेक्टिव देश में समाचार प्रकाशकों एवं तथ्यों की जांच करने वाली इकाइयों का समूह है। डेटालीड्स मिसइन्फॉर्मेशन कॉम्बैट अलायंस पूरे भारत में शुरू की गई इस पहल की अगुआई तथ्यों की जांच करने वाले अन्य समूहों की मदद से करेगा। इस पहल को गूगल न्यूज इनिशिएटिव (जीएनआई) का भी समर्थन प्राप्त होगा। इस नई व्यवस्था पर गूगल ने कहा कि भारत में आम चुनाव समाप्त होने तक यह पहल स्वतंत्र फैक्ट चेकर एवं भारतीय भाषाओं में सामग्री प्रकाशित करने वाले लोगों एवं समूहों को एक दूसरे से जोड़ेगी। इससे उन्हें चुनाव से जुड़े तथ्यों की जांच और सही जानकारी साझा करने के लिए एक मंच मिल जाएगा। इससे डीपफेक, भ्रामक खबरों की जांच और इन पर अंकुश लगाने में समय बचाने में मदद मिलेगी। गूगल ने कहा कि वीडियो सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं प्रारूपों में तथ्यों की जांच के बाद प्रामाणिक जानकारियां साझेदार समाचार प्रकाशकों के साथ साझा करने में मदद मिलेगी।

पेटीएम पेमेंट्स बैंक पर 5.49 करोड़ का जुर्माना

- एफआईयू ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक पर मनी लांड्रिंग का आरोप

नई दिल्ली । भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की कार्यवाही के बाद पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड (पीपीबीएल) लगातार चर्चा में है। आरबीआई की ओर से लगाए गए प्रतिबंध के अलावा पेटीएम पेमेंट्स बैंक को अब एक और झटका लगा है। दरअसल, पेटीएम पेमेंट्स बैंक पर वित्त मंत्रालय की फाइनेंशियल इंटेलिजेंस यूनिट (एफआईयू) की गाज गिरी है। एफआईयू ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक पर मनी लों ड्रिंग का आरोप लगाते हुए 5.49 करोड़ रुपये का जुर्माना लगा दिया है। फाइनेंशियल इंटेलिजेंस यूनिट ने पाया कि कई संस्थाओं ने आपराधिक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए पेटीएम पेमेंट्स बैंक के अकाउंट्स का इस्तेमाल किया। गौरतलब है कि आरबीआई ने 29 जनवरी को आदेश जारी करते हुए पेटीएम पेमेंट्स बैंक पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिए थे। आरबीआई ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक को 29 फरवरी के बाद नए डिपॉजिट्स लेने और क्रेडिट ट्रांजेक्शंस पर रोक लगाने का आदेश दिया था। हालांकि बाद में आरबीआई ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक को 15 मार्च, 2024 तक राहत दे दी। उल्लेखनीय है कि हाल ही में पेटीएम के सीईओ विजय शेखर शर्मा ने इस्तीफा दे दिया था। शर्मा ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक के नॉन-एग्जीक्यूटिव चेयरमैन और बोर्ड मेंबर का पद छोड़ दिया था। इसके साथ ही बैंक के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स को पुनर्गठित किया गया है। बता दें कि आरबीआई की कार्यवाही के बाद 9 फरवरी को पेटीएम ने कहा था कि बाजार` नियामक सेबी के पूर्व चेयरमैन एम दामोदरन की अगुवाई में एक ग्रुप एडवाइजरी कमेटी बनाई है। यह कमिटी इसे कंप्लॉयंस और रेगुलेशन पर सलाह देगी। 3 सदस्यों की इस कमेटी में आईसीएआई के पूर्व प्रेसिडेंट एमएम चिताले और आंध्रा बैंक के पूर्व सीएमडी आर रामचंद्रन हैं।

स्पेशल ट्रेडिंग सेशन में सेंसेक्स और निफ्टी नई ऊंचाई पर रहे

- सेंसेक्स 128.7 अंक चढ़कर 73,879 अंक पर पहुंचा

- निफ्टी 58.15 अंक चढ़कर 22,396 अंक पर बंद

मुंबई ।

घरेलू शेयर बाजारों में शनिवार को विशेष कारोबार के दूसरे और अंतिम सत्र में तेजी का सिलसिला जारी रहा और दोनों मानक सूचकांक बीएसई सेंसेक्स और एनएसई निफ्टी बढ़त में रहे। बाजार के जानकारों का कहना है` कि जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) का आंकड़ा बेहतर रहने और विदेशी संस्थागत निवेशकों के पूंजी प्रवाह से बाजार में तेजी बनी रही। इस ` विशेष सत्र में निफ्टी के 6 स्टॉक्स नई ऊंचाई पर, टाटा ग्रुप के दो शेयर में भी दिखी ताबड़तोड़ खरीदारी देखी गई। शे निवार को पहली बार डिजास्टर रिकवरी पर लाइव ट्रेडिंग हुई। दो हिस्से में हुई ट्रेडिंग में निफ्टी 50 के 6 शेयर इंट्रा-डे में एक साल के उच्च स्तर पर पहुंच गए। इसमें से दो शेयर तो टाटा ग्रुप के हैं। विशेष सत्र में घरेलू इक्विटी बेंचमार्क इंडेक्स बीएसई सेंसेक्स और निफ्टी 50 रिकॉर्ड ऊंचाई पर बंद हुए।` विशेष सत्र के दौरान निफ्टी 50 के छह शेयर नई ऊंचाई पर पहुंचे जिसमें से चार तो ऑल टाइम हाई पर पहुंच गए। टाटा ग्रुप का एक शेयर टाटा स्टील रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गया जबकि टाटा मोटर्स के शेयर 13 साल के हाई पर पहुंच गए। टाटा स्टील के शेयर 3.6 फीसदी की बढ़त के साथ 155.35 रुपये पर बंद हुए जबकि इंट्रा-डे में यह 156.2 रुपये की रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचा था। इसके अलावा टाटा ग्रुप के एक और स्टॉक टाटा मोटर्स ने 13 साल का उच्च स्तर छू लिया। टाटा मोटर्स के शेयर इंट्रा-डे में 992.6 रुपये की ऊंचाई पर पहुंचे थे। दिन के आखिरी में यह 1.19 फीसदी के उछाल के साथ 989 रुपये के भाव पर बंद हुआ है। देश के प्रमुख शेयर बाजार बीएसई और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) बड़े व्यवधान से निपटने की अपनी तैयारी को परखने के लिए शनिवार को इक्विटी एवं इक्विटी वायदा एवं विकल्प खंड में विशेष कारोबारी सत्र का आयोजन किया गया। विशेष कारोबारी सत्र के दौरान लेनदेन को प्राथमिक साइट (पीआर) से डिजास्टर रिकवरी (डीआर) साइट पर स्थानांतरित करके उसकी कार्यप्रणाली को जांचा जाएगा। डीआर से आशय संकट या आपदा के समय संस्थान की आईटी प्रणाली और आंकड़ों को तेजी से बचाने, नुकसान को सीमित करने और सामान्य कारोबार पर लौटाने की योजना से है। तीस शेयरों पर आधारित सेंसेक्स विशेष कारोबार सत्र के दूसरे हिस्से में 128.7 अंक चढ़कर 73,879.58 अंक पर पहुंच गया। पचास शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 58.15 अंक चढ़कर 22,396.90 अंक पर रहा। शेयर बाजारों के अनुसार दो सत्र आयोजित हो रहे हैं। पहला सत्र प्राथमिक साइट पर सुबह 9¬15 बजे से 10 बजे तक और दूसरा सत्र डिजास्टर रिकवरी पर सुबह 11¬30 बजे से दोपहर 12¬30 बजे तक चला। सेंसेक्स के शेयरों में टाटा स्टील, टाटा मोटर्स, एशियन पेंट्स और लार्सन एंड टुब्रो प्रमुख रूप से लाभ में रहे। वहीं गिरावट वाले शेयरों में महिंद्रा एंड महिंद्रा, एनटीपीसी, कोटक महिंद्रा बैंक और अल्ट्राटेक सीमेंट शामिल हैं। देश की आर्थिक वृद्धि दर चालू वित्त वर्ष 2023-24 की तीसरी तिमाही में उम्मीद से कहीं अधिक 8.4 प्रतिशत रही। यह किसी तिमाही में डेढ़ साल में तीव्र वृद्धि दर है। विदेशी संस्थागत निवेशकों ने शुक्रवार को 128.94 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर खरीदे। सेंसेक्स शुक्रवार को 1,245.05 और निफ्टी 355.95 अंक मजबूत होकर नई ऊंचाई पर बंद हुए थे।

एलआईसी से सरकार को ढाई हजार करोड़ का डिविडेंड मिला

- कंपनी के शेयरों में उछाल, 70 फीसदी बढ़े

मुंबई ।

भारत सरकार को एक कंपनी से डिविडेंड के रूप में 2,441 करोड़ की राशि मिली है। ये राशि देश की सबसे बड़ी बीमा कंपनी भारतीय जीवन बीमा निगम ने डिविडेंड के तौर पर दी है। इस बारे में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा है कि एलआईसी के चेयरमैन सिद्धार्थ मोहंती ने 2,441.44 करोड़ रुपये का डिविडेंड चेक सौंपा है। बता दें इस मौके पर `` वित्त से चिव विवेक जोशी भी उपस्थिति थे। एलआईसी के चेयरमैन ने वित्त मंत्री को ये चेक सौंपा। इसी बीच एलआईसी के शेयरों में भी उछाल देखा गया। शुक्रवार को 0.69 फीसदी की तेजी के साथ 1,029.90 रुपये के भाव पर बंद हुए। वहीं आंकड़ों पर नजर डालें तो पिछले एक महीने में कंपनी के शेयरों में 8.93 फीसदी की तेजी आई है। वहीं पिछले 6 महीने में इसके शेयरों का भाव करीब 56.38 फीसदी बढ़ा है। पिछले एक साल में एलआईसी ने 71.34 फीसदी का अच्छा रिटर्न दिया है।

दिसंबर में एलआईसी ने बाजार मूल्यांकन के हिसाब से भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) को पछाड़कर देश की सबसे मूल्यवान पीएसयू फर्म बन गई। अब तक रिलायंस इंडस्ट्रीज 19,46,521.81 करोड़ के बाजार पूंजीकरण के साथ भारत की सबसे मूल्यवान कंपनी है, इसके बाद टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, इंफोसिस और एलआईसी पर हैं। एलआईसी आईपीओ के लॉन्च के एक साल बाद कंपनी के स्टॉक को अक्सर बाजार विशेषज्ञों द्वारा धन विनाशक के रूप में स्तर पर किया गया था। हालांकि कंपनी का शेयर पिछले 5-6 महीनों से अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। केंद्र सरकार ने आरंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) के माध्यम से एलआईसी में 22.13 करोड़ से अधिक शेयर हिस्सेदारी बेची।

बार्सिलोना स्पेन में सैमसंग गैलेक्सी रिंग पेश

-रिंग हेल्थ का रखेगी खूब ध्यान

नई दिल्ली (ईएमएस)। बार्सिलोना स्पेन में जारी एमडब्ल्यूसी 2024 के दौरान सैमसंग ने गैलेक्सी रिंग को पेश कर दिया है। गैलेक्सी अनपेक्ड 2024 इवेंट के दौरान सैमसंग ने अपने पहले स्मार्ट रिंग के लिए टीजर जारी किया था। कंपनी अभी किसी भी विजिटर को इसे ट्राई करने के लिए नहीं दिया गया। लेकिन, इस सैमसंग वियरेबल डिवाइस के काफी सारे फीचर्स जारी कर दिए गए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, सैमसंग गैलेक्सी रिंग यूजर्स का हार्ट रेट, रेस्पिरेटरी रेट और स्लीप रिकॉर्ड जैसे डेटा को ट्रैक करेगी। ये रिंग एक वाइटैलिटी स्कोर भी शो करेगी, जो यह देखने के लिए कि आप कितने प्रोडक्टिव हो सकते हैं, फिजिकल और मेंटल रेडीनेस के बारे में डेटा कलेक्ट करता है। यूजर्स इस डेटा को सैमसंग हेल्थ ऐप के जरिए एक्सेस कर सकेंगे। रिपोर्ट के मुताबिक, सैमसंग इसमें एक पेमेंट फीचर भी शामिल कर सकता है। ताकी गैलेक्सी रिंग के जरिए यूजर्स कॉन्टैक्टलेस पेमेंट्स कर सकें। साथ ही इस रिंग की बिक्री यूएस में इसी साल हो सकती है। हालांकि, कीमत और लॉन्च डिटेल फिलहाल सामने नहीं आई है।ये स्मार्ट रिंग सिरेमिक ब्लैक, प्लैटिनम सिल्वर और गोल्ड कलर ऑप्शन में आ सकती है। इस रिंग में हार्ट रेट, मूवमेंट, ब्रीदिंग पैटर्न और स्लीप साइकल ट्रैकर जैसे फीचर्स दिए जा सकते हैं। इस रिंग में एआई बेस्ड फीचर्स भी दिए जा सकते हैं। एक कंपनी एग्जीक्यूटिव ने बताया है कि कंपनी इस वियरेबल डिवाइस में ग्लूकोज मॉनिटरिंग और ब्लड प्रेशर सेसिंग टेक्नोलॉजी भी दे सकती है।

हॉबी तो होनी ही चाहिए

हर बच्चे की कम से कम एक हॉबी होना बहुत जरूरी है। अगर तुम्हारी कोई हॉबी नहीं है तो गर्मियों की इन छुट्टियों में कोई हॉबी चुनो। हॉबी का मतलब है ऐसा काम, जिसे करने में तुम्हें मजा आए, जिसके बारे में तुम और जानना-सीखना चाहो। तुम नृत्य, गायन, संगीत, पेंटिंग, स्पोर्ट्स, राइटिंग आदि में से किसी को भी चुन सकते हो।

इन्हें बना सकते हो हॉबी

डांस - डांस करना एक अच्छी हॉबी है। इससे आत्मविश्वास, अनुशासन सीखते हैं। जिन बच्चों की डांस में रुचि है, उन्हें 4-5 साल की उम्र में डांस क्लास ज्वॉइन कर लेनी चाहिए, क्योंकि इस उम्र में शरीर बहुत लचीला होता है और डांस सीखने में आसानी होती है। डांस सीखने के कई फायदे हैं। यह तुम्हें फिट रखता है और आजकल टीवी पर आने वाले रियलिटी शो भी डांसर्स के लिए अच्छा प्लेटफॉर्म है। बड़े होकर कोरियोग्राफर, एक्टर, डांसर के रूप में करियर बनाने में भी मदद मिलती है।

अगर तुम अपनी हॉबी को पूरे मन से करोगे और उसके बारे में और जानने-सीखने का प्रयास करोगे तो तुम्हें इसका काफी फायदा होगा। अगर तुम्हारी कोई हॉबी नहीं है तो आज बना लो। कैसे बनाओगे हॉबी और इसके फायदों के बारे में जानते हैं

गायन

संगीत को एक बहुत उच्चकोटि की कला माना जाता है। गायन सीखने के लिए सुर और ताल की समझ होना जरूरी है। इसके लिए रोज रियाज करना पड़ता है। यह रियाज किसी गुरु की देखरेख में करना जरूरी है। अगर तुम्हें गायन में रुचि है तो जल्दी ही रियाज करना शुरू कर दो। मम्मी-पापा से कहकर किसी योग्य गुरु को चुनो। फिर तो तुम स्कूल के वार्षिकोत्सव और पारिवारिक समारोहों में खूब वाहवाही बटोरोगे। साथ ही गाना गाना फेफड़ों को मजबूत बनाता है और तनाव कम करता है।

पेंटिंग

तुम में से कई बच्चों को पेंटिंग करना पसंद होगा। तुम नहीं करते हो तो अब शुरू करो। जो महसूस करते हो, उसे कागज पर उतारो। स्केचिंग क्लास भी ज्वॉइन कर सकते हो। पेंटिंग से रचनात्मकता बढ़ती है। निरंतर प्रयास करने से, धैर्य रखने का गुण विकसित होता है और राइटिंग अच्छी होती जाती है।

लेखन

लिखना एक बेहतरीन हॉबी है। लिखते समय तुम्हारी कल्पना कहीं भी जा सकती है। तुम यह न सोचना कि लिखने के लिए तुम्हारी उम्र अभी कम है। तुमने सुना ही होगा कि पाकिस्तान की मलाला यूसुफजई सबसे कम उम्र की है, जिसे नोबल शांति पुरस्कारों के लिए नामित किया गया है। जानते हो, उसने 11 साल की उम्र में ही डायरी लिखना शुरू कर दिया था। वह नाम बदलकर बीबीसी के लिए ब्लॉग भी लिखती थी। लिखने के इसी शौक और हौसले ने उसे पूरी दुनिया में मशहूर कर दिया। तुम भी एक डायरी बनाओ और जो मन में है, उसे वैसा ही कागज पर उतार दो। हर रविवार को उस डायरी को पढ़ो, कुछ दिन बाद तुम खुद ही हैरान रह जाओगे कि क्या यह सब तुमने लिखा है।

मम्मी-पापा के लिए टिप्स...

बाल मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, जिन बच्चों की कोई हॉबी नहीं होती उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। माता-पिता को भी अपने बच्चों को कोई हॉबी विकसित करने में सहायता करनी चाहिए। बच्चा जिस भी चीज को मन से करे, उसे वह करने की प्रेरणा देनी चाहिए।

हॉबी के हैं कई फायदे..

- पढ़ाई के बाद बचे समय का सही इस्तेमाल कर पाओगे।
- बड़े होने पर करियर बनाने में मदद मिलेगी।
- एक्टिव रहोगे, दूसरे बच्चों से घुलोगे-मिलोगे, क्रिएटिविटी बढ़ेगी।
- यह आत्मविश्वास बढ़ाती है।
- हॉबी से रचनात्मकता बढ़ती है, कुछ नया जानने-करने की प्रेरणा मिलती है।

हजारों साल पुराना राशिचक्र

राशियों का तिलिस्म मानव को सदियों से उलझाता रहा है। पुरातत्वविदों ने क्रोएशिया में एड्रिआटिक सागर के समीप एक गुफा में दो हजार साल से अधिक पुराने राशिचक्र के अंशों का पता लगाया। राशिचक्र के करीब 30 टुकड़े मिले हैं जो हाथी दांत से बने हैं और उन पर हैलेनिक शैली में राशियां उकेरी गई हैं। कर्क, मिथुन और मीन राशियों को स्पष्ट तौर पर पहचाना जा सकता है लेकिन धनु राशि अधिक स्पष्ट नहीं है।

खुदाई के दौरान नाकोवाने की गुफा में ईसा पूर्व चौथी से पहली शताब्दी के बीच की एक शरणस्थली मिली जिसका संबंध इलीरिया नामक भारतीय यूरोपीय लोगों से था। ब्रह्मांड के रहस्य सुलझाने में लगे वैज्ञानिकों ने इस साल 'डीडीओ 190' नामक एक बहुत ही छोटी, अव्यवस्थित और अस्पष्ट सी आकाशगंगा का पता लगाया है। नासा-ईएस हबल अंतरिक्ष दूरबीन से प्राप्त तस्वीरों के जरिए इसका पता चला। डीडीओ 190 हमारे सौर मंडल से नब्बे लाख प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित है।

इसे मेसियर 94 आकाशगंगा समूह का छिटपुट हिस्सा ही माना जा रहा है, जो आकाशगंगा के स्थानीय समूहों से बहुत ज्यादा दूर नहीं है। अनबूझे रहस्य सुलझाने में लगे वैज्ञानिकों ने अगस्त में प्रोटीन के भीतर एक ऐसे सूक्ष्म कण का पता लगाया, जिससे इस ब्रह्मांड में मानव सबसे ज्यादा बुद्धिमान बन पाया। ब्रिटेन के कोलोराडो विश्वविद्यालय के अध्ययनकर्ताओं ने प्रोटीन के डीयूएफ 1220 नामक कण का पता लगाया। जानवरों की तुलना में हमारा दिमाग इतना बड़ा और ज्यादा जटिल क्यों है, इसका जवाब इस कण में छिपा है। डीयूएफ 1220 एक प्रोटीन डोमेन है, जो बड़ी संख्या में पाया जाता है। अन्य प्रजातियों की तुलना में मानवों में इसकी मौजूदगी अधिक है। कनाडा के योहो नेशनल पार्क के बर्गेस शाले जीवाश्म तल पर मार्च में करीब 50.5 करोड़ वर्ष पुराने जीव का जीवाश्म मिला। यह अब तक मिला सबसे प्राथमिक कशेरूकी है। इस विशेषता के कारण इसे मानव समेत सभी कशेरूकियों का पूर्वज कहा गया। वैज्ञानिकों ने अगस्त में यह भी कहा कि करीब 20 लाख वर्ष पहले हमारी पूर्वज प्रजाति 'होमो इरेक्टस' के दौर में दो और आदि मानव प्रजातियां मौजूद थीं। उन्होंने केन्या की तुर्काना झील के पूर्व से नए जीवाश्म खोजे और उन्हें एक चेहरा, पूरा निचला जबड़ा और एक अन्य निचले जबड़े का हिस्सा मिला। बहरहाल, बड़े मस्तिष्क के आकार और सपाट चेहरे वाली खोपड़ी ने इस विवाद को एक बार फिर हवा दे दी है कि अभिनूतन युग में 'होमो इरेक्टस' के साथ और कितनी आदि मानव प्रजातियां मौजूद थीं। मिशिगन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने अगस्त में फिलीपीन में उल्लुओं की दो नई प्रजातियों का पता लगाया। इन उल्लुओं की पहचान उनकी आवाज के अध्ययन के बाद की गई।

शौकिया तौर पर गुफाओं की खोज करने वालों ने अगस्त में दक्षिणी ओरेगन में मकड़ियों का नया परिवार खोज लिया। इनके डरावने पंजों के कारण वैज्ञानिकों ने इसे 'ट्रोग्लोरैप्टर' नाम दिया जिसका मतलब होता है गुफा का लुटेरा। वर्ष 1870 के बाद उत्तरी अमेरिका से इस तरह की यह पहली मकड़ी मिली है।

यह थे भविष्य के सबसे भयानक हथियार जो न ले सके आकार

मानव सभ्यता के साथ हथियार अत्यंत आवश्यक चीज मानी जाती हैं। अगर हथियार न होते तो इंसान अपने लिए भोजन नहीं जुटा पाता, जंगली जानवर उसके काबू में कभी नहीं आते। इसलिए आदिकाल से लेकर आज के समय में बेहतर हथियारों की होड़ बदस्तूर जारी है। यह हथियार किसी धर्म, देश आदि से खुद को बचाने के लिए इस्तेमाल किए गए। इसी कड़ी में देशों की सरकारें भी पीछे नहीं रहीं। उन्होंने बहुत सारा पैसा हथियारों के ऐसे महत्वकांक्षी प्रोजेक्ट में लगा दिया, जिनकी कल्पना करना भी न के बराबर है। यह हथियार सनकी आइडिया के मामले में तो बेहतर थे, लेकिन कभी बन नहीं पाए।

लूनर न्यक्लियर बम (चंद्र परमाणु बम)

सोवियत यूनियन द्वारा अंतरिक्ष में पहला कदम रखने के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए इज्जत का सवाल हो गया कि वह उससे बेहतर क्या कर सकते हैं। इस खुफिया योजना को प्रोजेक्ट 119-ए कहा जाता है, जिसका मिशन चंद्रमा पर परमाणु बम गिराना था। वह ऐसा करके अपने देशवासियों का मनोबल बढ़ाना चाहता था।

हालांकि ऐसा कभी हो नहीं सका। क्योंकि उन्होंने आंकड़ों पर नजर डालने के बाद तय किया कि चांद पर परमाणु बम गिराने से अच्छा उस पर कदम रखना है। इस तरह अमेरिका ने अपना पहला अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग चंद्रमा पर भेजा।

आइसबर्ग एयरक्राफ्ट कैरियर

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जहां जर्मन सेना ब्रिटेन और फ्रांस को पटखनी दे रही थीं। वहीं, ब्रिटेन एक बेहद ही खुफिया प्रोजेक्ट हबाकक पर काम कर रहा था। यह बर्फ और लकड़ी की छीलन से बना एयरक्राफ्ट था, लेकिन ब्रितानी सरकार ने लंबे अध्ययन के बाद पाया कि यह संसाधनों का दुरुपयोग ही होगा। इस तरह यह प्रोजेक्ट साकार नहीं ले पाया।

द फ्लाइंग डोरिटो

ए-12 एवेंजर-2 को फ्लाइंग डोरिटो के नाम से जाना जाता है। यह सभी मौसम के लिए उपयुक्त था। यह स्टील्थ बॉम्बर अमेरिकी नेवी और मरीन कॉर्प्स में इस्तेमाल होने वाले ग्रममैन ए-6 इंट्रूडर की जगह उपयोग में लाया जाना था। ए-12 के विकास पर लगने वाला पैसा और समय से अमेरिकी सरकार ने इसे बंद करना ही बेहतर समझा।

सोवियत डूम्स डे

इसके आज भी एक मिथ के रूप में देखा जाता है। 1990 में सोवियत मिलिटी पूर्व हाई रैंकिंग सदस्यऔर कम्युनिस्ट पार्टी की सेंट्रल कमेटी के लोगों ने अमेरिकी रक्षा ठेकेदारों को इंटरव्यू सीरीज के दौरान डेड हैंड होने की बात बताई थी। इसका मतलब यह था कि रूस के पास फुली ऑपरेशनल न्यूक्लियर कंट्रोल सिस्टम था। इससे ऑटोमेटिकली रशियन इंटरकॉन्टिनेंटल बैलेस्टिक मिसाइल (आईसीबीएम) लांच की जा सकती है। इस न्यूक्लियर हमले का पता भूकंप कंपन, रोशनी, रेडियोएक्टिव, घातक शक्ति संतुलन आदि में ही पहचाना जा सकता है।

द अनलैंडेंड प्लेन

अमेरिका अपने विमान वाहक पोत का इस्तेमाल ऐसे एयरक्राफ्ट के लिए करना चाहता था, जिसे लैंड करने की जरूरत न हो। इसके लिए उसने एसएफवी सालमन प्लेन का निर्माण किया। यह विमान अपनी टेल (पूंछ) पर खड़ा होता था। इससे बाकी प्लेन के लिए जगह बचती थी। लेकिन पायलट के लिए सबसे बड़ी समस्या इसे सीधा लैंड करना था। यह बाकी प्लेन के मुकाबले भी काफी धीमा था और उड़ाना और मुश्किल। ऐसे में इसका आइडिया रद्द कर दिया गया।

इंट्रूडर फॉम द फ्यूचर

बी-70 को परमाणु बम ले जाने के लिए डिजाइन किया गया था। यह 15 मील की ऊंचाई तक उड़ सकता था और ध्वनि की गति से भी तेज था। यह विमान एविएशन ड्रीम की तरह था। अत्यधिक खर्च के कारण इसे टाल दिया गया। हालांकि इनके दो प्रोटोटाइप इस्तेमाल किया जा रहा है। इनमें से एक 1966 में हवा में विस्फोट के साथ ध्वस्त हो गया।

द थंडरस्क्रीच

एक्सएफ-84 एक्सपेरिमेंटल टबरेप्रोप है, जो टर्बाइन इंजन सुपरसोनिक प्रोपलर से बना है। लेकिन इसके शोर के कारण इंजन को 25 मील दूर तक इसकी आवाज सुनी जा सकती थी।

कांग्रेस से खफा विक्रमादित्य ने फेसबुक प्रोफाइल से हटाया पार्टी का नाम

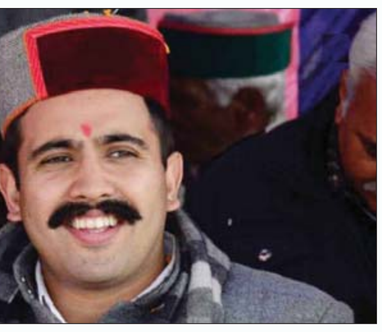

शिमला। हिमाचल प्रदेश का सियासी तुफान अभी पूरी तरह थमा नहीं है। इसके संकेत कांग्रेस नेता विक्रमादित्य सिंह ने दे दिए हैं। उन्होंने अपनी फेसबुक प्रोफाइल से पीडब्ल्यूडी मिनिस्टर और कांग्रेस हटा दिया है। इसके बाद उनके कांग्रेस छोड़ने की चर्चा तेज हो गई है।सुक्खू सरकार से नाराज चल रहे विक्रमादित्य सिंह कांग्रेस छोड़ सकते हैं। उन्होंने अपने फेसबुक प्रोफाइल से पीडब्ल्यूडी मिनिस्टर और कांग्रेस हटा दिया है। इसकी जगह पर हिमाचल का सेवक लिखा है। विक्रमादित्य सिंह ने दिल्ली में डेरा डाले हैं। दिल्ली पहुंचने से पहले उन्होंने अयोग्य घोषित किए गए कांग्रेस के छह विधायकों से हरियाणा के पंचकूला में मुलाकात की। इसके अलावा पूर्व में सुक्खू सरकार के कामकाज पर असंतोष व्यक्त कर चुकीं प्रदेश कांग्रेस प्रमुख प्रतिभा सिंह ने कहा कि विक्रमादित्य सिंह कुछ कार्यक्रमों के लिए दिल्ली गए हैं और कांग्रेस आलाकमान से भी मिलेंगे। इधर, अयोग्य ठहराए गए विधायकों में से एक राजेंद्र राणा ने कहा था कि संबंधित छह विधायक विधानसभा अध्यक्ष के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देंगे। बागी विधायकों को अयोग्य ठहराए जाने के बाद सदन में विधायकों की कुल संख्या 68 से घटकर 62 रह गई है तथा इस क्रम में कांग्रेस विधायकों की संख्या 40 से घटकर 34 हो गई है। विधानसभा में बीजेपी के 25 और तीन निर्दलीय विधायक हैं। कांग्रेस के छह बागी विधायकों सहित तीनों निर्दलीय विधायकों ने भी बीजेपी के राज्यसभा उम्मीदवार हर्ष महाजन के पक्ष में मतदान किया था।

अनंत-राधिका की प्री-वेडिंग में रेहाना ने जीता दिल, कहा आई लव इंडिया

नई दिल्ली। अमेरिका की पाप सिंगर रेहाना ने आई लव इंडिया कहकर सभी का दिल जीत लिया है। बता दें कि अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की प्री-वेडिंग फंक्शन की शुरुआत 1 मार्च से हो चुकी हैं। यह फंक्शन 3 मार्च तक चलेगा। इसमें अमेरिका से आईं पॉप सिंगर रिहाना ने अपने अंदाज में हर किसी का दिल जीत लिया। अंबानी की पार्टी के मंच पर जलवा बिखेरने के बाद उन्होंने अपना बयान भी दिया। सोशल मीडिया पर सामने आए एक वीडियो में, रिहाना के जामनगर हवाईअड्डे पर पहुंचते ही 'भारत में आपका स्वागत है' पर गायक ने जवाब दिया, 'धन्यवाद' बातचीत के दौरान, रिहाना ने कहा, 'आई लव इंडिया और मैं फिर यहां आना पसंद करेंगी। एक अन्य वीडियो में डायमंड्स गायक को पोज़ देते हुए दिखाया गया है। एक अन्य वायरल क्लिप में रिहाना को सुरक्षाकर्मियों को गले लगाते और अलविदा कहते हुए भी देखा गया है। बता दें कि इस समय अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की प्री-वेडिंग पार्टी सितारों से सजी हुई है, जिसमें शाहरुख खान, सलमान खान, सिद्धार्थ मल्होत्रा, कियारा आडवाणी, सैफ अली खान, करीना कपूर खान, सारा अली खान, इब्राहिम अली, जान्हवी कपूर, मानुषी छिल्लर, रानी मुखर्जी, मनीष मल्होत्रा, अनन्या पांडे और आदित्य रॉय कपूर, रणबीर कपूर, आलिया भट्ट, नीतू कपूर, दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह सहित कई हस्तियां पार्टी में शामिल हो रही हैं।

वायुसेना के चार यूनिट को एक साथ मिलेगा प्रेसिडेंटस कलर

नई दिल्ली। ये पहला मौका है जब वायुसेना के चार यूनिट को एक साथ प्रेसिडेंटस कलर से सम्मानित किया जा रहा है। राष्ट्रपति राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु आठ मार्च को हिंडन वायुसेना स्टेशन में बल की चार यूनिट को राष्ट्रपति के मानक और रंग (कलर) पुरस्कार से सम्मानित करेंगी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु 45 स्क्वाड्रन व 221 स्क्वाड्रन को राष्ट्रपति मानक और 11 बेस रिपेयर डिपो व 509 सिग्नल यूनिट को राष्ट्रपति रंग पुरस्कार प्रदान करेंगी। राष्ट्रपति का मानक सम्मान 45 स्क्वाड्रन के कमांडिंग ऑफिसर ग्रुप कैप्टन एम सुरेंद्रन और 221 स्क्वाड्रन के कमांडिंग ऑफिसर ग्रुप कैप्टन शुभांकन प्राप्त करेंगे।वहीं, राष्ट्रपति रंग पुरस्कार 11 बेस रिपेयर डिपो के एयर ऑफिसर कमांडिंग एयर कमोडोर आशुतोष वैद्य और 509 सिग्नल यूनिट के कमांडिंग आफिसर ग्रुप कैप्टन विवेक शर्मा प्राप्त करेंगे। भारतीय वायुसेना के इतिहास में यह पहला अवसर होगा जब चार यूनिटों को एक साथ इन पुरस्कारों से सम्मानित किया जाएगा।राष्ट्रपति मानक और रंग पुरस्कार किसी भी सशस्त्र बल इकाई के लिए सर्वोच्च सैन्य सम्मान है। इन चयनित इकाइयों को यह सम्मान पिछले 25 वर्षों के दौरान उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए दिया गया है। यह पुरस्कार शांति और युद्ध, दोनों के दौरान इन इकाइयों की परिचालन उत्कृष्टता, समर्पण और प्रमाणित योगदान की एक स्वीकृति है।

लिव इन-रिलेशनशिप इस्लाम में हराम, महिला की याचिका खारिज

लखनऊ। इलाहाबाद हाईकोर्ट से लिव इन रिलेशनशिप में रह रही शादीशुदा मुस्लिम महिला की दायर याचिका खारिज कर दिया है। महिला ने जान को खतरा बताकर इलाहाबाद हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की। हाईकोर्ट ने याचिका को यह कहकर खारिज किया कि मुस्लिम लॉ के मुताबिक मुस्लिम महिला किसी के साथ लिव इन-रिलेशनशिप में नहीं रह सकती है। लिवइन को इस्लाम में हराम बताया गया है। न्यायमूर्ति रेनू अग्रवाल की पीठ ने विवाहित मुस्लिम महिला और उसके हिंदू लिव-इन पार्टनर द्वारा अपने पिता और अन्य रिश्तेदारों के खिलाफ अपनी जान को खतरा होने की आशंका से दायर सुरक्षा याचिका को खारिज करते हुए यह बात कही। न्यायालय ने कहा कि महिला के आपराधिक कृत्य को न्यायालय द्वारा समर्थन और संरक्षण नहीं दिया जा सकता। मुस्लिम कानून (शरीयत) के प्रावधानों का उल्लंघन करते हुए याचिकाकर्ता नंबर 2 के साथ रह रही है, जिसमें कानूनी रूप से विवाहित पत्नी बाहर जाकर शादी नहीं कर सकती है और मुस्लिम महिलाओं के इस कृत्य को ज़िना और हराम के रूप में परिभाषित है। यूपी के मुजफ्फरनगर जिले की एक महिला लिव इन रिलेशनशिप में अपने प्रेमी की साथ रह रही है। महिला पहले से शादीशुदा है। इसके बाबजूद वह इस समय लिव इन रिलेशनशिप में रह रही है। इस लिव इन रिलेशनशिप से परिवार में नाराजगी है। परिवार वाले के डर की वजह से महिला ने जान का खतरा जताकर हाईकोर्ट से सुरक्षा की गुहार लगाई थी, लेकिन कोर्ट ने मामले में सभी तथ्यों को समझने के बाद याचिकाकर्ता को सुरक्षा देने से मना कर दिया।

संघ नेता रुद्रेश की हत्या का आरोपी मोहम्मद गौस नियाजी दक्षिण अफ्रीका में पकड़ गया

नई दिल्ली। केंद्रीय जांच एजेंसियों को विदेशी धरती पर बड़ी कामयाबी मिली है। साउथ अफ्रीका में एनआईए का मोस्ट वांटेड मोहम्मद गौस नियाजी पकड़ा गया है। गौस चरमपंथी इस्लामी संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफा इंडिया (पीएफआई) का बड़ा चेहरा रहा है। एनआईए ने उस पर पांच लाख का इनाम रखा था। दरअसल, बेंगलुरु में 2016 में राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ (आरएसएस) नेता रुद्रेश की बड़ी बेरहमी के साथ हत्या कर दी गई थी। हत्या के बाद से नयाजी भारत से फरार हो गया था और अलग-अगल देशों में ठिकाना बनाया हुआ था।

राहुल गांधी को बम से उड़ाने की धमकी, अलर्ट मोड पर प्रशासन

- महाराष्ट्र के छह जिलों में राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा

नासिक (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी भारत जोड़ो न्याय यात्रा के मौके पर महाराष्ट्र के नासिक आएंगे. नासिक कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी के स्वागत की तैयारी की जा रही है. कुछ दिन पहले नासिक पुलिस को राजीव गांधी की तरह राहुल गांधी को बम से उड़ाने की कॉल आई थी. पुलिस ने इस मामले में एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है. जानकारी के अनुसार आठ दिन पहले नासिक पुलिस मुख्यालय को एक फोन कॉल आई थी जिसमें राहुल गांधी को दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की तरह बम से उड़ाने की धमकी दी गई थी. इस धमकी को गंभीरता से लेते हुए क्राइम ब्रांच, आतंकवाद निरोधी दस्ता और अन्य शाखाओं ने मामले की जांच की तो कॉल करने वाले शख्स के बारे में पता चला। शख्स नासिक के गंगापुर इलाके में रहता है और मानसिक बीमारी से पीड़ित है. नासिक पुलिस ने इसकी जानकारी केंद्रीय जांच एजेंसियों को दे दी है और पुलिस संबंधित व्यक्ति पर नजर रख रही है.

राहुल गांधी की सुरक्षा बढ़ाई गई

साथ ही शख्स पिछले दस साल से शराब पीने का आदी है. शख्स ने नशे की हालत में फोन किया था. इस मामले को गंभीरता से लिया गया है. पूरी रिपोर्ट केंद्रीय जांच एजेंसियों को भेज दी गई है. साथ ही राहुल गांधी के दौरे को लेकर उचित सावधानियां बरती जा रही हैं और सुरक्षा बढ़ा दी गई है.

महाराष्ट्र के छह जिलों में भारत जोड़ो न्याय यात्रा

इस बीच महाराष्ट्र में भारत जोड़ो न्याय यात्रा कुल 6 जिलों से होकर गुजरेगी. यह यात्रा मालेगांव से महाराष्ट्र में प्रवेश करेगी और नासिक होते हुए ठाणे में समाप्त होगी। भारत जोड़ो न्याय यात्रा 14 जनवरी से 20 मार्च तक 15 राज्यों से होकर गुजरेगी. इसमें 110 जिले, लगभग 100 लोकसभा सीटें और 337 विधानसभा क्षेत्र शामिल होंगे। इस यात्रा को पूरा करने में लगभग 66 दिन लगेंगे।

कालाराम मंदिर जाएंगे राहुल गांधी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने जनवरी में नासिक के कालाराम मंदिर का दौरा किया था। मोदी और ठाकरे द्वारा कालाराम मंदिर में महापूजा की गई थी। अब कांग्रेस नेता राहुल गांधी भी कालाराम मंदिर के दर्शन करने जा रहे हैं.

देश में उत्साह व्याप्त है, हर क्षेत्र में प्रगति हो रही : धनखड़

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि देश में उत्साह व्याप्त है और हर क्षेत्र में प्रगति हो रही हैं। श्री धनखड़ ने शनिवार को धारवाड़ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के छात्रों और अध्यापकों को संबोधित कर कहा कि भारत का उत्थान अजेय है। देश अभूतपूर्व गति से प्रगति कर रहा है। उपराष्ट्रपति ने विश्व बैंक और आईएमएफ जैसे वैश्विक संस्थानों के हालिया बयानों का उल्लेख किया और भारत को निवेश और अवसरों का पसंदीदा गंतव्य बताया। उन्होंने कहा, हम सदियों पहले दुनिया में नंबर एक देश थे और वर्ष 2047 में नंबर एक देश बनने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं को इसके लिए तैयारी करनी चाहिए। उपराष्ट्रपति ने आईआईटी धारवाड़ में मुख्य द्वार परिसर, ज्ञान संसाधन और डेटा केंद्र और सेंट्रल लर्निंग थिएटर का उद्घाटन किया। उन्होंने छत पर सौर पैनल सुविधा की आधारशिला भी रखी। इस मौके पर कर्नाटक के राज्यपाल थावर चंद गहलोत, संसदीय कार्य, कोयला एवं खान मंत्री प्रल्हाद जोशी और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। युवाओं को शासन और लोकतंत्र में सबसे महत्वपूर्ण पक्ष बताकर श्री धनखड़ ने उम्मीद जाहिर की कि युवा वह बदलाव लाएंगे जिसकी देश को जरूरत है। उन्होंने कहा कि कोई भी लोकतंत्र तब तक संपूर्ण नहीं है, जब तक कि कानून के समक्ष समानता न हो। कानून के समक्ष समानता के बिना व्यक्ति की गरिमा संभव नहीं है। जो लोग खुद को कानून से ऊपर मानते थे, उन्हें जवाबदेह ठहराया जा रहा है और वे यह समझ रहे हैं कि कानून के समक्ष समानता आज जमीनी हकीकत है।

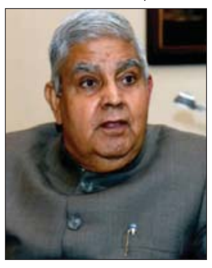

बेंगलुरु कैफे में किसने और कैसे किया धमाका

-इडली खाने के बहाने कैफे में घुसा और आईईडी बम लगाकर चला गया

बेंगलुरु, (एजेंसी)। बीते रोज रामेश्वरम कैफे में हुए धमाके की जांच एजेंसियां कर रही है। सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहा है। आरोपी की तलाश में करीब दो दर्जन लोगों से पूछताछ की गई है। जांच में अब तक जो सामने आया है,उसके मुताबिक आरोपी कैफे में घुसा उसने इडली का ऑर्डर दिया और साथ लाए बैग में बम का टाइमर लगाकर चलते बना। बता दें कि धमाका उस वक्त हुआ था जब लंच का समय था और लोग बेंगलुरु के लोकप्रिय रामेश्वरम कैफे में मजे से खाना खा रहे थे, तभी एकदम से धमाका हुआ और 9 लोग जख्मी हो गए। विस्फोट के बाद जांचकर्ता सीसीटीवी फुटेज से सुराग ढूंढ रहे हैं।

मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने कहा कि व्हाइटफील्ड में लोकप्रिय रामेश्वरम कैफे में हुए विस्फोट की वजह और प्रकृति का पता लगाने के लिए जांच की जा रही है तथा आशंका है कि 'आईईडी' से यह विस्फोट हुआ है। उन्होंने कहा कि इस घटना पर राजनीति नहीं होनी चाहिए तथा सभी को सहयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जो लोग इसमें शामिल होंगे, उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। वहीं इस घटना के संबंध में कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने कहा कि संदिग्ध की पहचान 28 से 30 साल के व्यक्ति के रूप में की गई है जिसने टोपी पहन रखी है और बैग कंधे पर लेकर जाते ही वीडियो में दिखाई दे रहा है। वह नाश्ते के समय कैफे में आया और रवा इडली के लिए एक कूपन खरीदा, लेकिन इडली खाए बिना ही कैफे से चला गया। आईईडी वाला बैग वह वहीं छोड़ गया था, जिसमें एक बम को एक घंटे का टाइमर लगाकर छोड़ रखा था। इसके एक घंटे बाद ही धमाका हो गया। कैफे के बाहर अपनी बारी का इंतजार कर रहे एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि उसने ब्लास्ट की तेज आवाज सुनी। उस समय वहां 40 के करीब लोग अंदर मौजूद थे और वे सभी बाहर भागने लगे जिससे अफरा-तफरी मच गई। उस समय सभी ने कहा कि सिलेंडर ब्लास्ट हुआ है। प्रत्यक्षदर्शी ने कहा कि इसके बाद जल्द ही एक एम्बुलेंस और एक दमकल गाड़ी घटनास्थल पर पहुंची और बचाव अभियान शुरू हुआ।फिलहाल अभी तक संदिग्ध का पता नहीं चल पाया है।

राज्यों को राशि आवंटित करने में केंद्र कर रहा धोखा

-तमिलनाडु कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष सेल्वापेरुन्थागई ने कहा, तानाशाह की तरह काम कर रहे हैं पीएम मोदी

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु कांग्रेस कमेटी (टीएनसीसी) अध्यक्ष सेल्वापेरुन्थागई ने अपने एक बयान में कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के गठन के बाद से ही राज्यों के अधिकार छीन लिए गए हैं। धीरे-धीरे राज्यों की शक्ति भी केंद्र के हाथों में जाती जा रही है। यह लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

तमिलनाडु प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सेल्वापेरुन्थागई ने अपने बयान में कहा है कि पीएम मोदी तानाशाह की तरह काम करते नजर आ रहे हैं। उन्होंने सूचना के अधिकार से प्राप्त जानकारी का हवाला देते हुए कहा है कि केंद्र सरकार द्वारा राज्यों को आवंटित कुल धनराशि 1 लाख, 42 हजार करोड़ रुपये है। साल 2011 की जनगणना के मुताबिक 20 करोड़ की आबादी वाले उत्तर प्रदेश को 25,495 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं वहीं दूसरी तरफ तमिलनाडु को मात्र 5,097 करोड़ रुपये ही आवंटित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु समेत आंध्र प्रदेश, केरल, तेलंगाना और कर्नाटक की कुल आबादी 25 करोड़ है। हालाँकि, केंद्र द्वारा कुल आवंटित राशि 21,755 करोड़ रुपये है। इस प्रकार उत्तर प्रदेश को आवंटित राशि का 89 प्रतिशत हिस्सा ही दक्षिणी राज्यों को आवंटित किया जाता है। इस तरह भाजपा राजनीतिक मकसद से दक्षिणी राज्यों को धोखा दे रही है, इसके लिए किसी अन्य सबूत की आवश्यकता भी नहीं है। वैसे भी राज्यों के अधिकारों को केंद्र सरकार धीरे-धीरे अपने हाथों में लेती जा रही है, यह लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा है। उन्होंने कहा कि इसके खिलाफ सभी को एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दो दिवसीय दौरे को लेकर टीएनसीसी अध्यक्ष सेल्वापेरुन्थागई बयान देते हुए कहा था कि यहां पर कभी कमल नहीं खिल सकता। सांप्रदायिक ताकतों के लिए यहां कोई जगह नहीं है।

बीजू पटनायक को भारत रत्न देकर क्या ओडिशा में बीजेडी से गठबंधन करेगी भाजपा

भुवनेश्वर (एजेंसी)। 2024 के आम चुनावों की तारीखों की घोषणा में अब कुछ ही समय शेष है। देश के सभी हिस्सों की सियासत तेज हो गई है। ओडिशा में भी अटकलों का बाजार गर्म है। ओडिशा में कई लोग यह सवाल पूछ रहे हैं कि क्या बीजू जनता दल (बीजेडी) और प्रमुख विपक्षी भारतीय जनता पार्टी के बीच चुनाव पूर्व गठबंधन होगा? सवाल अजीब है, लेकिन दोनों तरफ से अभी तक कोई ठोस जवाब भी नहीं मिला है।

ओडिशा में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ होने जा रहे हैं। चर्चा है कि बीजेडी और भाजपा समझौता गठबंधन में दोनों चुनावों का सामना करेगी। 1997 से लेकर 11 वर्षों तक दोनों का गठबंधन था। नवीन पटनायक सीएम बनने से पहले पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में केंद्रीय मंत्री थे।

2024 और 1997 की सियासी तस्वीर काफी जुदा है। लोकसभा हो या विधानसभा, भाजपा ने कांग्रेस को तीसरे स्थान पर धकेल दिया है और राज्य में विपक्षी दल के रूप में उभरी है। यदि बीजेडी और भाजपा का गठबंधन होता है कि विपक्ष की जगह पूरी तरह से कांग्रेस के लिए खाली हो जाएगी। साथ ही, भाजपा पांच बार के मुख्यमंत्री पटनायक को चुनौती देने वाली बीजेडी का विकल्प होने का दावा नहीं कर सकती है। कुछ दिन पहले भाजपा नेता विजयपाल सिंह तोमर ने बीजेडी के साथ गठबंधन होगा के सवाल पर कहा था, मैं अभी इसका जवाब नहीं दे सकता हूं। हालांकि हम सभी सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार हैं। उनके इस बयान के बाद अटकलों का बाजार काफी गर्म हो गया है। हालांकि, ओडिशा भाजपा प्रमुख ने गठबंधन से इंकार कहा कि पार्टी राज्य की सभी लोकसभा और विधानसभा सीटों पर अकेले चुनाव लड़ेगी।

इस बार क्रिकेटर गौतम गंभीर नहीं लड़ेंगे लोकसभा चुनाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिकेटर गौतम गंभीर इस बार का लोकसभा चुनाव नहीं लड़ेंगे। उन्होंने इस संबंध में पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा से बातचीत की है। जानकारी के अनुसार बीजेपी सांसद और क्रिकेटर गौतम गंभीर ने भाजपा प्रमुख जेपी नड्डा से उन्हें राजनीतिक कर्तव्यों से मुक्त करने का आग्रह किया। इसे लेकर उन्होंने खुद ऐलान किया है। गौतम गंभीर ने ट्वीट करते हुए कहा कि मैंने पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुझे अपने राजनीतिक कर्तव्यों से मुक्त करने का अनुरोध किया है ताकि मैं अपनी आगामी क्रिकेट प्रतिबद्धताओं पर ध्यान केंद्रित कर सकूं। मुझे लोगों की सेवा करने का अवसर देने के लिए मैं पीएम नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमितशाह को ईमानदारी से धन्यवाद देता हूं। जय हिन्द। क्रिकेटर गौतम गंभीर ने ट्विटर पर खुलासा किया कि वह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 की शुरुआत से पहले क्रिकेट पर ध्यान केंद्रित करने के लिए राजनीति से दूर जाना चाहते हैं। गौरतलब है कि गंभीर पूर्वी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा सांसद हैं। राजनीति छोड़ने का उनका फैसला उन अफवाहों के बीच आया है कि उन्हें आगामी लोकसभा चुनाव के लिए अपनी पार्टी से टिकट नहीं मिल सकता है। भारत के पूर्व क्रिकेटर गंभीर आईपीएल 2024 में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के मेंटर के रूप में काम करने के लिए तैयार हैं और वह अपना सारा ध्यान अपनी पूर्व फ्रेंचाइजी के साथ अपनी नौकरी पर लगाना चाहते हैं।

खरगे और जयराम रमेश पर भड़के नितिन गडकरी, नोटिस भेजकर बोले माफी मांगें

नागपुर (एजेंसी)। कांग्रेस के एक्स हैंडल से किए गए एक पोस्ट पर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी भड़क गए हैं। उन्होंने नाराजगी व्यक्त करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकाअर्जुन खड़गे और जयराम रमेश को नोटिश भेजकर माफी मांगने को कहा है। दरअसल, कांग्रेस ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल से गडकरी के इंटरव्यू के एक अंश को लिखते हुए कहा, आज गांव, गरीब, मजदूर और किसान दुखी हैं। गावों में अच्छे रोड नहीं, पीने के लिए शुद्ध पानी नहीं, अच्छे अस्पताल नहीं, अच्छे स्कूल नहीं हैं। मोदी सरकार के मंत्री नितिन गडकरी। केंद्रीय मंत्री ने इसी को लेकर नोटिस भेजा है।

इस मामले में केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश को कानूनी नोटिस भेजकर उनके बयान से छेड़छाड़ कर लोगों को गुमराह करने के लिए माफी मांगने को कहा है। गडकरी के वकील बालेंदु शेखर ने कहा कि उनके मुवक्किल माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म एक्स पर कांग्रेस के आधिकारिक हैंडल से सामग्री और पोस्ट के बारे में जानकर, सुनकर और देखकर हैरान रह गए। वकील ने कहा, खरगे और रमेश ने जानबूझकर एक एक समाचार पोर्टल को दिए गए गडकरी के इंटरव्यू की 19 सेकंड की वीडियो क्लिप पोस्ट की, जिसमें उनके शब्दों के प्रासंगिक इरादे और अर्थ को छुपाया गया।

नोटिस में कहा गया है कि जनता की नजरों में गडकरी के प्रति भ्रम, सनसनी और बदनामी पैदा करने के एकमात्र इरादे और गुप्त उद्देश्य से एक भयावह कृत्य किया गया है। इसमें आगे कहा गया है कि यह भारतीय जनता पार्टी की एकजुटता में दरार पैदा करने का एक निरर्थक प्रयास भी है, जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आगामी आम चुनाव में लोगों का विश्वास जीतने के लिए तैयार है।नोटिस में आगे कहा गया है कि नितिन गडकरी के इंटरव्यू को तोड़-मरोड़कर पेश किया गया और उस वीडियो को अपलोड करके दर्शाया गया जो प्रासंगिक अर्थ से परे है।

लालू की राहुल गांधी का नसीहत, यात्रा को छोड़कर सीट बंटबारे में ध्यान दें

-नीतिश खुद हमारे पास आते हैं, हम नहीं जाते

पटना (एजेंसी)। राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व केंद्रीय मंत्री लालू प्रसाद यादव ने लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन में अब तक सीटों का बंटवारा नहीं होने को लेकर नाराजगी जाहिर की है। लालू ने कांग्रेस से कहा है कि अब समय नहीं बचा है, सीटों का बंटवारा कर चुनाव की तैयारी शुरू करनी चाहिए। इतना ही नहीं लालू यादव ने कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को नसीहत देकर कहा है कि राहुल गांधी को भारत जोड़ो यात्रा पर भी विचार करना चाहिए और घूमना फिरना बंद कर अब लोगों को इकट्ठा करने की रणनीति बनानी चाहिए।

लालू ने ये बातें एक मीडिया संस्थान को दिए अपने इंटरव्यू में कही हैं। लालू ने इंडिया गठबंधन की भूमिका को लेकर बेबाकी से अपनी बातें रखीं। नीतीश कुमार द्वारा महागठबंधन छोड़ने को लेकर पूछे सवाल पर लालू ने कहा कि जो लोग निकल गए वह गए, लेकिन जनता महागठबंधन से नहीं निकली है। जनता अब भी विपक्षी गठबंधन के साथ है। लालू ने दावा किया कि बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी इंडिया गठबंधन के साथ है और वह अलग नहीं होगीं। ममता अगला लोकसभा लोकसभा चुनाव इंडिया गठबंधन के साथ ही लड़ेंगी। राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर लालू ने कहा कि ये सारी चीजें करनी पड़तीं हैं, केवल बैठने से काम नहीं चलने वाला है। वैसे उन्होंने राहुल को अपनी यात्रा खत्म कर सीट बंटवारे पर भी काम करने की सलाह दी। मुख्यमंत्री नीतीश के एनडीए में वापसी पर लालू ने दो टूक शब्दों में कहा कि हम लोग उनके पास नहीं जाते हैं, बल्कि वह खुद बार-बार हमारे पास चले आते हैं।

लालू ने कहा कि वह कभी सांप्रदायिकता के सामने नहीं झुके और नहीं उनके साथ कभी खड़े रहे। उन्होंने कहा कि तेजस्वी यादव भी ऐसा ही करेगा। लालू यादव ने दावा किया कि 2024 का लोकसभा चुनाव नरेंद्र मोदी नहीं जीत पाएंगे। उनका दावा है कि इस बार इंडिया गठबंधन की जीत तय है।

पीपीपी के सरफराज बुगती को बलूचिस्तान का मुख्यमंत्री चुना गया

कराची, । पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के सरफराज बुगती को शनिवार को अशांत बलूचिस्तान प्रांत का नया मुख्यमंत्री निर्विरोध चुन लिया गया। बुगती ने आठ फरवरी को हुए आम चुनाव में पीपीपी के टिकट पर प्रांतीय विधानसभा का चुनाव लड़ने के लिए अंतरिम सरकार में कार्यवाहक गृह मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था। बुगती ने शुक्रवार को असेंबली के सचिव ताहिर शाह को अपना नामांकन पत्र सौंपा था। उन्हें पाकिस्तान मुस्लिम लीग–नवाज (पीएमएल–एन) का भी समर्थन प्राप्त है। शुक्रवार शाम पांच बजे तक किसी अन्य उम्मीदवार ने नामांकन पत्र दाखिल नहीं किया जिसके बाद बुगती को निर्विरोध विजेता घोषित कर दिया गया। बुगती को नए मुख्यमंत्री के रूप में कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा क्योंकि यह प्रांत अक्सर आतंकवाद और अलगाववादी हिंसा की चपेट में रहता है। आठ फरवरी को हुए आम चुनाव के बाद पीपीपी बलूचिस्तान में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और प्रांत में पीएमएल–एन तथा बलूच आवामी पार्टी के साथ गठबंधन सरकार बनायी। बलूचिस्तान जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक–ए–इंसाफ (पीटीआई) की अगुवाई वाली सरकार में 2018 से 2022 तक बलूचिस्तान में सूचना मंत्री भी रहे।

सोशल मीडिया से जुड़े विधायक पर फ्लोरिडा में लगा वीटो

वाशिंगटन । अमेरिका के फ्लोरिडा में उस विधेयक को वीटो किया गया है, जो 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगाता है। फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस ने इसकी जानकारी दी है। श्री डेसेंटिस ने नाबालिगों के लिए ऑनलाइन सुरक्षा विधेयक के संबंध में कहा, मैंने एचबी 1 को वीटो कर दिया है क्योंकि विधायिका एक अलग, बेहतर विधेयक पेश करने वाली है। उन्होंने बताया कि बच्चों को सोशल मीडिया से जुड़े नुकसान से बचाना होगा है, लेकिन माता–पिता के अधिकारों का समर्थन करना और गुमनाम भाषण में शामिल होने की वयस्कों की क्षमता को बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है। गर्वनर ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि नया विधेयक इन प्राथमिकताओं को मान्यता देगा और जल्द ही कानून में हस्ताक्षरित किया जाएगा।

मिस्र ने रमजान के दौरान गाजा में युद्धविराम का किया आह्वान

अंकारा । मिस्र के विदेश मंत्री समेह शौकरी ने इस साल 11 मार्च के आसपास शुरू होने वाले रमजान के पवित्र महीने से पहले गाजा में संघर्ष विराम का आह्वान किया। श्री शौकरी ने कहा, मेरा मानना है कि हर कोई मानता है कि फिलिस्तीनियों की सुरक्षा के लिए और इसकी धार्मिक प्रकृति के कारण रमजान से पहले युद्धविराम तक पहुंचना आवश्यक है। उन्होंने जोर दिया कि रमजान के दौरान सैन्य कार्रवाइयों से न केवल गाजा और वेस्ट बैंक में नागरिक प्रभावित हो रहे है। बल्कि अरब और मुस्लिम जगत में भी तनावपूर्ण माहौल पैदा होगा। उन्होंने कहा कि ऐसी योजना पर चर्चा करना उचित नहीं है, जो इजरायल को नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए सैन्य अभियान चलाने की अनुमति देगी। श्री शौगरी यहां अंताल्या डिप्लोमेसी फोरम में भाग लेने आए हैं। यह फोरम दुनिया भर के 147 देशों के प्रतिनिधियों की मेजबानी करता है।

बाइडेन का ऐलान, गाजा में जल्द पहुंचेगी मानवीय सहायता

वाशिंगटन । अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि अमेरिका जल्द ही गाजा में हवाई मार्ग से मानवीय सहायता पहुंचाना शुरू करेगा। बाइडन का बयान उस समय में आया है जब एक दिन पहले ही इजराइली सैनिकों के साथ हुई एक भीषण मुठभेड़ के दौरान कई फलस्तीनी नागरिकों की मौत हो गई थी। बाइडन ने कहा कि आने वाले दिनों में गाजा में विमानों के द्वारा लोगों को मानवीय सहायता पहुंचेगी। गाजा में एक मानवीय सहायता काफिले से खाद्य सामग्री लेने की कोशिश कर रहे फलस्तीनियों की एक भीड़ पर इजराइली सैनिकों की गोलीबारी में 100 से अधिक लोग मारे गए थे और 700 से अधिक घायल हुए थे।

यूएई में बना पहला हिंदु मंदिर जनता के लिए खुला

अबू धाबी । संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के पत्थर से निर्मित पहले हिंदू मंदिर को आम जनता के लिए खोल दिया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 14 फरवरी को अबू धाबी के इस पहले हिंदू मंदिर का उद्घाटन किया था। मंदिर दुबई–अबू धाबी शेख जायद राजमार्ग पर अल राहबा के पास 27 एकड़ क्षेत्र में लगभग 700 करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है। मंदिर के लिए जमीन यूएई सरकार ने दान में दी है। अबू धाबी के पहले हिंदू मंदिर का निर्माण नागर शैली में हुआ है। इसी शैली में अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण किया गया है। मंदिर में स्वंयसेवक उमेश राजा के अनुसार, 20 हजार टन से अधिक चूना पत्थर के टुकड़ों को राजस्थान में तराशा गया और 700 कंटेनर में अबू धाबी लाया गया। बोचासनवासी श्री अक्षर पुरूषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीएपीएस) ने कहा, ''प्रतीक्षा समाप्त हुई! अबू धाबी मंदिर को अब सभी आगंतुकों और श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया गया है। इसमें उल्लेख किया गया है कि मंदिर सोमवार को छोड़कर सभी दिन सुबह नौ बजे से रात आठ बजे तक खुला रहेगा।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा में भारत का प्रस्ताव स्वीकार

नैरोबी । संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा (यूएनईए) ने केन्या के नैरोबी में सतत जीवन शैली से संबंधित भारत के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय के मुताबिक सभा में हिस्सा लेने वाले सदस्य देशों ने उस प्रस्ताव को अपनाया जो श्रीलंका और बोलीविया द्वारा सह–प्रायोजित था। यूएनईए का छठा सत्र छह फरवरी को शुरू हुआ था और शुक्रवार को इसका समापन हुआ। प्रस्ताव सतत विकास के तीन आयामों की उपलब्धि में योगदान देने के लिए स्थायी जीवन शैली के प्रति व्यावहारिक परिवर्तनों की क्षमता को मान्यता देता है।

राजीव गांधी के हत्यारे संथन का शव श्रीलंका पहुंचा

कोलंबो । भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या के मामले में दोषियों में शामिल संथन का शव अंतिम संस्कार के लिए श्रीलंका लाया गया। दो दिन पहले चेन्नई के एक अस्पताल में हृदय के अचानक काम करना बंद करने (कार्डियक अरेस्ट) से उसकी मौत हो गई थी। श्रीलंका निवासी संथन उर्फ टी सुथेन्डिरराजा (55) उन सात लोगों में से एक था, जिन्हें सुप्रीम कोर्ट ने 2022 में रिहा कर दिया था, क्योंकि वे लोग 1991 में श्रीपेरम्बुदुर में गांधी की हुई हत्या के सिलसिले में 20 साल से अधिक समय जेल में गुजार चुके थे। सूत्र ने कहा, श्रीलंकाई एयरलाइंस की उड़ान यूएल 122 से दोपहर को उसका शव यहां लाया गया। उसके कई रिश्तेदार उसका शव ग्रहण करने के लिए हवाई अड्डे पर मौजूद थे।'' संथन के वकील पुगाझेंधी ने बताया कि उसके शव को श्रीलंका में उसके घर ले जाया जाएगा।

26/11 मुंबई हमले के मुख्य साजिशकर्ता आजम चीमा की मौत

करांची । 26/11 मुंबई आतंकी हमले के मुख्य साजिशकर्ता आजम चीमा की पाकिस्तान में मौत हो गई है। सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि लश्कर के खुफिया प्रमुख आजम चीमा (70) की फैसलाबाद में दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई। पाकिस्तान ने भारतीय एजेंसियों पर कई लश्कर आतंकियों की हत्याओं के पीछे होने का आरोप लगाया है, हालांकि भारत ने इस आरोप से इनकार किया है। हालांकि नई दिल्ली ने कहा कि वह ऐसी कोई हत्या सूची नहीं रखती है, अगर वास्तव में कोई सूची होती तो चीमा जेयूडी प्रमुख हाफिज सईद और जेईएम प्रमुख मौलाना मसूद अज़हर के साथ शीर्ष पर होते। बता दें कि चीमा 26/11 के आतंकवादी हमलों और जुलाई 2006 के मुंबई ट्रेन बम विस्फोटों के अलावा भारत में कई अन्य आतंकवादी हमलों के मुख्य साजिशकर्ताओं में से एक था। भारतीय एजेंसियों के लिए, उसकी मौत की खबर केवल नामित आतंकवादी की मौजूदगी भर है, जबकि इस्लामाबाद इसके लिए बार–बार इनकार करता था।

ब्यूनस आयर्स में राष्ट्रपति जैवियर मैली की आर्थिक नीतियों के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए लोग।

रूस नहीं करेगा अंतरिक्ष में परमाणु हथियारों की तैनाती : पुतिन

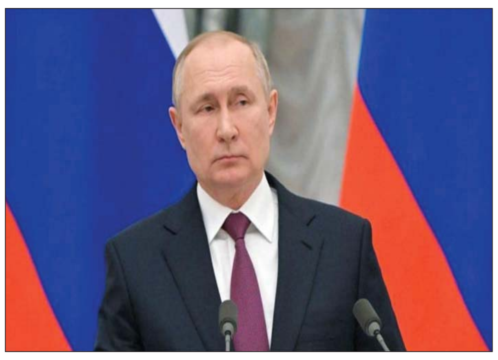

मॉस्को । रूस अंतरिक्ष परमाणु हथियारों की तैनाती में नहीं करेगा। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने देश के सुरक्षा परिषद के सदस्यों के साथ बैठक में कहा कि रूस की अंतरिक्ष में परमाणु हथियार तैनात करने की फिलहाल कोई योजना नहीं है। एक रिपोर्ट में शुक्रवार को राष्ट्रपति का हवाला देते हुए कहा कि हम पहले ही अंतरिक्ष में परमाणु हथियार तैनात करने की हमारी कथित योजनाओं के बारे में कुछ पश्चिमी अधिकारियों द्वारा लगाए जा रहे झूठे आरोपों पर चर्चा कर चुके हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक गुरुवार को अपने वार्षिक स्टेट ऑफ द नेशन संबोधन में पुतिन ने ऐसे आरोपों को निराधार और फर्जी करार दिया हैं। गौरतलब है कि उनका यह बयान पश्चिमी मीडिया की उन रिपोर्टों के बाद आया है, जिसमें दावा किया गया है कि अमेरिकी खुफिया डेटा से पता चला है कि रूस अंतरिक्ष में परमाणु हथियार तैनात करने की तैयारी कर रहा है।

नहीं सुधर रहे खालिस्तानी, भारतीय दूत की उपस्थिति वाले कार्यक्रम को एसएफजे ने की बाधित करने की कोशिश

ओटावा (एजेंसी)। ओटावा में भारत के उच्चायुक्त संजय कुमार वर्मा ने शुक्रवार शाम तनावपूर्ण परिस्थितियों में ब्रिटिश कोलंबिया में एक स्थानीय व्यापार मंडल के साथ बैठक की, क्योंकि कार्यक्रम का विरोध कर रहे खालिस्तान समर्थक तत्वों ने कार्यक्रम स्थल को घेर लिया था। पिछले साल 18 जून को ब्रिटिश कोलंबिया शहर में खालिस्तान समर्थक हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के बाद वर्मा की सरे की यह पहली यात्रा थी।

इस कार्यक्रम को निशाना बनाया गया क्योंकि प्रदर्शनकारियों ने इसे आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास किया, लेकिन इसके समापन के बाद, वर्मा ने इस कार्यक्रम को सफल बताया। उन्होंने बाहर विरोध प्रदर्शन के बारे में कहा कि नारेबाजी अपेक्षित तर्ज पर थी। गालियां दी गईं। तिरंगे का अपमान किया गया। हमारी वैश्विक अर्थव्यवस्था का भविष्य एक साथ शीर्षक वाला कार्यक्रम सरे बोर्ड ऑफ ट्रेड (एसबीओटी) और साउथ एशियन बिजनेस एसोसिएशन (एसएबीए) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था।

शाम 6 बजे के निर्धारित समय से आधे घंटे पहले लगभग 500 की संख्या में कई प्रदर्शनकारी होटल के बाहर जमा हो गए, उसे घेर लिया और उसके प्रवेश द्वारों को अवरुद्ध कर दिया। कई लोग नकाबपोश थे। विरोध प्रदर्शन से पहले प्रसारित किए गए फ़्लायर्स ने उन्हें भारतीय निगरानी से बचने के लिए ऐसा करने की चेतावनी दी थी। उनके हाथों में खालिस्तान के झंडे थे और अलगाववादी नारे लगाए गए।

अमेरिका के लोगों को चाहिए मोदी जैसा नेता

वॉशिंगटन (एजेंसी)। एक बड़े अमेरिकी बिजनेसमैन ने ख्वाहिश जताई है कि काश अमेरिका में भी पीएम मोदी जैसा कोई नेता होता। इस अमेरिकी बिजनेसमैन का नाम जॉन चैंबर्स है। जॉन चैंबर्स यूएस-इंडिया स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप फोरम के अध्यक्ष हैं। चैंबर्स ने पीएम मोदी की प्रशंसा करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन की अनुमोदन रेटिंग 50फीसदी से कम बताई।जॉन चैंबर्स ने कहा, भारत का दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना तय है। उन्होंने यह भी कहा कि एक दशक से अधिक समय में भारत की अर्थव्यवस्था चीन से 90फीसदी बड़ी हो जाएगी। भारत के शीर्ष पर पहुंचने का एक कारण उसकी जोखिम लेने की इच्छा है। उन्होंने कहा, कुछ साल पहले ऐसी स्थिति नहीं थी। चैंबर्स के मुताबिक, यह पीएम मोदी के प्रभाव के कारण है। उन्होंने यह भी कहा कि वह सात साल से कुछ भारतीय कंपनियों सहित आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर दांव लगा रहे हैं। इस प्रोद्योगिकी का दुनिया पर सकारात्मक असर पड़ेगा और इससे प्रत्येक नागरिक लाभान्वित होगा।

अमेरिकी टेक जगत की शख्सियत जॉन चैंबर्स ने कहा, आपके प्रधानमंत्री के बारे में जाहिर तौर पर मैं उनका बहुत बड़ा प्रशंसक हूं। मुझे लगता है कि वह आज दुनिया के सबसे अच्छे नेता हैं। और मेरी इच्छा है कि हमारे पास अमेरिका में भी ऐसा कोई हो। हमें ऐसा कोई राजनीतिक नेता नहीं मिला जिसकी अनुमोदन रेटिंग 50फीसदी से अधिक हो, और पीएम मोदी की 76फीसदी है।

भारत पर थाईलैंड ने डब्ल्यूटीओ में उगला जहर, अब चुकानी पड़ी कीमत

थाईलैंड ने डब्ल्यूटीओ से अपने राजदूत को वापस बुला लिया है और इसकी वजह भारत है। दरअसल, डब्ल्यूटीओ में थाईलैंड की राजदूत पिटफील्ड ने एक बड़ा आरोप लगाते हुए कहा था कि भारत सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के जरिए सस्ती दर पर चावल खरीद कर अंतरराष्ट्रीय चावल निर्यात पर कब्जा कर रहा है। थाईलैंड के इस आरोपों पर भारत ने डब्ल्यूटीओ के सामने कड़ी आपत्ति जताई थी। भारत द्वारा अपने खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम के लिए खरीदे गए चावल का निर्यात करने का आरोप लगाने वाली उनकी टिप्पणियों पर भारत द्वारा कड़ा विरोध दर्ज कराए जाने के बाद थाईलैंड ने विश्व व्यापार संगठन में अपने राजदूत पिमचानोक वॉनकोर्पोन पिटफील्ड को वापस बुला लिया। 29 फरवरी को डब्ल्यूटीओ की बैठक के दौरान पिटफील्ड ने परोक्ष रूप से दावा किया कि भारत ने खाद्य सुरक्षा प्रयासों को वैश्विक व्यापार में अनुचित लाभ प्राप्त करने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया है। भारतीय प्रतिनिधियों ने इन आरोपों का जोरदार खंडन किया और उन्हें तथ्यात्मक रूप से गलत और अपमानजनक बताया। भारत ने पिटफील्ड की टिप्पणियों पर निराशा व्यक्त करते हुए थाई सरकार के समक्ष कड़ा विरोध दर्ज कराया। भारतीय वार्ताकारों ने अस्वीकृति के संकेत के रूप में डब्ल्यूटीओ में थाई प्रतिनिधियों के साथ बैठक का बहिष्कार किया। भारत के तीव्र विरोध का सामना करते हुए, थाईलैंड ने पिटफील्ड को हटाकर देश के विदेश सचिव को नियुक्त कर दिया। इस विवाद के मूल में भारत और विकसित देशों के बीच लंबे समय से चली आ रही असहमति है, जो सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के माध्यम से चलने वाले भारत के खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।

पाकिस्तान में नौ मार्च को होगा राष्ट्रपति चुनाव

–पूर्व राष्ट्रपति जरदारी का फिर चुना जाना तय

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के निर्वाचन आयोग ने घोषणा की कि राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान नौ मार्च को होगा, जिसमें पूर्व राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी का लगभग 11 साल बाद फिर से राष्ट्रपति बनाना लगभग तय है। नए राष्ट्रपति मौजूदा राष्ट्रपति डॉ. आरिफ अल्वी का स्थान लेने वाले है। जिनका पांच साल का कार्यकाल पिछले साल समाप्त हो गया था। हालाँकि, वे पद पर बने हुए हैं, क्योंकि नए निर्वाचक मंडल का गठन अभी तक नहीं हुआ है। पाकिस्तान निर्वाचन आयोग (ईसीपी) ने कहा कि राष्ट्रपति चुनाव नौ मार्च को नेशनल असेंबली और सभी प्रांतीय असेंबली में सुबह 10 बजे से शाम चार बजे तक होगा। ईसीपी ने कहा कि अधिकारियों द्वारा नामांकन पत्रों की छंटनी चार मार्च को की जाएगी, और इसके अगले दिन नाम वापस लिया जा सकता है। पूर्व राष्ट्रपति जरदारी को पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के नेता शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाले छह दलों के गठबंधन द्वारा शीर्ष पद के लिए नामित किया गया है। इससे जरदारी की जीत लगभग तय मानी जा रही है। गठबंधन में पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन), पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) और मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट-पाकिस्तान (एमक्यूएम-पी) सहित अन्य दल शामिल हैं। पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत बेनजीर भुट्टो के पति जरदारी सितंबर 2008 से 2013 तक देश के राष्ट्रपति रह चुके हैं।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री सुनक की चरमपंथी ताकतों को चेतावनी, देश को तोड़ने की कोशिश ना करे

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने देश के नागरिकों से लोकतंत्र को बचाने के लिए अपील की। उन्होंने चेतावनी देकर कहा कि चरमपंथी ताकतें देश को तोड़ने और इसकी बहु-धार्मिक पहचान को कमजोर करने के लिए तैयार रहती हैं। पीएम सुनक ने कहा कि जो लोग वीजा पर हैं, अगर उन्होंने नफरत फैलाने की कोशिश की, तब उनका वीजा रद्द किया जाएगा। उन्होंने प्रदर्शनकारियों से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि शांतिपूर्ण प्रदर्शनों को चरमपंथी ताकतों द्वारा अपहरण न किया जाए। अपनी हिंदू मान्यताओं का जिक्र करते हुए, सुनक ने कहा कि यूनाइटेड किंगडम के स्थायी मूल्य सभी धर्मों और जातियों के प्रवासियों को गले लगाना सिखाते हैं।

पीएम सुनक ने कहा कि आप मेरी तरह एक हिंदू और एक गौरवान्वित ब्रिटिश व्यक्ति हो सकते हैं, एक धर्मनिष्ठ मुस्लिम और एक देशभक्त नागरिक हो सकते

हैं, जैसा कि बहुत से लोग हैं या एक लगन से काम करने वाले यहूदी व्यक्ति और अपने स्थानीय समुदाय का केंद्र हो सकते हैं और यह सब हमारे ईसाई चर्च की सहिष्णुता पर आधारित है। लेकिन मुझे डर है कि दुनिया के सबसे सफल एक से ज्यादा जाति और आस्था वाले लोकतंत्र के निर्माण में हमारी उपलब्धि को जानबूझकर कमजोर किया जा रहा है। देश के अंदर कुछ ताकतें हैं, जो हमें तोड़ने की कोशिश कर रही हैं।

सुनक, रोशडेल उपचुनाव में फिलिस्तीन समर्थक जॉर्ज गैलोवे की जीत के बाद यह स्पीच दे रहे थे। उन्होंने कहा कि हाल ही में कई मौकों पर, ब्रिटेन की सड़कों पर छोटे समूहों ने कब्जा कर लिया है, जो ब्रिटिश मूल्यों के दुश्मन हैं और इसकी लोकतांत्रिक परंपराओं का सम्मान नहीं करते हैं।

उन्होंने कहा कि मैं यहां हमारे देश के पहले अश्वेत प्रधानमंत्री के रूप में खड़ा हूं, जो हमारे देश के इतिहास में सबको साथ लेकर चलने वाली सरकार का नेतृत्व कर रहा है। इससे सभी जातियों, सभी धर्मों और सभी बैकग्राउंड के लोगों को पता चल रहा है कि यह आपकी त्वचा का रंग नहीं है, यह उस भगवान का रंग नहीं है, जिस पर आप विश्वास करते हैं। आपकी सफलता इससे नहीं तय होगी कि आप कहां पैदा हुए हैं, सिर्फ आपकी कड़ी मेहनत और कोशिश आपको कामयाब करेगी।

बाइडेन की फिर फिसली जुबान, गाजा की जगह कह दिया यूक्रेन में हवाई जहाज से भोजन और राहत सामग्री गिराई जाएगी

इस्लामाबाद (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन की एक बार फिर कैमरे पर जुबान फिसल गई। जब उन्होंने कहा कि अमेरिका यूक्रेन में भोजन और आपूर्ति हवाई जहाज से गिराएगा, जबकि उनका वास्तव में मतलब गाजा पट्टी से था। बाइडेन ने यह टिप्पणी इटली की प्रधान मंत्री जियोर्जिया मेलोनी के साथ की। बाद में व्हाइट हाउस के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने पत्रकारों को स्पष्ट किया कि जो बिडेन अपने संबोधन में गाजा का जिक्र कर रहे थे। अमेरिकी राष्ट्रपति ने अपने भाषण में दो बार यूक्रेन का जिक्र किया। बाइडेन ने व्हाइट हाउस में मेलोनी की मेजबानी की। एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए, 81 वर्षीय अमेरिकी राष्ट्रपति ने घोषणा की कि अमेरिका जॉर्डन और अन्य देशों में शामिल हो रहा है जो गाजा में भोजन और आपूर्ति भी भेज रहे हैं।

बाइडेन ने कहा कि आने वाले दिनों में हम जॉर्डन में अपने दोस्तों और अन्य लोगों के साथ जुड़ने जा रहे हैं जो अतिरिक्त भोजन और आपूर्ति की हवाई बूंदें प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि संभवतः समुद्री सहित अन्य रास्ते खोलने की कोशिश करेगा। हालांकि, अपने भाषण में उन्होंने गलती से दो बार गाजा की जगह यूक्रेन का जिक्र कर दिया। इस महीने की शुरुआत में बाइडेन ने मिस्र के राष्ट्रपति अब्द अल-फतह सईद हुसैन खलील अल-सिसी का उल्लेख करते हुए गलती की और उन्हें मेक्सिको का राष्ट्रपति कहा। उन्होंने फिलिस्तीनी क्षेत्र में मानवीय सहायता के मार्ग की अनुमति देने के लिए मिस्र द्वारा गाजा के साथ साझा किए जाने वाले राफा बॉर्डर क्रॉसिंग के द्वार खोलने के लिए एल-सिसी को समझाने की बात करते समय गलती की।

विशेष वकील रॉबर्ट हूर के दावों को गुस्से में नकारने के तुरंत बाद उन्होंने यह गलती की कि उनकी याददाश्त खराब और दोषपूर्ण है। बार-बार होने वाली गड़बड़ियों के कारण जो बिडेन के स्वास्थ्य पर अक्सर सवाल उठते रहे हैं। हालाँकि, उनके डॉक्टर ने 29 फरवरी को कहा कि वार्षिक शारीरिक परीक्षण से पता चला है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ड्यूटी के लिए फिट बने हुए हैं।

सानिया ने कहा , कई खिताब जीतने के बाद भी लोग शादी के बारे में पूछते थे

हैदराबाद । शीर्ष महिला टेनिस स्टार सानिया मिर्जा ने कहा है कि जब वह नंबर खिलाड़ी थीं तो लोग इस बात को लेकर पूछते थे कि वह कब शादी करेंगी। इस दौरान उन्होंने कई खिताब जीते थे पर लोगों का ध्यान उनपर नहीं जाता था। सानिया और उनके पति पाकिस्तानी क्रिकेटर शोएब मलिक हाल ही में अलग हो गये थे। सानिया ने तलाक के बाद की पहली बार एक भावुक पोस्ट में एक विज्ञापन छोटी सोच पर प्रतिक्रिया दी है और उसके बाद से ही सोशल मीडिया पर उनका संदेश जमकर वायरल हुआ है। ये विज्ञापन एक ब्यूटीशियन की कहानी पर आधारित है, जिसे कार खरीदने के बाद अपने पड़ोसियों और छोटे भाई की ओर से कई सवालों का सामना करना पड़ता है। इस विज्ञापन को रिट्वीट करते हुए सानिया ने लिखा, 2005 में मैंने युगल खिताब जीतकर एक उपलब्धि हासिल की थी तब भी लोग उसपर ध्यान देने की जगह ये पूछते थे कि वह कब घर बसाएंगी। साथ ही कहा कि छह ग्रैंड स्लैम जीतना नंबर एक रैंकिंग वाला भारतीय खिलाड़ी बनना भी समाज के लिए काफी नहीं था। मैं खेल के दौरान प्रशंसकों के समर्थन की आभारी हूं पर इसके बाद भी ये सोचने से अपने को नहीं रोक सकती कि क्यों एक महिला की उपलब्धियां उसके कौशल और काम की जगह लैंगिक अपेक्षाओं और दिखावे से कम मानी जाती हैं। सानिया ने साथ ही कहा कि समाज के बारे में वास्तविक बातचीत करना कठिन और कभी-कभी असुविधाजनक होता है पर हम महिलाओं की सफलता के साथ कैसे जुड़ते हैं, इस पर आत्मनिरीक्षण करना भी जरूरी है।

न्यूजीलैंड को पहला टेस्ट जीतने 258 रनों की और जरुरत

ऑस्ट्रेलियाई टीम दूसरी पारी में 164 रनों पर सिमटी

वेलिंगटन । मेजबान न्यूजीलैंड टीम को यहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जारी पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में जीत के लिए 258 रनों की और जरुरत है। इस मैच में ऑस्ट्रेलियाई टीम अपनी दूसरी पारी में 164 रनों पर ही सिमट गयी थी। जिसके बाद मेजबान कीवी टीम को जीत के लिए 369 रनों का लक्ष्य मिला था जिसका पीछा करते हुए कीवी टीम ने तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक न्यूजीलैंड ने तीन विकेट पर 111 रन बना लिए थे। दिन का खेल समाप्त होने के समय बल्लेबाज रचिन रवींद्र 94 गेंदों पर 8 चौके और एक छक्के की सहायता से 56 रन बनाकर नाबाद थे। वहीं डेरिल मिशेल 12 रन बनाकर खेल रहे हैं। इससे पहले ऑस्ट्रेलियाई के सलामी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने 31 जबकि उस्मान ख्वाजा ने 33 रन बनाये पर इसके बाद कैमरून ग्रीन ने 275 गेंदों पर 174 रन बनाकर स्कोर 383 रनों तक पहुंचा दिया। कैमरून के अलावा मिशेल मार्श ने 40 और हेजलवुड ने 22 बनाये। न्यूजीलैंड की ओर से मैट हैनरी 70 रन देकर 5 विकेट लिए। इस मैच में न्यूजीलैंड की शुरूआत काफी खराब रही। टॉमलैथम 5, विल यंग 9, केन विलियमसन 0 तो रचिन रवींद्र 0 पर आऊट हो गए। इसके बाद टॉम ब्लंडल ने 33 तो ग्लेन फिलिप्स ने 70 गेंदों पर 13 चौकों की मदद से 71 रन बनाए। इसके बाद मैट हैनरी ने 34 गेंदों पर चार छक्कों की मदद से 42 रन बनाकर स्कोर 179 तक पहुंचाया। ऑस्ट्रेलिया की ओर से नाथन लियोन ने 43 रन देकर 4 विकेट लिए। स्टीव स्मिथ एक बार फिर से फेल हो गए। स्मिथ 0 तो लबुछेन 2 ही रन बना पाए। ख्वाजा ने 28 रनों का योगदान दिया। इसके बाद नाथन लियोन ने एक मोर्चा संभालकर 46 गेंदों पर 41 रन बनाए। पहली पारी में शतक लगाने वाले कैमरून ग्रीन 80 गेंदों पर 34 रन ही बना पाए। ट्रेविस हेड ने 29 तो स्टार्क ने 12 रन बनाए। न्यूजीलैंड की ओर से ग्लेन फिलिप्स ने 45 रन देकर 5 विकेट लिए।

न्यूजीलैंड की दूसरी पारी की शुरूआत अच्छी नहीं रही। टॉम लैथम 8, विल यंग 15 तो केन विलियमसन 9 रन बनाकर पेवेलियन लौट गये। इसके बाद रचिन रवींद्र और डेरिल मिशेल ने अच्छी साझेदारी कर स्कोर स्कोर 111 तक पहुंचाय। कैमरन ग्रीन के शतक से ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 383 रन बनाए। वहीं मेजबान कीवी टीम ने अपनी पहली पारी में ग्लेन फिलिप्स के 71 रन की सहायता से केवल 179 रन ही बनाये।

संक्षिप्त समाचार

धर्मशाला में एक अहम रिकार्ड बना सकते हैं एंडरसन

धर्मशाला । इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन सात मार्च से धर्मशाल में भारतीय टीम के खिलाफ होने वाले पांचवें और अंतिम टेस्ट में एक अहम उपलधब्धि अपने नाम कर सकते हैं। 41 साल के एंडरसन इस मैच में दो विकेट लेने के साथ ही 700 टेस्ट विकेट लेने वाले पहले तेज गेंदबाज बन। अब तक केवल दो दिग्गज स्पिनरों श्रीलंका के मुथैया मुरलीधरन और ऑस्ट्रेलिया के शेन वार्न के नाम ही ये रिकार्ड है। धर्मशाला की तेज पिच पर एंडरसन भारतीय बल्लेबाजी क्रम के लिए मुसीबत पैदा कर सकते हैं। एंडरसन यदि वह धर्मशाला के एचपीसीए स्टेडियम में 2 विकेट झटकने में सफल हो जाते हैं तो फिर उनके नाम टेस्ट में 700 विकेट दर्ज हो जाएंगे। एंडरसन ने 186 टेस्ट मैचों में अबतक 698 विकेट लिए हैं। इस दौरान उन्होंने पारी में 32 बार 5 विकेट लिए हैं जबकि 32 बार वह पारी में 4 विकेट ले चुके हैं। वहीं एक टेस्ट मैच में 3 बार वह 10 विकेट भी उनके नाम हैं। एंडरसन ने 399 अंतरराष्ट्रीय मैचों में कुल 985 विकेट लिए हैं। उनके नाम 194 एकदिवसीय में 269 विकेट जबकि टी20 अंतरराष्ट्रीय में 18 विकेट हैं। वहीं अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 1000 विकेट के आंकड़े पर पहुंचने के लिए उन्हें 15 विकेट चाहिये। टेस्ट क्रिकेट में सबसे अधिक विकेट लेने के मामले में मुरलीधरन 800 टेस्ट लेकर पहले जबकि ऑस्ट्रेलिया के वॉर्न के 708 विकेट लेकर दूसरे नंबर पर हैं। एंडरसन ने भारत के खिलाफ इस टेस्ट सीरीज में 8 विकेट लिए हैं। हैदराबाद में खेले गए सीरीज के पहले टेस्ट मैच में उन्हें शामिल नहीं किया गया था। दूसरे टेस्ट में उन्होंने पांच जबकि तीसरे टेस्ट में एक विकेट लिया था।

ऑस्ट्रेलिया को सबसे कम, न्यूजीलैंड को सबसे अधिक समय में मिली पहली जीत

नई दिल्ली । भारतीय टीम को टेस्ट क्रिकेट खेलने के बाद अपनी पहली जीत 19 साल बाद मिली थी। भारतीय टीम ने अपना पहला टेस्ट मैच 1932 में खेला था और उसे पहली जीत 1951 में मिली। टेस्ट क्रिकेट में पहला मुकाबला ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड की टीम के बीच खेला गया था। इसमें पहली जीत ऑस्ट्रेलियाई टीम को मिली थी। टेस्ट क्रिकेट का पहला मुकाबला साल 1876-77 में इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेला गया था। इस ऐतिहासिक मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया ने केवल चार दिनों में ही इंग्लैंड को 45 रन से हरा दिया। इसके बाद कोई भी टीम ये कारनामा नहीं कर पायी। पहली टेस्ट जीत सबसे कम समय में ऑस्ट्रेलिया ने हासिल की। वहीं सबसे ज्यादा समय 26 साल के बाद न्यूजीलैंड को पहली जीत मिली। पहले मुकाबले में इंग्लैंड को उसने 4 दिन में ही हरा दिया। वहीं दूसरे नंबर पर पाकिस्तान की टीम है। पाक ने भारत के साथ 16 अक्टूबर 1952 में पहली सीरीज खेलने के बाद दूसरे मुकाबले में ही जीत हासिल कर ली। पाक टीम ने टेस्ट खेलने के 11 दिन बाद ही जीत दर्ज कर दूसरा स्थान हासिल किया। वहीं इंग्लैंड की टीम को पहली जीत अपने टेस्ट खेलने के 21वें दिन मिली थी। वेस्टइंडीज को पहली टेस्ट जीत हासिल करने में 1 साल 248 दिन लगे। जिम्बाब्वे को 2 साल 17 दिन के बाद पहली टेस्ट जीत मिली थी।

पेरिस हॉकी ओलंपिक टूर्नामेंट के मैच शेड्यूल 6 मार्च को ओलंपिक हाउस में घोषित किए जाएंगे

लुसाने (स्विट्जरलैंड)

अंतर्राष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) ने यह घोषणा की है कि पेरिस 2024 हॉकी ओलंपिक टूर्नामेंट (महिला और पुरुष) के मैच शेड्यूल का अनावरण 6 मार्च को आईओसी अध्यक्ष थॉमस बाक और एफआईएच अध्यक्ष तैय्यब इकराम द्वारा लुसाने में ओलंपिक हाउस में किया जाएगा. ओलंपिक के हॉकी टूर्नामेंट पेरिस के पास, कोलंबस में यवेस-डु-मनोइर स्टेडियम के ऐतिहासिक स्थल में खेले जाएंगे - जो 1924 में ओलंपिक खेलों का मैदान था. 12 पुरुषों और 12 महिलाओं की राष्ट्रीय टीमें अत्यधिक प्रतिष्ठित ओलंपिक पदक जीतने के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी. एफआईएच के अध्यक्ष तैय्यब इकराम ने कहा, एफआईएच की ओर से और अपने व्यक्तिगत नाम से, मैं पेरिस 2024 की तैयारी में इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति के लिए अध्यक्ष बाक के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूं. एक ओलंपिक खेल के रूप में 1908 से और ओलंपिक आंदोलन के एक सक्रिय सदस्य के रूप में, हम सम्मानित और गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि आईओसी अध्यक्ष हमें अपना कुछ कीमती समय देंगे. ये ओलंपिक खेल हमारे शताब्दी वर्ष के दौरान हो रहे हैं, जो इसे वैश्विक हॉकी समुदाय के लिए और भी खास बनाता है. हम कुछ ही महीनों में पेरिस में एक शानदार आयोजन की आशा कर रहे हैं! 6 और 7 मार्च को लुसाने में होने वाली एफआईएच हॉकी प्रो लीग कार्यशाला के साथ, पेरिस 2024 ओलंपिक में भाग लेने वाले अधिकांश हॉकी राष्ट्रीय संघ अनावरण समारोह में भाग लेंगे.

प्रीमियर के दौरान कोमिला विक्टोरियन को हराकर फॉर्च्यून बरिशाल बनी विजेता

नई दिल्ली ।

फॉर्च्यून बरिशाल ने कोमिला विक्टोरियन को हराकर बांग्लादेश प्रीमियर लीग 2024 अपने नाम कर ली है। गौरतलब है कि ढाका के शेरे बांग्ला नेशनल स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में फॉर्च्यून ने कोमिला विक्टोरियन को 6 विकेट से हरा दिया। कोमिला ने पहले खेलते हुए मेहंदी इस्लाम के 35 गेंदों पर 38, जाकिर अली के 20 तो आंद्रे रसेल के 14 गेंदों पर 27 रन की बदौलत 154 रन बनाए थे। इसके जवाब में खेलने उतरी फॉर्च्यून बरिशाल ने ओपनर तमित इकबाल (39) और मेहदी हसन मिराज (29) की बदौलत तेजतर्रार शुरूआत की। इसके बाद कायल मायर्स ने 30 गेंदों पर 46 रन बनाकर टीम को जीत की ओर धकेल दिया। वहीं फॉर्च्यून बरिशाल बीपीएल की अंक तालिका में तीसरे स्थान पर रही थी। उन्होंने 12 में से केवल 7 मुकाबले जीते थे लेकिन फाइनल में उन्होंने 12 में से 8 मुकाबले जीतने वाली कोमिला को हरा दिया। हालांकि पहले से ही कोमिला की ओपे निंग खराब रही। ओपनर सुनील नेरेन 5, कप्तान लिटन दास 16 तो तौहीद 15 रन बनाकर चलते बने। इसके बाद जॉनसन चार्ल्स भी 17 गेंदों पर 15 रन बनाकर आऊट हो गए। मध्यक्रम में मेहदी इस्लाम ने 35 गेंदों पर दो चौके और दो छक्कों की मदद से 38 रन बनाकर टीम को राहत दी। जबे कि फॉर्च्यून की ओर से गेंदबाजी करते हुए कायल मायर्स ने 26 रन देकर 1, सैफुद्दीन ने 37 रन देकर 1, जेम्स फुलर ने 43 रन देकर 2 विकेट लीं। इधर फॉर्च्यून की शुरूआत बेहद शानदार रही थी। कप्तान तमिम इकबाल ने मेहदी हसन मिराज के साथ मिलकर आठ ओवरों में पहले विकेट के लिए 76 रन जोड़े। तमिम ने 26 गेंदों पर 3 चौके और 3 छक्कों की मदद से 39 रन बनाए। इस दौरान मेहदी ने 29 रन बनाए। इसके बाद कायल मायर्स ने 30 गेंदों पर 5 चौके और दो छक्कों की मदद से 46 रन बनाए और टीम को जीत दिला दी।

आयरलैंड ने भारत,न्यूज़ीलैंड और दक्षिण अफ्रीका को पीछे छोड़ा

सबसे तेजी से पहली टेस्ट जीत हासिल करने वाली छठी टीम बनी

अबू धाबी ।

आयरलैंड की टीम ने एकमात्र टेस्ट में अफगानिस्तान को छह विकेट से हराकर एक बड़ी उपलब्धि अपने नाम की है। अब आयरलैंड सबसे तेजी से पहली टेस्ट जीत हासिल करने वाली छठी टीम बन गयी है। इस मामले में आयरलैंड ने भारत, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका और न्यूज़ीलैंड जैसी टीमों को भी पीछे छोड़ दिया है। साल 2018 में टेस्ट प्रारूप में अपनी शुरुआत के छह साल बाद, ही आयरलैंड की टीम ने केवल आठ मैचों के बाद ही पहली जीत दर्ज कर ली है। ऑस्ट्रेलिया को पहली टेस्ट जीत इंग्लैंड के खिलाफ, 1877 में उद्घाटन मैच में ही मिल गयी। वहीं इंग्लैंड और पाकिस्तान ने अपना दूसरा टेस्ट मैच जीता। वहीं भारत को अपना पहला टेस्ट मैच जीतने के लिए 25 मुकाबल लगे। इसके अलावा दक्षिण अफ्रीका ने 12 मैच खेलने के बाद अपना पहला टेस्ट मैच जीता जबकि न्यूजीलैंड ने 45वें मैच में अपनी पहली जीत हासिल की। अफगानिस्तान के खिलाफ जीत के लिए 111 रन के छोटे से लक्ष्य का सामना करते हुए आयरलैंड की टीम शुरुआत में ही पिछड़ गई। इसके बाद कप्तान एंडी बालबर्नी के नाबाद 58 रनों के अलावा लोर्कन टकर के नाबाद 27 रनों से टीम ने जीत दर्ज की। बालबर्नी की शानदार पारी ने आयरलैंड को रोमांचक मुकाबले में जीत मिली। इसके अलावा बैरी मैक्कार्थी (3-48), मार्क अडायर (3-56) और क्रेग यंग (3-24) की शानदार गेंदबाजी की भी इसमें अहम भूमिका रही। इन गेंदबाजों ने अफगानिस्तान को 218 रनों पर ही रोक दिया था।

कप्तान अजिंक्य रहाणे ने श्रेयस अय्यर को दी सलाह, विवाद को छोड़कर खेल पर ध्यान दें

मुंबई ।

श्रेयस अय्यर की रणजी में वापसी पर कप्तान अजिंक्य रहाणे ने कहा है कि वह पिछले विवाद को छोड़कर इस समय खेल पर अपना ध्यान दें। गौरतलब है कि इस समय बीसीसीआई द्वारा केंद्रीय अनुबंध से बाहर करने के चलते श्रेयस अय्यर चर्चा में है। बताया जा रहा है कि अय्यर ने जान बूझकर रणजी ट्रॉफी का क्वार्टर फाइनल छोड़ा था। इसी बीच मुंबई के कप्तान अजिंक्य रहाणे ने कहा कि श्रेयस अय्यर केंद्रीय अनुबंध संबंधित विवाद को पीछे छोड़कर शनिवार से यहां तमिलनाडु के खिलाफ शुरू हो रहे रणजी ट्राफी सेमीफाइनल में टीम के लिए धमाकेदार प्रदर्शन करें। श्रेयस के साथ झारखंड के इशान किशन को भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सालाना केंद्रीय अनुबंध में जगह नहीं मिली क्योंकि दोनों खिलाड़ी अपनी टीम के लिए रणजी ट्राफी मैच में नहीं खेले थे। श्रेयस पीठ की दर्द की शिकायत के कारण बड़ौदा के खिलाफ मुंबई के क्वार्टरफाइनल में नहीं खेले थे। रहाणे ने कहा कि वह काफी अनुभवी खिलाड़ी है। जब भी वह मुंबई के लिए खेले हैं, उनका योगदान शानदार रहा है। रहाणे ने कहा कि सेमीफाइनल के लिए हमारी टीम में उनकी मौजूदगी शानदार है। तमिलनाडु के खिलाफ श्रेयस को मुंबई के लिए अच्छा प्रदर्शन करने के लिए किसी तरह की प्रेरणा या सलाह की जरूरत नहीं है। मुझे नहीं लगता कि उसे किसी तरह की सलाह या प्रोत्साहन की जरूरत है। उसने मुंबई के लिए हमेशा बल्ले से योगदान दिया है और ड्रेसिंग रूम में उनकी मौजूदगी से अन्य खिलाड़ियों को भी टीम के लिए योगदान करने में मदद मिलेगी। रहाणे ने साथ ही पुष्टि की कि सलामी बल्लेबाज पृथ्वी साव ऊंगली की चोट से उबर गए हैं जिसके कारण क्वार्टरफाइनल में उन्हें मध्यक्रम में बल्लेबाजी करनी पड़ी थी। उसकी ऊंगली में चोट लगी थी, तभी वह बल्लेबाजी क्रम में नीचे खेलने उतरा था। हम उसे मुशीर खान से पहले भेजना चाहते थे लेकिन इंजेक्शन के असर से वह उसके बाद बल्लेबाजी के लिए उतरा। ले किन अब वह अपने अंदाज में ही खेलें।

कपिल ने घरेलू क्रिकेट को लेकर बीसीसीआई के फैसले को सही बताया

बोले, कुछ खिलाड़ियों को होगी परेशानी पर देश से बढ़कर कुछ भी नहीं

नई दिल्ली ।

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव ने कहा है कि भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा घरेलू क्रिकेट नहीं खेलने वाले खिलाड़ियों को केन्द्रीय अनुबंध नहीं दिये जाने का फैसला सही है। इस महान ऑलराउंडर ने कहा कि इससे कुछ खिलाड़ियों को जरुर परेशानी हो सकती है पर ये जरुरी है क्योंकि देश से आगे कोई भी नहीं है। उन्होंने कहा कि घरेलू क्रिकेट को अनिवार्य बनाया जाना रणजी जैसे प्रथम श्रेणी टूर्नामेंट को बनाये रखने के लिए जरूरी है। इससे पहले युवा विकेटकीपर बल्लेबाज इशान किशन और श्रेयस अय्यर को बीसीसीआई ने साल 2023-24 सत्र के लिए केंद्रीय अनुबंधित खिलाड़ियों की सूची से बाहर कर दिया था। जिससे बाद विवाद शुरु हो गया था। इस मामले में मिलीजुली मिश्रित प्रतिक्रिया जिसमें पूर्व क्रिकेटर कीर्ति आजाद और इरफान पठान ने कहा था कि एक दो खिलाड़ियों को निशाना बनाने की जगह सभी के लिए ये अनिवार्य हो। वहीं कपिल ने कहा कि घरेलू क्रिकेट के महत्व को बनाये रखने के लिए बीसीसीआई को फैसला लेना ही था। उन्होंने कहा, ''हां, कुछ खिलाड़ियों को परेशानी हो होगी। कुछ लोगों को तकलीफ होगी पर देश से बढ़कर कोई नहीं है ये बहुत अच्छा फैसला है।''

साथ ही कहा, ''मैं बीसीसीआई को घरेलू क्रिकेट का दर्जा बचाने के लिए जरूरी कदम उठाने के लिए बधाई देता हूं।

मुझे यह देखकर दुख होता था कि एक बार खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में स्थापित कर लेते हैं तो वे घरेलू क्रिकेट में हिस्सा लेना बंद कर देते थे। ''

बीसीसीआई ने केंद्रीय अनुबंध की घोषणा करते हुए खिलाड़ियों से घरेलू प्रतियोगिताओं को महत्व देने को कहा था।

इस क्रिकेटर ने कहा, ''यह संदेश पहले ही दिया जाना चाहिए था। बीसीसीआई का यह कड़ा कदम स्वागत योग्य है जो घरेलू क्रिकेट की प्रतिष्ठा बरकरार रखने के लिए लाभप्रद होगा।'' कपिल ने साथ ही कहा कि टीम में स्थान बना चुके अनुभवी खिलाड़ियों की भी जिम्मेदारी है कि वे घरेलू क्रिकेट खेले क्योंकि उन्हें अपने संबंधित राज्यों की ओर से खेलते हुए ही ये सफलता मिली है। उन्होंने कहा, ''मैं हमेशा से इस प्रक्रिया में भरोसा करता हूं कि अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी अपने संबंधित राज्य के लिए अपने को उपलब्ध करायें। इससे घरेलू खिलाड़ियों को उनका समर्थन मिलने से मदद मिलती है। साथ ही यह राज्य संघ द्वारा दी गयी सेवाओं को वापस लौटाने का भी अच्छा तरीका है।'' कपिल ने इसके साथ ही पूर्व क्रिकेटरों की पेंशन बढ़ाने के लिए भी बीसीसीआई का आभार व्यक्त किया है।

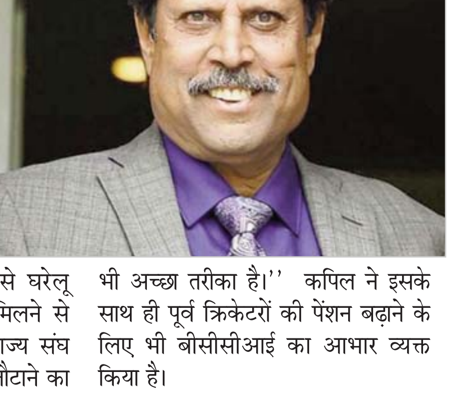

पांड्या टेस्ट नहीं खेलते इसलिए उनकी तुलना ईशान और श्रेयस से नहीं कर सकते : आकाश चोपड़ा

नई दिल्ली । ईशान किशन और श्रेयस अय्यर को केन्द्रीय अनुबंध से बाहर किये पाने के मामले को लेकर कई पूर्व खिलाड़ियों ने सवाल उठाए हैं। इन खिलाड़ियों का कहना है कि ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या भी घरेलू क्रिकेट नहीं खेल रहे पर उन्हें अनुबंध दिया है। इसी को लेकर अब पूर्व बल्लेबाज आकाश चोपड़ा ने एक बयान दिया है। आकाश ने बीसीसीआई के फैसले का समर्थन करते हुए कहा कि हार्दिक को प्रथम श्रेणी क्रिकेट नहीं खेलने के लिए दंडित नहीं किया जा सकता क्योंकि वह टेस्ट क्रिकेट नहीं खेलते हैं। चोपड़ा ने कहा, पांड्या का मामला बहुत सरल है। अगर उसने कोई गलती नहीं की है तो आप उसे सजा क्यों देंगे? वह रेड-बॉल क्रिकेट नहीं खेल रहा है। इसलिए यदि आप टेस्ट के लिए बिल्कुल भी प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहे हैं तो कोई भी आपको प्रथम श्रेणी क्रिकेट खेलने के लिए नहीं कहेगा। आप चार दिवसीय खेल क्यों खेलेंगे जब आपके शरीर में इतने ओवर फेंकने की ताकत नहीं है और चोट की समस्या है? तो उन्हें क्यों खेलना चाहिए। चोपड़ा ने हार्दिक की घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से अनुपलब्धता पर भी अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि हार्दिक ने कभी भी ईशान किशन और श्रेयस अय्यर की तरह खेल नहीं छोड़ा, इसलिए हार्दिक की स्थिति की तुलना किशन और अय्यर से नहीं की जा सकती। हार्दिक पांड्या ने डीवाई पाटिल टी20 कप में रिलायंस 1 टीम का नेतृत्व करते हुए प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी की है।

आयरलैंड की पहली टेस्ट जीत को कप्तान बालबर्नी ने बताया बेहद खास

नई दिल्ली । आयरलैंड की पहली टेस्ट जीत को कप्तान बालबर्नी ने बेहद खास बताया है। दरअसल आयरलैंड ने 2018 में पाकिस्तान के खिलाफ अपना पहला टेस्ट खेला था लेकिन इसके बाद से बालबर्नी जीत के इंतजार में थे। बलबर्नी ने अफगानिस्तान पर छह विकेट की जीत के बाद कहा कि मैं इस जीत पर विश्वास नहीं कर सकता। यह बिल्कुल सही है। आप इस पूरे समूह से पूछें कि यह कितना खास है! हमारे बहुत से लोगों को टेस्ट क्रिकेट खेलने का मौका नहीं मिला। हम जानते थे कि यह संघर्षपूर्ण चीजें होंगी। यह सिर्फ एक हरफनमौला प्रदर्शन है। हम इसे लेकर बिल्कुल और बेहद तोर पर उत्साहित हैं। आपको यह देखना होगा कि कार्यक्रम कितना व्यस्त है। दुनिया में बहुत सारा क्रिकेट चल रहा है। हमने आयरिश कप्तान ने कहा कि परिणाम पैदा किए हैं और इतिहास रचा है। बंदर पीछे है। ऐसा करना बहुत खास है। बता दें कि आयरलैंड 111 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए जल्दी ही लड़खड़ा गया था। इस पर कप्तान बालबर्नी ने कहा कि हम एक साझेदारी दूर थे। जाहिर है, थोड़ी घबराहट थी, हम अपनी पहली जीत का पीछा कर रहे थे। एकमात्र टेस्ट में दोनों पक्षों के बीच का अंतर शुरुआती दिन, विशेषकर तेज गेंदबाजों द्वारा किया गया शानदार और क्लिनिकल गेंदबाजी प्रयास था। वहीं मार्क अडायर ने पांच विकेट लिए जिससे आयरिश खिलाड़ियों ने अफगानों को 155 रन पर समेट दिया। दूसरी पारी में अडायर और बैरी मैक्कार्थी की तेज गेंदबाज जोड़ी ने फिर से मिलकर अफगानों को प्रतियोगिता में वापस आने से रोक दिया। इस दौरान बालबर्नी ने कहा कि मार्क अनुशासित थे। एक टेस्ट में 20 विकेट लेना एक उपलब्धि है और दूसरी बार ऐसा करना बहुत खास है। एकमात्र टेस्ट में शीर्ष पर आने के बाद, आयरलैंड अब तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला में अफगानों से भिड़ंत होगी।

अक्षय के साथ इस फिल्म में नजर आएंगी प्रज्ञा जायसवाल

साउथ सुपर स्टार प्रज्ञा जायसवाल इन दिनों सुर्खियों में बनी हुई हैं। प्रज्ञा तमिल और तेलुगु में कई फिल्में कर चुकी हैं। वहीं, मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो प्रज्ञा को एक बहुत बड़ी बॉलीवुड फिल्म के लिए साइन किया गया है। इस फिल्म से पहले वे सलमान खान की फिल्म अंतिम में एक कैमियो करती नजर आई थीं। प्रज्ञा अपने इस नए प्रोजेक्ट को लेकर काफी उत्साहित नजर आ रही हैं।

अक्षय के साथ आएंगी नजर

अक्षय कुमार अपनी आने वाली फिल्म बड़े मियां छोटे मियां की शूटिंग पूरी कर चुके हैं। उनकी यह फिल्म रिलीज के लिए तैयार है। वहीं, मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो वे आगामी फिल्म खेल खेल में की शूटिंग शुरू कर चुके हैं। इस फिल्म में उनके अलावा तापसी पन्नू भी नजर आने वाली हैं। दर्शकों में अभी से ही अक्षय कुमार की इस फिल्म के लिए काफी उत्साह देखने को मिल रहा है। सूत्रों की मानें तो अक्षय की इस फिल्म में साउथ की मशहूर अभिनेत्री प्रज्ञा जायसवाल भी शामिल हो गई हैं। इस खबर ने प्रज्ञा के फैंस के उत्साह को काफी बढ़ा दिया है।

रोमांटिक कॉमेडी होगी फिल्म खेल खेल में

अक्षय कुमार और प्रज्ञा जायसवाल स्टारर यह फिल्म मशहूर इटालियन फिल्म परफेटी स्कोनोसियुटी की रीमेक है। सूत्रों की मानें तो यह फिल्म एक रोमांटिक कॉमेडी फिल्म होगी। प्रज्ञा इन दिनों उदयपुर में फिल्म के बाकि कलाकारों के साथ शूटिंग में व्यस्त हैं। वहीं, इस फिल्म में काफी समय बाद अक्षय कुमार और फरदीन खान एक साथ नजर आने वाले हैं।

प्रज्ञा का वर्क फ्रंट

आने वाले दिनों में प्रज्ञा फिल्म खेल खेल में अहम भूमिका निभाती नजर आएंगी। इस फिल्म के जरिए वे बॉलीवुड में भी अपनी पहचान बनाने की कोशिश करने वाली हैं। वहीं, मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो वे टायसन नायडू की फिल्म अखंड में भी दिखाई देंगी।

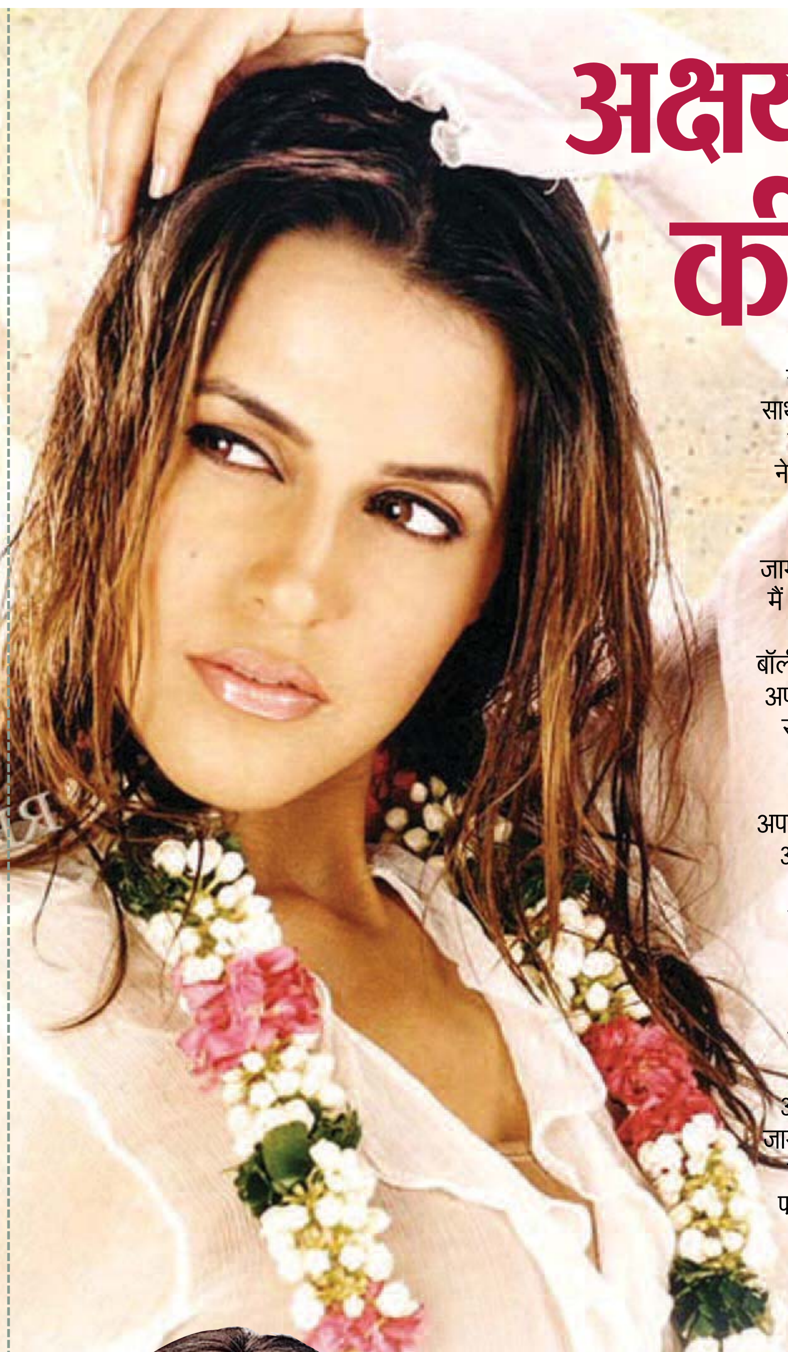

अक्षय की फिटनेस की फैन हैं नेहा

नेहा धूपिया और अक्षय कुमार ने एक साथ कई फिल्में की हैं। फिल्म सिंह इज किंग उन्हीं में से एक है। हाल ही में, नेहा ने अक्षय के साथ अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा, देखिए अक्षय फिटनेस को लेकर कितने जागरूक हैं यह सबको पता है, लेकिन मैं जो आपको बताने जा रही हूं शायद वह बात सबको नहीं पता होगी। बॉलीवुड अभिनेत्री नेहा धूपिया इन दिनों अपने शो नो फिल्टर नेहा की वजह से सुर्खियों में बनी हुई हैं। इस शो में वे अपने गेस्ट से कई दिलचस्प सवाल करती नजर आती हैं। पिछले दिनों अपने शो के प्रमोशन के दौरान अभिनेत्री अपने फिल्मी करियर के उतार-चढ़ाव के अलावा अभिनेता अक्षय कुमार के साथ अपनी दोस्ती के बारे में भी कई दिलचस्प खुलासे किए।

फिटनेस के लिए मोटिवेट करते हैं अक्षय

नेहा धूपिया और अक्षय कुमार ने एक साथ कई फिल्में की हैं। फिल्म सिंह इज किंग उन्हीं में से एक है। हाल ही में, नेहा ने अक्षय के साथ अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा, देखिए अक्षय फिटनेस को लेकर कितने जागरूक हैं यह सबको पता है, लेकिन मैं जो आपको बताने जा रही हूं शायद वह बात सबको नहीं पता होगी। अक्षय सिर्फ खुद के लिए ही नहीं फिटनेस फीक हैं बल्कि वे अपने आस-पास के लोगों को भी मोटिवेट करते हैं कि वे भी अपने स्वास्थ्य को लेकर जागरूक बनें।

70 मंजिल चढ़ते थे साथ में

फिल्म सिंह इज किंग की शूटिंग ऑस्ट्रेलिया में हुई थी। नेहा उन दिनों को याद करते हुए कहती हैं, हम फिल्म की शूटिंग के लिए जिस इमारत में ठहरे थे, वह इमारत 70 मंजिल की थी। आप शायद यकीन नहीं करेंगे लेकिन अक्षय ने हमें उस 70 मंजिला इमारत की सीढ़ियों को चढ़ने और उतरने को कहते थे। हम साथ में इसे वर्क-आउट के जैसे करते थे। यह एक रोमांचक अनुभव था।

करीना हैं बेहतर होस्ट

जब नेहा धूपिया से पूछा गया कि वे किसे बेहतर होस्ट मानती हैं अपने शो नो फिल्टर नेहा के लिए। तब अभिनेत्री ने जवाब दिया, मुझे लगता है कि करीना कपूर मेरे शो के लिए एक शानदार होस्ट हो सकती हैं। वे किसी से भी कोई भी सवाल बड़ी बेबाकी से पूछ सकती हैं। उनमें यह काबिलियत है।

वर्षों बाद एक साथ नजर आएंगे दीया मिर्जा और सुनील शेट्टी

करण जौहर स्टारकिड्स के साथ फिल्में बनाने के लिए मशहूर हैं। साल 2024 में वे इब्राहिम अली खान को लांच करने जा रहे हैं। अभी से ही इब्राहिम की इस फिल्म ने बज क्रीएट करना शुरू कर दिया है। सूत्रों की मानें तो इब्राहिम अली की इस फिल्म में उनके साथ दिग्गज अभिनेता सुनील शेट्टी और दीया मिर्जा भी नजर आने वाले हैं। काफी सालों बाद सुनील और दीया एक साथ पर्दे पर दिखाई देंगे। इस खबर ने दर्शकों के उत्साह को दोगुना कर दिया है। अभी तक धर्मा प्रोडक्शंस की तरफ से इब्राहिम अली खान और खुशी कपूर की इस आगामी फिल्म के नाम की कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो यह एक रोमांटिक कॉमेडी फिल्म होगी। इस फिल्म में इब्राहिम खुशी के साथ रोमांस करते नजर आने वाले हैं। वहीं, सूत्रों की मानें तो धर्मा प्रोडक्शंस की इस फिल्म का नाम नादानियां है।

ओटीटी पर होगी रिलीज

शाउना गौतम के निर्देशन में बन रही इस फिल्म को लेकर करण जौहर काफी उत्साहित नजर आ रहे हैं। उन्होंने अपने सोशल मीडिया हैंडल से इस फिल्म के मुहूर्त शॉट को भी साझा किया था। शाउना इससे पहले रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में भी सहायक निर्देशन का काम कर चुकी हैं। वहीं, मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो खुशी और इब्राहिम की इस फिल्म को सीधे ओटीटी पर रिलीज किया जाएगा।

वर्क एनर्जी मोड में लौटने के लिए जमकर पसीना बहा रही हैं प्रियंका चोपड़ा

एक्ट्रेस प्रियंका चोपड़ा इन दिनों वर्क एनर्जी मोड में लौटने के लिए जमकर पसीना बहा रही हैं। प्रियंका ने इंस्टाग्राम पर एक मिरर सेल्फी पोस्ट की है जिसमें वह वर्कआउट गियर में दिख रही हैं। लव अगेन स्टार स्लेट ग्रे रंग की स्पोर्ट्स ब्रा और शॉर्ट्स में दिखाई दे रही हैं। वह नो मेकअप लुक में हैं और अपने बालों को जैसे-तैसे बन में बांध रखा है। कैप्शन में उन्होंने लिखा- इसका लाभ हो रहा है ... आखिरकार वर्क एनर्जी में लौट रही हूँ। 41 वर्षीय स्टार अपना समय पति निक जोनास और बेटी मालती मैरी जोनास चोपड़ा के साथ बिता रही हैं। वह लगातार सोशल मीडिया पर अपने प्रशंसकों और फॉलोअर्स के साथ अपनी निजी जिंदगी की झलक साझा करते हुए उनके साथ तस्वीरें अपलोड करती रहती हैं। प्रियंका ने इस बात का खुलासा नहीं किया कि वह किस चीज पर काम कर रही हैं। हालांकि, खबर है कि वह इदरीस एल्बा स्टारर फिल्म हेड ऑफ स्टेट में नजर आएंगी। फिल्म का निर्देशन इल्या नैशुलर ने किया है।

सिद्धांत चतुर्वेदी ने की रणबीर कपूर की तारीफ

सिद्धांत चतुर्वेदी हाल ही में 'खो गए हम कहां' में नजर आए थे। एक इंटरव्यू के दौरान सिद्धांत ने बॉलीवुड में चुनौतियों को लेकर खुलकर बात की है। सिद्धांत चतुर्वेदी ने कहा- मैं पर्सनली इंडस्ट्री से किसी तरह की उम्मीद नहीं रखता हूं। लेकिन हां मुझे काम को लेकर उम्मीदें जरूर है। सिद्धांत ने बताया कि चुनौतियों के बावजूद आगे बढ़ते रहने के लिए एक्टर आयुष्मान खुराना ने उन्हें सलाह दी थी। आयुष्मान के अलावा विक्की कौशल और रणबीर कपूर ने भी उनकी काफी मदद की थी। सिद्धांत चतुर्वेदी ने बताया कि जब रणबीर ने मुझे बुलाया था तो उन्होंने उस टाइम मुझसे काफी लंबी बात की थी।

गहराइयां फ्लॉप होने के बाद रणबीर ने दी थी सलाह

रणबीर ने मुझसे कहा था कि बस काम करते रहो और इस बात को सोचकर बिल्कुल परेशान मत हो कि दूसरे लोग काम कर रहे हैं या वो ये दिखा रहे हैं। जब गहराइयां फ्लॉप हुई थी तो उस टाइम सिर्फ रणबीर और आलिया ने मुझे लंबा-चौड़ा मैसेज भेजा था। वो दोनों मुझे समझाना चाह रहे थे।

'खो गए हम कहां' के बाद लोगों ने काफी तारीफ की

सिद्धांत चतुर्वेदी ने कहा- रणबीर ने मुझसे कहा था कि 'जब तू उम्मीद नहीं कर रहा होगा तब चलेगी फिल्म', तो मैंने कहा था कि ठीक है। एक्टर ने आगे कहा कि 'खो गए हम कहां' से मुझे ज्यादा उम्मीद नहीं थी। मैं नहीं जानता था कि इस फिल्म को इतना प्यार मिलेगा, क्योंकि ये सिर्फ एक टारगेट ऑडियंस के लिए थी, लेकिन फिर भी इस फिल्म को लोगों ने खूब प्यार दिया है।

विलेन की भूमिका के लिए उत्साहित हैं अर्जुन

रोहित शेट्टी की अपकमिंग फिल्म सिंघम अगेन लगातार चर्चा में बनी हुई है। सुपरहिट फिल्म सिंघम की फ्रेंचाइजी के अलावा इसके साथ खतरनाक एक्शन सीक्वेंस भी इस फिल्म की विशेषता में शुमार है, लेकिन हाल के दिनों में इस फिल्म को लेकर जिस चीज ने सबसे ज्यादा सुर्खियां बटोरी वह इस फिल्म की स्टार कास्ट ने। सिंघम अगेन में फिल्म इंडस्ट्री के कई टॉप स्टार्स मुख्य भूमिका में हैं, वहीं हाल ही में फिल्म के मुख्य विलेन की भूमिका के लिए अभिनेता अर्जुन कपूर के नाम से पर्दा उठा, जिसे अर्जुन ने अपने लिए एक सुनहरा मौका बताया। हाल ही में एक साक्षात्कार में अर्जुन ने कहा, सिंघम अगेन में विलेन की भूमिका निभाने के लिए रोमांचित हूं, इस फिल्म के जरिए मुझे स्क्रीन पर एक नया प्रयोग करने और एक अभिनेता के रूप में खुद को चुनौती देने का बड़ा मौका मिला है। हालांकि, अर्जुन इससे पहले भी कुछ फिल्मों में नेगेटिव किरदार निभा चुके हैं। अर्जुन ने कहा, मैंने इशकजादे और औरंगजेब जैसी फिल्मों में नेगेटिव किरदार ही इंडस्ट्री में अपने करियर की शुरुआत की थी। इतने सालों के बाद एक बार फिर मैं ऐसा करने जा रहा हूं। हालांकि, आदित्य चोपड़ा ने ऐसे किरदार निभाने की क्षमता मुझमें बहुत पहले देखी थी। अब फिर से एक बार मुझे ऐसा किरदार निभाने का मौका देने के लिए मैं रोहित शेट्टी का आभार व्यक्त करता हूं। रोहित शेट्टी ने मुझमें विश्वास जगाया कि मैं उनकी फिल्म कॉप यूनिवर्स फिल्म में एक विलेन का किरदार निभा सकता हूं।

फिल्म की शूटिंग को लेकर अर्जुन ने कहा, मैं हमेशा से खुद के साथ स्क्रीन पर नया प्रयोग करना चाहता था, ताकि दर्शकों को कुछ अलग देखने को मिल सके। ऐसे में सिंघम अगेन में पुलिस के कट्टर दुश्मन की भूमिका निभाना मेरे लिए बेहद ही रोमांचक अवसर है।

दीपिका सिंह ने बचपन का सपना किया पूरा

शो मंगल लक्ष्मी में अपने किरदार को लेकर एक्ट्रेस दीपिका सिंह ने नोज पियर्सिंग करवाई है। एक्ट्रेस ने कहा कि यह उनकी बचपन की इच्छा थी। दीपिका मंगल लक्ष्मी में अपने किरदार को लेकर बहुत रोमांचित हैं। दीया और बाती हम में अपने किरदार से मशहूर एक्ट्रेस ने अपनी भूमिका पर खुलकर बात की। उन्होंने कहा, मैं बचपन से ही नोज पियर्सिंग करवाना चाहती थी। मैं हमेशा स्टिक-ऑन का उपयोग करती थी, हालांकि अपने इस किरदार के लिए मैंने यह कदम उठाया। यह मेरे ऊपर बेहद अच्छी लग रही है। नोज पियर्सिंग करवाने का अनुभव काफी यादगार और डरावना था। उन्होंने कहा, इसके लिए बहुत साहस की आवश्यकता थी। पहली बार मेरी नाक से खून बहने लगा था। मुझे पियर्सर के पास वापस जाना पड़ा और इसे फिर से करवाना पड़ा। यह थोड़ा दर्दनाक था। कवच... महाशिवरात्रि फेम अभिनेत्री ने आगे कहा, मंगल एक ऐसा किरदार है जो सभी घरेलू महिलाओं को प्रभावित करता है। नोज पियर्सिंग उसकी पहचान का एक महत्वपूर्ण पहलू है। मैं वास्तव में अपनी नाक छिदवाकर इसका सम्मान करना चाहती थी। मंगल लक्ष्मी एक गृहिणी और उसकी छोटी बहन के इर्द-गिर्द घूमती एक कहानी है।